Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

में

पी-एच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोध निर्देशक

प्रो. आर. के. एस. डागर

[illegible]

[illegible] कुमार

[illegible]

योग एवं शारीरिक शिक्षा संकाय

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - [illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

में

पी-एच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोध निर्देशक

प्रो. आर. के. एस. डागर

शोध छात्र

अनुज कुमार

पञ्जीकरण संख्या- 19073

योग एवं शारीरिक शिक्षा संकाय

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249404

2023

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

में

पी-एच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोध निर्देशक

प्रो. आर. के. एस. डागर

शोध छात्र

अनुज कुमार

पञ्जीकरण संख्या- 19073

योग एवं शारीरिक शिक्षा संकाय

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249404

2023

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CANDIDATE'S DECLARATION

I hereby declare that work which is being presented in the thesis entitled **"सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन"** in fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy in Physical Education and Sports of Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar is an original work carried out by me during a period from 02/08/2020 to 15/12/2023 under the supervision of **Prof. (Dr.) R.K.S.Dagar** Department of Physical Education and Sports in Gurukula Kangri (Deemed to be) University, Haridwar, Uttarakhand, India.

The matter presented in the tesis has not been submitted by me for the award of any other degree/diploma of this University or any other University/Institute. I have properly acknowledged the material collected from the secondary sources wherever required. I solely own the responsibility for the originality of the entire content.

I fulfill all the eligibility requirements for the submitting of Ph.D. thesis as prescribed norms in the research rules and regulations of the Gurukula Kangri (Deemed to be) University/UGC.

Date : 14/12/2023

Anuj Kumar
Anuj Kumar
Research Scholar

Enrolment No.- 19073

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SUPERVISOR'S CERTIFICATE

This is to certify that **Mr. Anuj Kumar** has worked under my supervision on **"सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन"** for his Degree of Doctor of Philosophy in Physical Education of Gurukula Kangri (Deemed to be) University, Haridwar. He fulfills the eligibility criteria for submission of Ph.D. thesis as per research rules and regulations of the Gurukula Kangri (Deemed to be) University/U.G.C. It is also certified that the candidate has incorporated the suggestions given in the pre-submission presentation before D.R.C.

The candidate has fulfilled the necessary residency requirements for the full time Ph.D Programme as per fules of the Gurukula Kangri (Deemed to be) University.

I recommend the thesis for evaluation for the award of the Doctor of Philosophy of Gurukula Kangri (Deemed to be) University, Haridwar, Uttarakhand.

Date:14/12/23

(**Prof. R.K.S.Dagar**)

Supervisor

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

H.O.D.' S/ IN CHARGE CERTIFICATE

The Ph.D. thesis submitted by **Mr. Anuj Kumar** in the subject of Physical Education and Sports under the supervision of **Prof. (Dr.) R.K.S.Dagar** is hereby forwarded for evaluation for the award of the Degree of Doctor of Philosophy of Gurukula Kangri (Deemed to be) University, Haridwar.

It is also certified that the candidate has made the pre-submission presentation before D.R.C. and fulfils necessary residency requirement of full time Ph.D Programme as per the rules of the Gurukula Kangri (Deemed to be) University.

Date:....27/12/23

Dr. Ajay Malik

Head of Department/ Incharge

प्रभारी
शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग
गु०कां० समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्
गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार- 249404
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar - 249 404

CERTIFICATE OF PLAGIARISM CHECK

1.	Name of the Research Scholar	:	ANUJ KUMAR
2.	Course of Study	:	Ph. D.
3.	Title of the Thesis	:	"सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन"
4.	Name of the Supervisor	:	Prof. R.K.S. Dagar
5.	Department /Subject	:	Department of Physical Education and Sports
6.	Acceptable Maximum Limit	:	10%
7.	Percentage of Similarity of Contents Identified	:	0%
8.	Document Number	:	D174863176
9.	Software Used	:	URKUND
10.	Date of Verification	:	29-09-2023

Anuj Kumar

Signature of the Supervisor
(Seal)

Signature of the Scholar

27/12/23

Head of the Department
(Seal)

प्रभारी
शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग
गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

Coordinator, Shodhganga
(Seal)

Co-ordinator, Shodhganga
Gurukul Kangri (Deemed to be University)
Haridwar - 249404 (Uttarakhand)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Ouriginal

Document Information

Analyzed document	"सहारनपुर मंडल □□□□ शारीरिक शिक्□□□ अनुदेशक एवं ग◆◆र अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के ब□□□चों की खेल उपल□□□धियां, खेल संस◆◆धन एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टिएक अध्ययन.docx (D174863176)
Submitted	9/29/2023 11:02:00 AM
Submitted by	Sachin Kaushik
Submitter email	9927884477sk@gmail.com
Similarity	0%
Analysis address	9927884477sk.gkv@analysis.urkund.com

Sources included in the report

Entire Document

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार

सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा का धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिनके आशीर्वाद से पतित पावनी गंगा के तट पर बसे हरिद्वार नगर में स्थित स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपोभूमि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अध्ययन एवं शोध का अवसर प्राप्त हुआ।

इस विषय पर शोध कार्य समय-साध्य रहा है और इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत, पारिवारिक, संस्थागत एवं सामाजिक कर्तव्यों के निर्वाह करने से यह कार्य और अधिक दुष्कर हो जाता है, परन्तु मैं सौभाग्यशाली हूँ कि इन सब कार्यों के बाद भी ईश्वरीय अनुकम्पा और अपनों के मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह शोध कार्य पूर्ण हो सका। अतः इन मार्गदर्शकों एवं सहयोगियों का स्मरण अवश्यंभावी है।

सर्वप्रथम मैं अपने श्रद्धेय गुरू जी एवं शोध-निर्देशक प्रोफेसर आर. के. एस. डागर जी का चिरऋणी हूँ जिन्होने अपनी अकादमिक एवं जीवन की व्यस्तताओं के मध्य भी विषय के चयन से लेकर शोध कार्य की पूर्णता तक अपने विषयगत साहित्यिक एवं तकनीकी ज्ञान से बहुमूल्य निर्देशन प्रदान किया। जिसका परिणाम शोध-प्रबन्ध की पूर्णता है। शोध-प्रबन्ध के विषय की दिशा में इस रचना को एक नवीन एवं स्तरीय प्रयास स्वीकारने में विद्वानों को कदाचित् ही असमंजस हो, जो कि गुरूवर की महती प्रेरणा एवं असीम अनुकंपा से ही संम्भव हुआ है।

परम श्रद्धेय प्रो. ईश्वर भारद्वाज जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं जिनके अकादमिक एवं शोध क्षेत्र के विशाल अनुभव का लाभ मुझे उनके मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के रूप में शोध कार्य के दौरान निरन्तर प्राप्त होता रहा है।

मैं प्रोफेसर सुरेन्द्र त्यागी जी (संकायाध्यक्ष) का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंनें शोध कार्य के दौरान हमेशा मुझे सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हुए अपना बहुमूल्य समय एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

डॉ. अजय मलिक जी (प्रभारी शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग) का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने अपने मैत्रीपूर्ण व्यवहार के साथ शोध कार्य को पूर्ण करने में अपना भरपूर मार्गदर्शन एवं शोध कार्य की जटिलताओं को साध्य बनाने में मुझे अपना अपूरणीय सहयोग प्रदान किया।

इसी क्रम में डॉ. शिवकुमार चौहान, डॉ. कपिल मिश्रा, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. प्रणवीर सिंह एवं डॉ. बिन्दु मलिक से भी मुझे समय-समय पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ, सत्परामर्श एवं सहयोग मिलता रहा। आप सभी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

उन विद्वान लेखकों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मानक ग्रन्थों का अध्ययन-मनन मैंने इस शोध कार्य के निमित्त किया। शोध तथा संकलन के कार्य में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पुस्तकालय से भी सहयोग लिया गया। मैं यहां पर कार्यरत सभी कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना धर्म समझता हूँ।

इस शोध कार्य के प्रति सजग एवं सक्रिय बनाने में तथा अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार द्वारा इस योग्य बनाने में, कि मैं कुछ उत्पादक और रचनात्मक कर सकूं, इसके लिए मैं अपने परिवारजन को कदापि विस्मृत नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता, जिनका स्नेह, आशीर्वाद, अपनत्व और प्यार सदा मेरे साथ रहा। मैंने इस शोध कार्य में ही नहीं, वरन् अभी तक के जीवन में जिन अनेक चुनौतियों और विषमताओं से सफलता पाई है उनमे सबसे बडा योगदान मेरे पूज्य पिता जी श्री मांगे राम एवं पूज्य माता जी श्रीमती उपासना का है, जिन्होने मुझे इस योग्य बनाने में जीवनभर साधना की। मेरे बड़े भाइयों डॉ० प्रमोद कुमार(इतिहास), डॉ० मनोज कुमार(योग विज्ञान),डॉ० संजय(भौतिकविज्ञान), डॉ० कुलदीप(विधि), छोटे भाई जितेंद्र प्रधान ,अरुण, एवं अर्जुन,दुर्गा शक्ति स्वरूप प्रिय बहनों कोमल ,रूबी, अमृता, चिंकी सिंह ,पायल चौहान ,काजल चौहान का सहयोग भी इस कार्यावधि के दौरान मिलता रहा। इस सम्पूर्ण कार्यावधि के दौरान मुझे मेरी जीवन साथी श्रीमती रितु का भी भरपूर साथ मिला जिनके धैर्य, स्नेह एवं प्रेरणादायी व्यवहार एवं कुशल ढंग से दोनों पुत्रों देवव्रत एवं यशवर्धन की परवरिश के चलते मैं अपने शोध कार्य को निर्बाध तरीके से पूर्ण कर सका हूँ।

इनके साथ ही मैं अपने भदावर विद्या मंदिर पीजी कॉलेज के श्रद्धेय प्राचार्य जी डॉ० सुकेश यादव (चांसलर जे एस ओर अग्रवन हेरिटिज विश्वविद्यालय आगरा),विभागाध्यक्ष डॉ० दिग्विजय नाथ यादव का विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ साथ ही साथ समस्त महाविद्यालय परिवार का धन्यवाद जिनका प्यार ,स्नेह,अपनतत्व मुझे कार्य के दौरान हमेशा मिलता रहा। परम मित्रों डॉ० प्रदीप कुमार, डॉ० दीपक प्रकाश, डॉ० विनीत कुमार, डॉ० अंकुर कुमार, डॉ० अरूण नागर, डॉ० सिकन्दर रावत, डॉ० विशाल कुमार, डॉ० प्रवेन्द्र चौहान, डॉ०यशवंत, डॉ० कनिक जिन्होने बड़े लगन से शोध-प्रबन्ध का कार्य करते हुए डाटा संकलन में भरपूर सहयोग देते हुए प्रूफ-रीडिंग में भी मेरी सहायता की, इन सभी के प्रति भी हृदय से अपना आभार व्यक्त करता हूँ। प्रिय मित्र डॉ० दीपक प्रकाश एवं डॉ० विनीत वर्मा का डाटा संकलन से लेकर डाटा विश्लेषण तक के कार्य में सहयोग हेतु पुनः विशेष धन्यवाद करता हूं।

शोध विषयों के तौर पर चयनित समस्त प्रतिभागियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय के साथ हमें सहयोग प्रदान किया।

शोध कार्य के टंकण एवं मुद्रण कार्य हेतु मैं डॉ० गौरव सिंह (स्कॉलरर्स हब, जगजीतपुर, हरिद्वार) का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूं। जिनके सहयोग से यह शोध कार्य सुगमता के साथ समय पर पूर्ण हो सका।

अंततः, मैं पुनः श्रद्धेय गुरु जी प्रोफेसर आर. के. एस. डागर जी का स्मरण करता हूँ। जिनके स्नेह और प्रेरणा से मेरा जीवन व्यक्तित्व पुष्पित-विकसित हुआ है। आपसे मुझे शिक्षा के साथ ही जीवन पथ पर निरन्तर गतिमान रहने की प्रेरणा प्राप्त होती रही है। इसी के साथ आराध्य सत्ता परम पूज्य ईश्वर के चरण-कमलों की वंदना करते हुए विद्वतजनों के समक्ष इस शोध-प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

दिनांक : 14/12/2023

अनुज कुमार
Anuj Kumar
शोधार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय- सूची

प्रथम अध्याय :	प्रस्तावना	01-29
द्वितीय अध्याय :	साहित्य समीक्षा	30-47
तृतीय अध्याय :	शोध प्रविधि	48-53
चतुर्थ अध्याय :	अध्ययन के आंकड़ों और पररणाम का विश्लेषण	54-117
पञ्चम अध्याय :	सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव	118-129
	सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची	130-138
	परिशिष्ट	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

मानव परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है, क्योंकि इसमें सोचने ओर विचारने की शक्ति हैं जिसके द्वारा वह स्वयं एवं दूसरों का मूल्यांकन कर सकता है। मानव सभ्यता इस बात को परिलक्षित करती है कि निरंतर प्रगति से ही विकास संभव है। यह निरंतर प्रगति एवं प्रयास ही मानव को जीवन की नई दिशा और दशा देने का कार्य करते हैं। जीवन हमे नित-निरंतर नया सीखाता रहता है जिसके माध्यम से सामाजिक समायोजन संभव है और समाज में एक आदर्श नागरिक होने का गौरव प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय को जब हम देखते हैं तो अंधाधुंध भाग दौड़ वाली भयावह स्थिति आंखों के सामने दिखाई देती है। मानव ने स्वास्थ्य की दिशा में प्रगति की है उसनें नई-नई चिकित्सा पद्धति-एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, चुंबक चिकित्सा, रंग चिकित्सा इत्यादि को इजाद किया हैं और नए प्रयोग किए हैं परंतु इन प्रयोगों एवं भौतिकवादिता के चलते मानव की स्थिति को देखकर लगता है की वर्तमान समय में वह जिस धन के लिए वह भाग रहा है उसके उपयोग हेतु उसका स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि अस्वस्थ जीवन की गति अत्यंत धीमी एवं उदासी भरी होती है। जब वयक्ति अस्वस्थ होता है तो सभी प्रकार की संपन्नता भी उसे कोई आनंद नहीं दे सकती। वर्तमान समय में भौतिक संपदा के साथ-साथ स्वास्थय की परम आवश्यकता है। मानव को सर्वांगीण विकास देने हेतु आवश्यक है कि उसे शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए। शिक्षा आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया है जिस का वास्तविक अर्थ कुछ सीख कर स्वयं को पूर्णता ओर ले जाने से होता है शिक्षा के माध्यम से बालक के स्वभाव में परिवर्तन लाकर उसके अंदर नैतिक प्रवृत्तियों का विकास किया जाता है। व्यापक अर्थ में शिक्षा का अर्थ है जीवन के लिए तैयारी करना एवं इसका उद्देश्य व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस प्रकार शिक्षा का संबंध सर्वोत्तम जैविक स्वास्थ्य और भावनात्मक जीवन शक्ति जैसे सामाजिक चेतना, ज्ञान अर्जन, संपूर्ण दृष्टिकोण, नैतिक और आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने से है। शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया भी माना जाता है जिसके द्वारा व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए, समाज में परिपक्व होने के लिए आकार दिया जाता है। यह एक व्यक्ति को तर्कसंगत, परिपक्व और जानकार इंसान बनाने के लिए सुसज्जित की गई प्रणाली है। शिक्षा समाज में बेहतर समायोजन के लिए और एक उपयोगी एवं सार्थक नागरिक बनाने के लिए व्यक्ति के व्यवहार में संशोधन है। शिक्षा का व्यावहारिक दृष्टिकोण कार्य करके सीखने पर प्रकाश डालता है। प्राथमिक शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के माध्यम से बच्चे की बुनियाद ठोस एवं मजबूत बनती है यदि प्राथमिक स्तर की शिक्षा के समय बच्चों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाए तो बालक उन बातों को आत्मसात कर लेता है। प्राथमिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए संविधान की धारा 27 में स्पष्ट किया गया है कि "प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक का अधिकार है और उसकी इस मांग को पूरा करना राष्ट्र का कर्तव्य है।"(बांगिया,2010) 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ व अनुच्छेद 45 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को शामिल कर घोषणा की गई संविधान के लागू होने के 10 वर्षों के दौरान अर्थात 1960 तक राज्य उन सभी बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का क्रियान्वयन करेगा जो 14 वर्ष की आयु पूरी नहीं कर लेते। प्रारंभिक शिक्षा के आधार पर किसी भी देश की इमारत खड़ी होती है यदि हम 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा पर बात करें तो यह शिक्षा हमें इस प्रकार देनी होगी जिसके माध्यम से एक सकारात्मक वातावरण बन सके और शिक्षा के सर्वभौमीकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। बच्चे के संपूर्ण विकास में शासन, प्रशासन, शिक्षक, समाज एवं अभिभावक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। शिक्षा के माध्यम से समाज के सभी वर्ग एक साथ एवं एकजुट होते हैं। शिक्षा एक चेतन अथवा अचेतन, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक वातावरण संबंधी प्रक्रिया है। वर्तमान में शिक्षा का कार्य केवल विषय का ज्ञान देना ही नहीं है वरन व्यक्ति के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास कर उसे प्रत्येक प्रकार के वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने योग्य बनाना है। सीखने एवं सीखाने के इसी क्रम में अत्यंत आवश्यक है बालक की क्षमता एवं संतुष्टि। शिक्षा का अभिन्न अंग शारीरिक शिक्षा मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक विकास की प्रक्रिया है। कहा भी गया है कि "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"(कुमार संभव) अर्थात धर्म के पालन हेतु हमारा शरीर ही हमारा साधन है। इसी क्रम एवं तारतम्यता में शिक्षा में शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का स्थान अति महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के माध्यम से बालक अपनी बातों को अभिव्यक्त कर अपनी प्रतिभा को बाहर लाता है एवं खेलो और शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से बहुत सारी बातें सीख जाता है।

शारीरिक शिक्षा -

शारीरिक शिक्षा मानवता की परिपूर्णता एवं संपूर्णता की शिक्षा है। यह मनुष्य की दैनिक दिनचर्या एवं जीवन शैली को सरल एवं सुगम बनाने की शिक्षा है। मानव के स्थायित्व की शिक्षा है, शारीरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गतिविधि एवं अनुभवों के माध्यम से व्यक्ति में परिवर्तन लाया जाता है। शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य न केवल शारीरिक विकास करना है, बल्कि शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से व्यक्ति का मानसिक विकास भी करना है।

"मानव गतिविधि के माध्यम से दी जाने वाली एक शिक्षा जहां खेल, जिमनास्टिक, नृत्य और व्यायाम से जुड़ी बड़ी मांसपेशियों की गतिविधियों के माध्यम से कई शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है।"(Barrow,1989.)

"शारीरिक शिक्षा; शिक्षा का एक अहम हिस्सा है जो शरीर के विकास और देखभाल के बारे में निर्देश देती है, जिसमें साधारण कैलिस्थेनिक व्यायाम से लेकर स्वच्छता, जिमनास्टिक प्रदर्शन और एथलेटिक्स खेलों के प्रबंधन में प्रशिक्षण प्रदान करने वाला अध्ययन पाठ्यक्रम शामिल है।"(Webster, New International Dictonary,2002)

शारीरिक शिक्षा का क्षेत्र सीमित नहीं अपितु अत्यंत व्यापक है। मनुष्य का विकास उसके संचालन एवं क्रियाओ के साथ ही प्रारंभ हो जाता है। शारीरिक क्रियाएं मानव जीवन का अभिन्न अंग है। "व्यक्ति की विभिन्न क्षमताएं, कुशलताएं और योग्यताएं खेल एवं शारीरिक शिक्षा के माध्यम से ही आती हैं।"(गंगवार,2000,पेज स०195.) शारीरिक क्रियाएं बच्चों के जन्म से पूर्व शुरू हो जाती है इसलिए खेलना बालक की सहज प्रवृत्ति है। खेलना प्रत्येक बालक की जन्मजात प्रवृत्ति है, खेल सार्वभौमिक है। बिना शारीरिक क्रियाओं के किसी भी प्रकार का खेल संभव नहीं है। हरबर्ट स्पेंसर और शिलर द्वारा दी गई थ्योरी 'अतिरिक्त ऊर्जा के सिद्धांत' के अनुसार भी बच्चे अपनी ऊर्जा को प्रयोग में लाने हेतु खेलते हैं। खेलों के माध्यम से बच्चे अपनी विभिन्न भावनाएं व्यक्त करते हैं। बालक खेलों के माध्यम से बेहतर शारीरिक मुद्रा, हाथ पैरों की गति का समन्वय, हाथ एवं आंखों का समन्वय इत्यादि सीखता है। बालक को खेल में आगे बढ़ाने हेतु आवश्यक है की प्रशिक्षक को शारीरिक मुद्रा, खेल जैव यांत्रिकी, शरीर गतिविज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, खेल चिकित्सा, खेल मैदानो के बारे में जानकारी, दौड़ने का तरीका, खेलने का तरीका, उचित खेल उपकरण की जानकारी इत्यादि हो। यह सब जानकारी शारीरिक शिक्षा के रूप में पढ़ाई जा रहे विषयों से प्राप्त होती है। "खेल बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है बालक की छिपी हुई प्रतिभाएं खेलों के माध्यम से सामने आती हैं छात्रों के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक गतिविधि बढ़ाने का सबसे प्रभावी तरीका नेशनल एसोसिएशन फॉर स्पोर्ट एंड फिजिकल एजुकेशन ने निर्देश समय, शिक्षक योग्यता और शिक्षण सुविधाओं की मात्रा के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश विकसित किए हैं, जिन्हें ऐसे कारकों के रूप में पहचाना गया है जो बच्चों और किशोरों में शारीरिक गतिविधि बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं।"(NASPE,1990) ये दिशानिर्देश स्कूलों को विशिष्ट मानदंड प्रदान करते हैं जो छात्रों को शारीरिक गतिविधि में शामिल होने के अवसर प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से कराएं जाने वाली अनेक शारीरिक गतिविधियां मनुष्य में प्राकृतिक रुप से विद्यमान मोटर फिटनेस में सुधार करती है। "शारीरिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से दी जाती है यह बालकों के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास में सहायता करती है।"(National plan of Physical Education 1956) "शारीरिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है।"(द्विवेदी ,2007,पेज स० 5.) परिवार के पश्चात बच्चों की दूसरी पाठशाला उसका विद्यालय होता है। विद्यालय वह संस्था है जो बच्चे एवं समाज के बीच संपर्क करने की एक कड़ी का काम करता है। बालक में अनेक गुण यथा-अनुशासन, सहयोग, सामाजिक व्यवहार, नैतिक व्यवहार, सदाचार, चारित्रिक गुण, मित्र मंडली में रहना इत्यादि विद्यालय के माध्यम से ही सिखाए जाते हैं। बच्चों का मनो-पटल कोरी स्लेट के समान होता है उसे पर जो भी अंकित किया जाता है उसी का प्रभाव समस्त जीवन पर जीवन भर पड़ता है। "शरीर या शारीरिक गतिविधियों से संबंधित शिक्षा ही शारीरिक शिक्षा है, शिक्षा प्रणाली शारीरिक शिक्षा के बगैर अपूर्ण प्रतीत होती है।"(Physical Edu. And health,2009) बालक के संपूर्ण विकास हेतु आवश्यक है कि विद्यालय का वातावरण अनुकूल हो। बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक इत्यादि गुणों का विकास करना विद्यालय का उत्तरदायित्व है। खेलों में प्रतिभाग करने से व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है एवं सहयोग की भावना फलीभूत होती है। नियमित रूप से व्यायाम करने, खेल क्रियाओ में प्रतिभाग करने, संतुलित आहार लेने इत्यादि के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ एवं क्रियाशील बनाए रख सकता है। शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के माध्यम से बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के पहलुओं को प्राप्त किया जा सकता है। सामान्यतः यह सभी चाहते हैं कि बालक की शिक्षा इस प्रकार की हो कि मानसिक उन्नति के साथ-साथ उसकी शारीरिक क्षमता, शारीरिक विकास व शारीरिक उन्नति भी हो। व्यक्ति को सर्वगुण संपन्न बनाने हेतु खेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन, व्यायाम, ड्रिल आदि क्रियाओं की विद्यालय स्तर पर मुख्य भूमिका होती है और इन क्रियाओं को बच्चा शारीरिक शिक्षा के माध्यम से सीख कर स्वयं में उत्तम आदतों का विकास करता है। शारीरिक शिक्षा के अनेक अग्रणी हस्ताक्षरों ने इसके महत्व को समझाते हुए शारीरिक शिक्षा के विषय में अपने विचार उदगार किए हैं। चार्ल्स ए बूचर के अनुसार "सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अंग है जिसका उद्देश्य ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से जिनका चयन शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संवेगात्मक दृष्टि से समस्त नागरिकों का निर्माण करने जैसे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है वही शारीरिक शिक्षा है।"(सिंह ,2018,पेज सं० 29.) शारीरिक शिक्षा के महत्व पर महात्मा गांधी जी कहते हैं कि "मनुष्य की उत्कृष्टता का संपूर्ण यथा शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास ही शारीरिक शिक्षा है।"(देशमुख, 1992,पेज सं० 8.) महान दार्शनिक प्लेटो ने शारीरिक शिक्षा के विषय में कहा शारीरिक शिक्षा से तात्पर्य शरीर व आत्मा को उसके जन्मजात गुणों के अनुसार पाने से है। "किसी भी बालक या खिलाड़ी का पूर्ण एवं संतुलित विकास करना ही शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य है, किसी भी खिलाड़ी का अच्छा प्रदर्शन तब तक संभव नहीं है जब तक वह शारीरिक शिक्षा में दक्ष न हो।"(बिश्नोई ,2007,पेज सं० 1-2.) शारीरिक शिक्षा खेल एवं मनोरंजन सलाहकार समिति भारत सरकार ने कहा है कि "शारीरिक शिक्षा; शिक्षा का ऐसा अभिन्न अंग है जो व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व हेतु शरीर मन और आत्मा के संपूर्ण विकास के लिए दी जाती है।"(कमलेश ,1984,पेज सं० 12.)

शारीरिक शिक्षा का माध्यम शारीरिक क्रियाएं हैं यह संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। शारीरिक प्रक्रियाएं जब तक ओजस्वी नहीं होगी तब तक शारीरिक विकास की संभावनाएं कम होगी। शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा प्रबंधन है जिसके माध्यम से केवल शरीर ही नहीं अपितु व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता हैं। वर्तमान शारीरिक शिक्षा सिद्धांतों और वैज्ञानिकता पर आधारित है, शारीरिक शिक्षा में निर्धारित प्रक्रियाओं का चयन व्यक्ति के विकास के लिए ही किया जाता है। शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य भिन्न नहीं है परंतु दोनों का माध्यम पृथक है। चूंकि शारीरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से शारीरिक शिक्षा संभव है इसलिए यह शिक्षा व्यक्ति अपने अनुभव के माध्यम से ग्रहण करता है। यदि वर्तमान समय में शारीरिक शिक्षा को मानव विकास का माध्यम बनाया जाए तो वास्तव में अभूतपूर्व परिणाम प्राप्त होंगे। प्रत्येक खिलाडी समुदाय में ही विकसित होता है इसी समुदाय का प्रभाव खिलाड़ी के जीवन पर पड़ता है। गांव एवं नगर में सामाजिक स्तर भिन्न-भिन्न होते हैं इस भिन्नता के कारण ही गांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं नगर के बालक एवं बालिकाएं व्यक्तित्व में अलग-अलग देखने को मिलते हैं। मानव एक सीखने वाला प्राणी है व्यवहार उसके द्वारा अर्जित होता है कुछ शिक्षण संस्थाएं विशेष रूप से खेल की शिक्षा देती हैं जिसके माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास होता हैं। परंतु ग्रामीण परिवेश में शारीरिक शिक्षा एवं खेल की सुविधाएं प्राय देखने को बहुत कम मिलती हैं। आज यदि हम विद्यार्थी के संपूर्ण विकास की कल्पना करते हैं तो हमें आवश्यकता है की विद्यालय के पाठ्यक्रम और कार्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को उचित स्थान दिया जाए। शारीरिक शिक्षा; शारीरिक फिटनेस और दक्षता, मानसिक सतर्कता, उत्तम चरित्र के निर्माण के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। आज लागू शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम को बाल वृद्धि और विकास के कुछ बुनियादी सिद्धांतों के आलोक में फिर से जांचने और फिर से आलेखन करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने स्कूली पाठ्यक्रम के सभी चरणों में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य कर दी है। हालाँकि, स्कूली क्षेत्र में शारीरिक शिक्षा और इसकी भागीदारी स्कूल में कुछ छात्रों तक ही सीमित रही। शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन के केंद्रीय सलाहकार बोर्ड ने रिपोर्ट दी थी-"ऐसे बहुत कम स्कूल हैं जो प्रतिदिन सभी विद्यार्थियों को शारीरिक शिक्षा प्रदान करते हैं सामान्य बहाना यह है कि शैक्षणिक भार भारी है और शारीरिक शिक्षा के लिए स्कूल के घंटों को गलत तरीके से अपनाया जाता है, विभिन्न स्कूलों में अलग-अलग जोर दिया जाता है।"(National plan of Physical Education 1956)

शारीरिक शिक्षा; शिक्षा का वह चरण है जो व्यक्ति के शारीरिक विकास और कल्याण से संबंधित है और जिसके माध्यम से प्रतिभागियों को उनके मानसिक, सामाजिक और नैतिक गुणों से प्रभावित किया जाता है। शारीरिक शिक्षा और शिक्षा के बीच अंतर इस तथ्य में निहित है कि शारीरिक शिक्षा मुख्य रूप से मांसपेशियों की गतिविधि की विशेषता वाली स्थितियों और प्रतिक्रियाओं से संबंधित है जबकि शिक्षा मानसिक रूप से मजबूत करने हेतु उत्तम प्रणाली है। शारीरिक शिक्षा वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित एक सुनियोजित प्रक्रिया है वर्तमान समय में खेल प्रत्येक देश की संस्कृति का अभिन्न अंग है। खेल क्रियाओं में प्रतिभाग करने से व्यक्ति के अंदर निहित अनेक उत्तम गुणों का विकास संभव है। "संयुक्त राज्य अमेरिका में 1972 में सभी संस्थाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध करा कर सभी स्तरों पर खेलों में महिलाओं की भागीदारी को विकसित किया गया।"(शर्मा, 2018, पेज सं० 143.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शारीरिक शिक्षा प्रत्येक बालक को समग्र रूप यथा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक इत्यादि में स्वस्थ बनाने का लक्ष्य रखती हैं शारीरिक शिक्षा से बच्चों में नैतिक एवं सामाजिक गुण विकसित होते हैं जो दूसरों के साथ खुशी से रहने एवं अच्छा नागरिक बनाने में सहायक होते हैं।"(डॉ० लीना, 2017-18, पेज सं० 10.) संपूर्ण विश्व में करोड़ों लोग प्रतिदिन खेल संबंधी गतिविधियों में प्रतिभा करते हैं इनमें से कुछ लोग खेलों को भविष्य निर्धारण के रूप में स्वीकार करते हैं। प्रत्येक नागरिक को खेलने हेतु अच्छे खेल वातावरण का अधिकार है। यूनेस्को के अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज के अनुसार "शारीरिक शिक्षा और खेल का अभ्यास सभी का मौलिक अधिकार है।"(UNESCO)

शारीरिक शिक्षा और फिटनेस के कार्यक्रमों में विकास अग्रसर रूप में दिखाई देता है। वर्तमान समय में आदर्श व्यक्ति की अवधारणा प्रकाश में आई है इस आदर्श व्यक्तित्व में खेल एवं शारीरिक शिक्षा एक केंद्र के रूप में सामने आए हैं। शारीरिक शिक्षा की आधुनिक अवधारणा ने विश्व को सांस्कृतिक एकता एवं व्यवहार की एक डोर में बांधा है। शारीरिक शिक्षा एवं खेल हमें अंतर्राष्ट्रीय पटल पर एक विशेष पहचान दिलाने में सफल रहे हैं। खेलकूद के माध्यम से ही उत्तम स्वस्थ जीवन संभव है भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत खेल जीवन जीने के अधिकार में समाहित हैं।

सहारनपुर मंडल में शारीरिक शिक्षा एवं खेल संसाधनों का स्वरूप -

सहारनपुर गंगा एवं यमुना की पवित्र नदियों के मध्य फैले हुए 'दो आब' के अधिकतर उत्तरी भाग से बना है। सहारनपुर भारत वर्ष में स्थित उत्तर प्रदेश प्रांत का एक मंडल है। भौगोलिक दृष्टिकोण से बात करें तो हम पाते हैं कि यह क्षेत्र मानव के आवास सुरक्षा खान-पान इत्यादि के लिए उपयुक्त स्थान है। इतिहासकारों के अनुसार इल्तुतमिश के शासन में 1340 ई० के आसपास शाह–हारून चिश्ती के नाम पर सहारनपुर का नाम रखा गया। सहारनपुर वर्तमान समय में भारतवर्ष के राज्य उत्तर प्रदेश का एक मंडल एवं जिला मुख्यालय भी है। उत्तर प्रदेश राज्य के अंतर्गत कुल 18 मंडल आते हैं जिनमें से सहारनपुर मंडल भी है। सहारनपुर जिले को 1997 में मंडल के रूप में दर्जा प्राप्त हुआ। सहारनपुर अपने लकड़ी के नक्काशीदार कुटीर उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। इसके उत्तर पूर्व में स्थित शिवालिक की पहाड़ियां इसे उत्तराखंड राज्य से अलग करती हैं। सहारनपुर मंडल के अंतर्गत वर्तमान समय में तीन जिले-सहारनपुर, मुजफ्फरनगर एवं शामली आते हैं। सहारनपुर मंडल में शिक्षा की बात की जाए तो हम पाते हैं कि यहाँ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षरता दर लगभग 70% के आसपास है। सहारनपुर शिक्षा के दृष्टिकोण से एक अच्छा क्षेत्र है यहां पर अनेक सरकारी स्कूल, प्राइवेट स्कूल, ऐडेड व सरकारी कॉलेज ,प्राइवेट एवं राज्य विश्वविद्यालय स्थित है। सहारनपुर मंडल में शिक्षा के उचित साधन विद्यमान है सहारनपुर मंडल में परिषदीय जूनियर हाईस्कूलों (उच्च प्राथमिक) की कुल संख्या 1172 है जिनमें से सहारनपुर में 576 मुजफ्फरनगर में 382 एवं शामली में 214 स्कूल हैं प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्कूल परिवार में आरंभ हुई शिक्षा-दीक्षा के पश्चात बालक के जीवन की नींव को मजबूत करने में अपनी महती भूमिका निर्वहन करते हैं। वर्तमान समय में सहारनपुर मण्डल के 1172 उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से 175 विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक नियुक्त है। उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चे को खेलों एवं शारीरिक शिक्षा में अग्रणी बनाने की जिम्मेदारी अनुदेशकों की हैं। खेल संसाधनों को देखा जाए तो हम पाते है कि सहारनपुर मण्डल के जिले सहारनपुर में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है युवा चाहते हैं कि खेलों में नाम रोशन करे, लेकिन सुविधाओं का अभाव उनकी राह में बाधक बन रहा है। खेल सुविधाएं बेहतर बनाने के दावे तो तमाम होते हैं, लेकिन अमल नहीं होता, जो काम हो रहे हैं वह भी अधर में लटके हैं या गति धीमी है। खेलो इंडिया के अंतर्गत जनपद के सभी 11 ब्लॉक में मिनी स्टेडियम बनने थे, लेकिन जगह नहीं मिली। विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर खेलों की स्थिति खराब है। "महाराज सिंह कॉलेज का खेल मैदान जनता रोड तिराहे पर है, जिसमें गंदगी फैली हुई है यहां वर्ष में एक बार कुछ खेल कराए जाते हैं। जेवी जैन कॉलेज के खेल मैदान पर जंगली घास उगी है। यही हाल मुन्नालाल कॉलेज का है। माध्यमिक विद्यालयों की बात करें तो अनेक विद्यालयों ने अपने मैदानों को किराए पर दिया है, जहां लोगों ने खेल एकेडमी खोल ली हैं। अधिकतर परिषदीय विद्यालयों के पास अपने मैदान ही नहीं हैं।"(ई-अमर उजाला,28 अगस्त 2021.) मण्डल के दूसरे जिले मुजफ्फरनगर में नए दौर में भी प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की कमी नहीं है, लेकिन आवश्यकता उन्हें तराशने की है। सुविधाएं बढ़ाने और सही प्रशिक्षण देने की जरूरत है। "जिले में चौधरी चरण सिंह स्पोर्ट्स स्टेडियम में प्रशिक्षकों की कमी के कारण खिलाड़ी बेहाल है। हॉकी, क्रिकेट और शूटिंग बॉल समेत कई खेल ऐसे है, जिनके कोच उपलब्ध नहीं है।"(ई-अमर उजाला, 28 अगस्त 2022.) शामली जनपद की बात करें तो खेल सुविधाओं में यह जनपद भी पिछड़ा हुआ है। जिले के प्रसिद्ध खिलाड़ियों का कहना है कि-"शामली में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है, वर्तमान सरकार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाड़ियों के लिए अच्छा कार्य कर रही है, लेकिन शामली के खिलाड़ियों को और भी बेहतर सुविधाएं मिलने की जरूरत है जिससे यहां के खिलाड़ी देश के लिए सोना ला सकें।"-अनवर सुल्तान, ओलंपियन

"शामली जिले के खिलाड़ियों के लिए सुविधाओं की जरूरत है तो जरूरी हैं कि सबसे पहले खिलाड़ियों के लिए जिले में खेल मैदान जल्दी ही बनना चाहिए।"-जीआर खान उर्फ नवाब मियां, नेशनल शूटर

जिले में सभी खेल के खिलाड़ी हैं, लेकिन सरकार की ओर से कोई सुविधाएं नहीं दी जा रही है। पड़ोसी राज्य में खिलाड़ियों के लिए बेहतर सुविधाएं दी जा रही हैं। मैं कहूंगा कि शामली के खिलाड़ियों को भी सुविधाएं मिलनी चाहिए। -विक्की कुमार लांबा, अंतरराष्ट्रीय व्हीलचेयर क्रिकेटर (ई-जागरण,2021)

भारत में शारीरिक शिक्षा एवं खेल -

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही शारीरिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा है। अनेक सभ्यताओं से मिले प्राचीन प्रमाण सिद्ध करते हैं कि कभी खेलो एवं शारीरिक शिक्षा में हम सिरमौर हुआ करते थे। शारीरिक शिक्षा की प्रचलित अवधारणाएं एवं अनुभव शारीरिक शिक्षा के इतिहास पर निर्भर करती हैं। भारत का शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का इतिहास गाथाओं, मौखिक व्याख्यानों, लोक कथाओं, युद्धों की कहानियों, योग ऋषियों की समाधियों इत्यादि से ज्ञात होता है। "हड़प्पा एवं मोहनजोदाड़ो के समय में बड़े-बड़े सार्वजनिक स्नानागार थे जहां नागरिक उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम करते थें।"(सिंह ,2018,पेज सं० 64.) अपनी जन सामान्य की रक्षा हेतु क्रीडा लोकप्रिय थी ताकि शारीरिक विकास उत्तम हो सके। प्राचीन भारत में जीवन शैली धर्म एवं संस्कृति के काफी नजदीक थीं। "महात्मा बुद्ध द्वारा खेल गतिविधियों और व्यायाम क्रियाओं की मनाही के बावजूद भी खेल, व्यायाम और मनोरंजन की गतिविधियां निरंतर शैन– शैन चलती रही।"(सिंह,2004,पेज सं० 34.) भारतीय संस्कृति और सभ्यता का धोतक हमारे खेल प्राचीन काल से ही विभिन्न रूपों में विद्यमान रहे हैं परंतु इनके उद्भव, आविष्कार इत्यादि अज्ञात हैं। हमारे मनीषी शरीर एवं मन को संतुलित रख एकाग्रता में पिरोने हेतु 'योग' के विभिन्न आसनों और सूर्य नमस्कार सरीखी वैज्ञानिक क्रियाओं की शिक्षा देते थें। यह योग क्रियाएं मानव को लंबे समय तक स्वस्थ एवं सुडौल रखती थीं। भारतीय संस्कृति और वेद हमेशा से अहिंसा को सर्वश्रेष्ठ मानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए हैं। परंतु जब बात स्वयं की रक्षा की आती है तो बलवान, शक्तिवान, तेजवान, बुद्धिमान व्यक्ति ही स्वयं की रक्षा करने में सक्षम माना जाता है। जिस प्रकार इच्छाओं की पूर्ति हेतु धन आवश्यक है उसी प्रकार कर्तव्य निर्वहन हेतु बल आवश्यक है। भारत का इतिहास बताता है की वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आते हैं। ब्राह्मण का कार्य शिक्षा-दीक्षा का था। राज-पुत्रो को संपूर्ण रूप से मजबूत बनाने हेतु ब्राह्मणों द्वारा शिक्षा-दीक्षा प्रदान की जाती थी। क्षत्रिय अपनी गौरव गाथा एवं राज्य रक्षा हेतु विभिन्न युद्ध कलाओं में निपुण होते थे। वैश्य एवं शुद्र खुद को मजबूत रखने हेतु व्यायाम और क्रियाओं में प्रतिभा करते थे परंतु उनको मजबूर नहीं किया जाता था। हमारे भारतवर्ष के महाकाव्य 'रामायण' और 'महाभारत' वीर योद्धाओं की कहानियों से भरे पड़े हैं उस काल में श्री रामचंद्र, लक्ष्मण, वीर हनुमान, रावण, मेघनाथ, कुंभकरण, अंगद, बाली, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, कर्ण, दुर्योधन और भगवान श्री कृष्ण जैसे योद्धा हुए हैं। हमारे वीर योद्धा विभिन्न हथियारों को चलाने में पारंगत थे साथ ही साथ शारीरिक बल में भी उत्तम थें। 13वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी के मध्य महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई जैसे महान योद्धा पैदा हुए जो अपने बल पर समस्त शत्रु सेना के विनाश का दम रखते थें। जब भारत वर्ष में हम शारीरिक शिक्षा के विकास की बात करते हैं तो हम पाते हैं कि कभी विश्व गुरु और सोने की चिड़ियां कहलाने वाला भारत अपनी ऐतिहासिक पुस्तकों, धर्म ग्रंथों, हड़प्पा, मोहनजोदाड़ो आदि के माध्यम से यह बताने में सक्षम है कि हमारा यह विश्व विख्यात राष्ट्र कभी खेलों की कला में अद्वितीय था। प्राचीन भारत में एवं आधुनिक भारत में शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का स्तर देखने के लिए हम विभिन्न कालखंडो में इसका विभाजन करते हैं।

वैदिक काल -

वर्तमान दौर में हम योग के सूर्य नमस्कार जैसी क्रिया को अपनाना शुरू कर रहे हैं परंतु "वैदिक काल में सूर्य नमस्कार धार्मिक कर्तव्य के रूप में था।"(सिंह,2004,पेज सं० 37.) उस समय में मनुष्य अत्यधिक हस्ट पुष्ट एवं बलशाली और आत्मनिर्भर थे। शिकार भी खेल के रूप में प्रचलित था मनोरंजन हेतु मेले एवं उत्सव आयोजित किए जाते थें। आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर बल दिया जाता था, वैदिक काल में ग्रामीण सभ्यता थी। प्राचीन ग्रंथों से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य स्वस्थ एवं लंबी आयु हेतु प्रयत्न में लगा रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकाव्य काल -

महाकाव्य काल मुख्यतः रामायण एवं महाभारत का काल रहा है। इस काल में बड़े-बड़े महारथियों का वर्णन मिलता है जो अपना संपूर्ण समय युद्ध की तैयारी में लगा देते थें। राजाओं में स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी। मनोरंजन हेतु चौपड़ तथा अन्य अंदर बैठकर खेले जाने वाले खेल मुख्य साधन थें। शिक्षा-दीक्षा का कार्य गुरुकुलों में होता था, शारीरिक गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य सेनाओं की ताकत बढ़ाना था।

पूर्व हिंदू काल -

पूर्व हिंदू काल में नागरिक के जीवन में उत्सव और नाटक अत्यंत महत्वपूर्ण थें। शिकार, जल क्रीड़ा, कुत्ता पालन, शतरंज इत्यादि प्रमुख मनोरंजन का साधन थें। पशुओं की लड़ाई का भी प्रचलन था। जल क्रियाएं शारीरिक कसरत के रूप में मनोरंजन का साधन थीं।

उत्तर हिंदू काल -

उत्तर हिंदू काल तक्षशिला एवं नालंदा जैसे विश्वविद्यालय के काल के नाम से जाना जाता हैं इन विश्वविद्यालयों में बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक सौंदर्य, तैराकी, तीरंदाजी, पर्वतारोहण, योग इत्यादि दैनिक दिनचर्या का अनिवार्य अंग थे। इस काल की शारीरिक शिक्षा एवं शारीरिक बल का धोतक मथुरा के कुषाण काल की कलाकृतियां हैं जो पुरुषों एवं शेरों के मध्य लड़ाई को दर्शाती हैं।

मध्य काल -

12वीं शताब्दी तक गुरुकुल पद्धति प्रचलन मे थी शिक्षक अथवा गुरु विभिन्न शारीरिक परिश्रम के माध्यम से सैनिक प्रशिक्षण चलाते थे। समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी प्रतिदिन 1200 सूर्य नमस्कार करते थे, स्वामी जी को भारतीय जिमनेजियम आंदोलन का पितामह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। धीरे-धीरे मुगलों के आधिपत्य के पश्चात शारीरिक शिक्षा का स्वरूप बदला। "कबीलों के लोग छोटी-छोटी बातों पर युद्ध करते थे शारीरिक समस्याओं के समाधान हेतु शारीरिक क्रियाएं अत्यंत आवश्यक मानी जाती थी, शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए कठिन व्यायाम, तलवारबाजी, तैराकी, शिकार, भाला फेंक इत्यादि प्रयोग होते थे।"(कमलेश,1984,पेज सं०167-168.) मुस्लिम शासक खेलों में अत्याधिक रूचि लेते थे; पोलो खेलते समय घोड़े से गिरकर कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु इसी बात का प्रमाण है। फतेहपुर सीकरी के फर्श पर बने चौखाने जहां अकबर शतरंज खेलता था वह खेलों के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगलों के शौक को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त मुर्गा युद्ध, चौगान, संगीत इस बात के प्रमाण हैं की मनोरंजन हेतु चुटकुले बाजी एवं अन्य क्रियाओं के साथ-साथ खेल भी प्रमुख भूमिका निभाते थें। "मुगल शारीरिक स्वास्थ्य व युद्धकला के प्रशिक्षण के साथ-साथ शांति काल में भी खेलों का लुफ्त उठाते थें।" (कमलेश,1984,पेज सं०167-168.)

ब्रिटिश काल -

ब्रिटिश काल के समय भारतीय सभ्यता पर पश्चिम का प्रभाव पड़ा जिसके परिणाम स्वरुप हम अपने स्वदेशी खेलों से दूर होते चले गयें। ब्रिटिश काल में खेल अत्यंत लोकप्रिय हुए परंतु हमारी पाठशालाओं एवं प्राथमिक स्तर की शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को वह महत्व नहीं मिल पाया जो अपेक्षित था। अंग्रेजों ने क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, जिमनास्टिक आदि खेलों को शुरू किया और उनके लिए प्रशिक्षण हेतु पूर्व सैनिकों की नियुक्ति भी की। भारतवर्ष कई सौ सालों से गुलामी झेल रहा था जिसके चलते अपने देशी क्रिया-कलाप हम भूलते चले गयें। 17 मार्च 1835 में विलियम वेटिंग ने इंग्लैंड जिम्नास्टिक पद्धति के अनुसार भारत में शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था की परन्तु उन्हें असफलता मिली। "भारतीय शिक्षा प्रणाली को नियमन में लाने के हेतु 1854 में वुड का घोषणा-पत्र जारी हुआ इस घोषणा पत्र में मैकाले द्वारा विद्यालय स्तर पर अपनाये गये शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम को शामिल किया गया।" (मोहन, पेज सं० 57.)

हण्टर आयोग 1882 द्वारा भारत में शारीरिक शिक्षा प्रणाली हेतु प्रयास किये गये जिसके माध्यम से बालकों एवं युवाओं ने शारीरिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। "ब्रिटिश काल में अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त खेलों का प्रचार-प्रसार तो बहुत हुआ परन्तु इस प्रकार की शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की योजना नहीं बनी जो शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का उचित प्रकार से क्रियान्वयन कर सकें।"(अटवाल,1987,पेज सं० 62-63.) अंग्रेजों ने 1894 में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयत्न किया किन्तु विरोध के चलते प्रयत्न असफल रहा। 1904 में लार्ड कर्जन ने शिक्षा नीति में व्यायाम को सम्मिलित कराया। "पंडित मदनमोहन मालवीय, हृदयनाथ कुंजरू और श्री बाजपई के प्रयासों के चलते 1913 में भारतीय लड़कों हेतु स्काउट गाइड गतिविधि प्रारम्भ हुई।"(सिंह,2018,पेज सं० 67.) परतंत्र भारत में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि 1920 में वाई० एम० सी० ए० का उदय होना है। इस संस्था के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम से मद्रास में शारीरिक शिक्षा-शिक्षकों हेतु सी० पी० एड० का कोर्स संचलित किया गया। 1930 में स्तानक किये हुए खिलाड़ियों हेतु डिप्लोमा इन फिजिकल एजूकेशन शुरू किया गया। धीरे-धीरे समय के साथ-साथ 1931 में राजकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय हैदराबाद, 1932 में कलकत्ता, 1932, 1938 मे लखनऊ एवं कान्दीवली इत्यादि महाविद्यालय स्थापित हुए जिन्होंने शारीरिक शिक्षा को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका अदा की, अंग्रेजों ने कार्यक्रम चलाकर, महाविद्यालय खोलकर, प्रशिक्षण देकर काफी हद तक कमियों को दूर किया, परन्तु अभी भी हम विश्व के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा स्वयं को पिछड़ा हुआ पाते थे।

स्वतंत्रता के पश्चात -

15 अगस्त 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजी दास्तां की बेड़ियों से मुक्त हो गया। भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से प्रगति करनी प्रारम्भ की। मनोरंजन एवं शारीरिक शिक्षा विकास हेतु अनेक योजनाएं बननी प्रारम्भ हुई- 1948 में शारीरिक शिक्षा समिति अथवा ताराचन्द समिति का गठन हुआ जिसमें शारीरिक शिक्षा के विकास के लिए अनेक अति-महत्वपूर्ण योजनाएं थी। भारतीय शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के विकास हेतु नव उदय हो चुका था। 1950 में शारीरिक शिक्षा तथा मनोरंजन केन्द्रीय बोर्ड की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य खेलों, शारीरिक शिक्षा, मनोरंजन एवं युवा वर्ग के लिए नये-नये कार्यक्रमों का उन्नयन करना था। 1951 में प्रथम एशियाई खेल हुए जिनका रंगारंग आयोजन नेशनल स्टेडियम नई दिल्ली में हुआ, जो भारत में खेलों के सूर्य उदय का स्वर्ण काल था। 1953 में राजकुमारी अमृत और कोचिंग स्कीम शुरू हुई जिसमें खिलाडियों को जीवन-चर्या हेतु स्कॉलरशिप दी गई जो खिलाडियों के उत्साहवर्धन हेतु स्वागत योग्य कदम था। सरकार एवं खेल संघों के मध्य एक कड़ी का काम करने के हेतु 1954 में अखिल भारतीय खेल परिषद का उदय हुआ, राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन योजना 1956 में प्रकाश में आयी जिसका कार्य स्वदेशी शारीरिक शिक्षा क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करना था। 1957 लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना जिसमें तीन वर्षीय स्नातक डिग्रीकोर्स एवं दो वर्षीय स्नाकोत्तर कोर्स भी शुरू किया गया। 1961 में कोचों के प्रशिक्षण हेतु NSNIS की स्थापना, 1965 में राष्ट्रीय स्वस्थता कौर, 1970-71 में ग्रामीण खेल, 1975 में महिला राष्ट्रीय खेल चैम्पियनशिप, 1982 में नौवे एशियाई खेल आयोजन, 1983 में भारत का क्रिकेट विश्व कप का सरताज बनना, 1984 में स्पोर्टस अर्थोटी ऑफ इण्डिया की स्थापना, राष्ट्रीय खेल 1985 आयोजन इत्यादि भारत में खेलों के क्षेत्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलीभूत करने में सफल रही। खेल स्कीमों के अतिरिक्त 1954 की राष्ट्रीय अनुशासन योजना, 1965 का राष्ट्रीय स्वस्थता कौर, 1969 राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास, युवाओं में राष्ट्र सेवा एवं मानवता का भाव उत्पन्न करना, देशभक्ति, सहनशीलता, आत्मविश्वास और आत्मसमर्पण की भावना को विकसित करना, प्रशासन एवं संगठन में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कराना इत्यादि प्रमुख उद्देश्य था। 1948 के एक्ट के अनुसार एन०सी०सी० को सम्पूर्ण भारत वर्ष में लागू किया गया। इसके अन्तर्गत जूनियर एवं सीनियर स्तर पर ड्रिल शस्त्र-प्रशिक्षण, शारीरिक प्रशिक्षण, पैदल चलना, मानचित्र पढ़ना इत्यादि प्रमुख है। क्रिकेट विश्व कप 1987,1996,2011,2023 आयोजन, हॉकी विश्व कप 1982,2010,2018 आयोजन एवं 1975 हॉकी विश्व विजेता बनना, ओलम्पिक में 1948,52,56,64,80 के हॉकी स्वर्ण पदक जीतना एवं 2008 ओलंपिक मे अभिनव बिन्द्रा ओर 2020 मे नीरज चोपड़ा के स्वर्ण इत्यादि भारत की खेलों में तरक्की का द्योतक रहे हैं।

विश्व स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का स्वरूप -

विश्व स्तर की बात की जाये तो प्रतीत होता है कि विश्व में शारीरिक शिक्षा की अवधारणा कोई नई नहीं हैं। विश्व में शारीरिक शिक्षा अलग-अलग ढंग से विकसित हुई प्रत्येक राष्ट्र ने अपने नागरिकों को स्वस्थ बनाऐ रखने के लिए अलग-अलग नियम बनाये जो शैन: शैन: शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का स्वरूप बने। वर्तमान वैज्ञानिक शारीरिक शिक्षा के लिए समूचा विश्व ग्रीक (यूनान) का हमेशा ऋणी रहेगा। विभिन्न स्थानों पर प्रचलित खेल-कूदों का उल्लेख इस बात को निर्दिष्ट करता है कि ग्रीकवासी खेलों में पूर्णतया लिप्त थे। "ग्रीक देश के पात्रों की वीरतापूर्ण कथाएं होमर की प्रसिद्ध रचनाओं इलियड और ओडिसी में मिलती है।"(शर्मा,2017,पेज सं० 74.)

ग्रीक राष्ट्र की अनेक रियासतों स्पार्टा, एथेन्स ने अपने पाठ्यक्रमों में युवकों के लिए शारीरिक शिक्षा पर अधिक बल दिया। स्पार्टा की विचारधारा थी कि देश रक्षा हेतु पत्थरों के विशाल दुर्ग नहीं अपितु नागरिकों के विशाल वक्षस्थल अधिक उपयोगी हैं। इन रियासतों में निर्बल व्यक्ति को जीने का कोई अधिकार नहीं था। बालक को सात वर्ष की आयु में माता-पिता से दूर कर दिया जाता था, उसे 20 वर्ष की आयु तक युद्ध कलाओं में पारंगत किया जाता था। 30 वर्ष की आयु के पश्चात ही विवाह की अनुमति मिलती थी। 60 वर्ष तक रियासत की सेवा करना अत्यंत आवश्यक था। एथेंन्स में नदियों के किनारे विधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए स्थानों की स्थापना होती थी। एथेन्स में बालकों को बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक एवं शारीरिक विकास की पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती थी। "खेलों के प्रति नागरिकों की रूचि को इस बात से भली प्रकार समझा जा सकता है कि 776 ई०पू० से ही ओलम्पिक खेलों का आयोजन सुचारू रूप से होने लगा था यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शारीरिक शिक्षा, खेल एवं मनोरंजन के विषय में सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करने वाला देश यूनान है।"(अटवाल ,1987,पेज सं० 19-23.)

रोम के नागरिक वीर एवं बलवान थे उनमें धर्म के प्रति निष्ठा और देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी। सात वर्ष की आयु से ही नैतिक, बौद्धिक एवं शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाता था। खुले मंचों पर खड़ग क्रियाएं, कुश्ती, तैरना, मुष्टियुद्ध, धूत-क्रीडा इत्यादि प्रमुख थे पूर्व रोम काल में जहां बलिष्ठ शरीर होने पर बल देते थे, वहीं उत्तर रोम काल में पब्लिक खेलों पर अधिक बल दिया गया इस काल में कीचड स्नान प्रचलन में था। "गेलन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शारीरिक क्रियाओं के दौरान पल्स की गणना की गेलन के इसी शोध के चलते शारीरिक चिकित्सा को उन्हीं की देन कहा जाता हैं।"(सिंह ,2018,पेज सं० 56.)

जब बात हम स्वीडन की करते हैं तो पाते है कि वहां का इतिहास वास्तव में गौरवशाली रहा है। अनेक राष्ट्रों में प्रचलित शारीरिक शिक्षा कहीं न कहीं स्वीडन जिम्नास्टिक से प्रभावित है। स्वीडिश पद्धति के जनक पी० एच० लिंग माने जाते हैं उन्होंने अनेक प्रयोगों से यह सिद्ध किया कि शारीरिक विकृतियों को दूर करने, शारीरिक बल एवं आरोग्यता बढ़ाने में व्यायाम अपनी अहम भूमिका रखते हैं। स्वीडन में वर्तमान समय में शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। व्यायाम के अतिरिक्त हैंडबाल, फुटबाल, तैराकी, वन विहार, बर्फ के खेल इत्यादि का पूर्ण प्रबन्ध है स्वीडन का राष्ट्रीय नारा "Gymnastic for all" है।

खेल क्रियाओं एवं खुले स्थानों पर व्यायाम में रूचि रखने वाले देशों में इंग्लैंड सर्वोपरि रहा है। ब्रिट्रिश लोगों का हमेशा विश्वास रहा है कि खेल व्यक्ति के चरित्र निर्माण और मानवीय सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने का एक सशक्त एवं सजीव माध्यम है। अंग्रेजों में शारीरिक शिक्षा का प्रचलन अत्यंत प्राचीन रहा है, हालांकि इन्होंने व्यायाम की किसी विशेष प्रणाली को नहीं अपनाया बल्कि तैराकी, फेंकने वाली क्रियाएं, तीरंदाजी आदि के माध्यम से मनोरंजन एवं व्यायाम को अपनाया। अनेक खेलों के नियम एवं उपनियम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाकर अंग्रेजों ने बहुत खेलों का नवीनीकरण किया। विश्व में खेलों की परम्परा निर्वहन करने का श्रेय इंग्लैंड को ही जाता है।

1865 में 'नार्थ अमेरिकन जिम्नास्टिक यूनियन' ने जन साधारण में शारीरिक शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया, सभी देशों की अपेक्षा नया देश होने के बावजूद सर्वांगीण क्षेत्रों में उनन्ति की है। बेसबाल, बास्केटबाल, गोल्फ इत्यादि खेल विश्व को अमेरिका की ही देन है। वर्तमान समय में खेलों की बात की जाये तो सबसे बड़े महाकुम्भ ओलम्पिक में अमेरिका प्रथम स्थान पर खड़ा हुआ है जो खेलों एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिका की उन्नति का द्योतक है।

रूस की बात करते हैं तो देखते हैं कि रूस जारशाही के अत्याचारों से पीडित था किसान एवं मजदूर अत्यंत कष्ट में थे एवं धनिक लोग भोग-विलास में जीवन व्यतीत कर रहे थे। ऐसे में वहाँ के लोगों को शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का कोई भान नहीं था। 1917 में रसियन क्रांति के उपरान्त वहां के लोगों ने शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के प्रति अपनी रुचि दिखाई और वर्तमान समय में खेल इनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। खेल जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में विद्यमान है वर्तमान समय में रूस खेलों के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।

भारत एवं विश्व स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का विश्लेषण -

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का अध्ययन करने के उपरान्त हम पाते हैं कि शारीरिक स्वस्थता, शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के क्षेत्र में जिस प्रकार अन्य राष्ट्रों ने निरन्तर प्रगति की है एवं अपने दैनिक दिनचर्या के अहम पलों में से कुछ पल निकालकर अपने मनोरंजन हेतु, अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाने हेतु, स्वयं को निरोग रखने हेतु, खेलों में आगे बढ़ने हेतु जिस प्रकार से स्वयं आगे बढ़कर शारीरिक शिक्षा एवं खेल-कूद को महत्त्व दिया गया है, उस प्रकार हम भारतीय स्वयं को आगे नहीं बढ़ा पाये हैं। अन्य देशों ने बहुत से खेलों एवं व्यायाम को अपनी संस्कृति एवं दैनिक दिनचर्या के रूप में अपनाया। परन्तु हम हमारी सांस्कृतिक विरासत खेल को छोड़कर भौतिकवादिता के जाल में स्वयं को फंसाते चले गये। विदेशी जहां अपने शारीरिक एवं मानसिक बल को शारीरिक शिक्षा से बढ़ाते गये वहीं हम निरन्तर ह्रास की ओर चलते गये। वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा सूचकांक 2021 के अनुसार हम 195 देशों में 66 वें स्थान पर है। विश्व स्वास्थ्य सुरक्षा (GHS) सूचकांक की स्कोरिंग प्रणाली में तीन स्तर शामिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। 0-33.3 निचले स्तर पर, 33.4-66.6 मध्यम एवं 66.7-100 शीर्ष स्तर है। भारत का स्कोर 42.8 है जो वर्ष 2019 की तुलना में 0.8 कम है। स्वास्थ्य का गिरता स्तर वास्तव में चिन्ताजनक है।

भारत ही नहीं अपितु विश्व के समस्त राष्ट्र Covid-19 जैसी महामारी से ग्रस्त रहे हैं। यह महामारी विश्व इतिहास की सबसे बड़ी मानव क्षति वाली बीमारी मानी जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि "कोरोना वायरस से बूढ़े, बच्चे, जवान सभी संक्रमित हो सकते हैं परन्तु अस्थमा, हृदयरोग एवं मधुमेह जैसी बीमारियों से ग्रसित लोगों में कोरोना संक्रमण का खतरा अधिक है।"(E-paper Amar Ujala,5 Feb 2020.) उक्त रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि स्वस्थ रहना अत्यन्त आवश्यक है। कोरोना ही नहीं वरन अन्य बहुत सारी बीमारियां निरन्तर मनुष्य को काल का ग्रास बना रही है। वर्तमान जीवन में सोशल मिडिया के बढ़ते प्रयोग के चलते एकांकीपन बढ़ गया है; यह एकांकीपन तनाव को बढ़ा रहा है जिसके परिणामस्वरूप छोटी-छोटी परेशानियां मानव को आत्महत्या की ओर अग्रसर कर रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार "हर आयु वर्ग के 20 प्रमुख कारणों से आत्महत्या भी एक है, विश्व में प्रत्येक 40 सेकेण्ड में कहीं न कहीं कोई व्यक्ति आत्म-हत्या करता है।"(Aajtak.in) विश्व स्वास्थ्य संगठन ने Global Recommendations on physical activity for health के माध्यम से सभी नागरिकों को आयु वर्ग में बाटकर उनके लिए आवश्यक व्यायाम और समय निर्धारण किये है ताकि बीमारियों से बचा जा सके। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की 2018 की रिपोर्ट में बताया गया कि "2018 में भारत में कुल 1 लाख 34 हजार 516 लोगों ने आत्महत्या की जिनमें से 23764 बीमारी से तंग थे।"(NCRB Report) यह आंकड़ा हमारी शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता को दर्शाने के लिए प्रर्याप्त है।

भारत एक बड़ी आबादी वाला एवं वर्तमान में विश्व में प्रथम स्थान पर है। हमारी जनसंख्या में वृद्धि विस्फोटक गति से हो रही है और जब बात खेलों एवं स्वास्थ्य की आती है तो हम बड़े-बड़े आयोजनों में बड़े-बड़े खेलकूद दलों के साथ भी स्वयं को अन्तिम कतार में खड़ा पाते हैं। हम खेलों को बढ़ावा देने हेतु प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को खेल दिवस तो मनाते हैं, परन्तु विश्व स्तर पर जब खेलों की बात आती है तो समूचा राष्ट्र हॉकी खेल के पदकों एवं अभिनव बिंद्रा और नीरज चोपड़ा के दो व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदकों के साथ स्वयं को ठगा सा महसूस करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समय मानव प्रगति का समय है। नित नये शोध होते हैं जो मानव की क्षमता, परिपक्वता, समझ इत्यादि में वृद्धि कर रहे हैं। खेलों में नित नये रिकॉर्ड बनते हैं और अल्प समय बाद टूट जाते हैं। प्रतियोगिता का स्तर और मानसिक दबाव खिलाड़ियों पर इस प्रकार हावी हैं कि खिताब जितने और स्वयं को समर्थ बनाने हेतु खिलाड़ी नशे का प्रयोग करते हैं। प्रतियोगिता में बने रहने के लिए सबसे आवश्यक है; शरीर एवं मन का समन्वय; वास्तव में देखा जाये तो इस समय भौतिकवादिता की होड में हम इस प्रकार दौड़ रहे हैं कि हमें अपने शरीर, अपने स्वास्थ्य के बारे सोचने का समय ही नहीं मिल पा रहा है। जीवन में तनाव, अशांति के आंकड़े दर्शाते हैं कि भारतीय शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबल नहीं हैं। भारत जैसे राष्ट्र में अगर देखें तो खेलों प्रति अरुचि, एक समान शिक्षा का अभाव, एक समान सुविधाएं न मिलना इत्यादि शारीरिक शिक्षा एवं मानसिक असंतुलन के लिए जिम्मेदार कारक हैं जो विश्व के अन्य विकसित एवं विकासशील देशों की कतार में हमें पीछे धकेल रहे हैं।

वर्तमान में शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का महत्व -

आधुनिकता की भागदौड़ में व्यक्ति अनावश्यक तनाव, धार्मिक रूढ़िवादिता, प्राकृतिक असंतुलन के चलते प्रदूषण, सांस्कृतिक एवं नैतिक पतन इत्यादि के कारण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर हो गया है। 19 वीं सदी खेलों, फिटनेस और शारीरिक शिक्षा क्रियाकलापों से भरपूर रही है। वर्तमान में आदर्श व्यक्ति की धारणा का उदय हुआ है। आदर्श व्यक्ति उसे माना गया है, जो प्रत्येक दृष्टि से फिट एवं स्वस्थ हो। 20वीं शताब्दी में शारीरिक शिक्षा पर इस प्रकार बल दिया गया कि शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य को एक आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाया जायें। स्कूली बच्चों के लिए खेल अनिवार्य एवं शारीरिक शिक्षा विषय के रूप में शामिल हो। आधुनिक शारीरिक शिक्षा और खेलों ने विश्व को एक्य रूप में पिरोया है, जिसके चलते विश्व स्तर पर मानव का अस्तित्व बचा रहा है। आज शारीरिक शिक्षा नई शारीरिक शिक्षा के रूप में 21वी सदीं में उभर कर सामने आयी हैं, जिसका महत्व केवल शारीरिक रूप से फिट ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विकास पर बल दिया गया है। भारत में शारीरिक शिक्षा की बात करते हैं तो स्पष्ट रूप से प्रमाण सामने आते हैं कि हमसें पहले की पीढ़ियां जिस प्रकार स्वास्थ्य का प्रतीक हुआ करती थीं आज वह स्वास्थ्य कहीं दिखाई नहीं देता है। केन्द्रीय मंत्री जनरल वी० के० सिंह और क्रिकेटर सुरेश रैना ने युवाओं एवं खिलाड़ियों पर बढ़ रहे मानसिक तनाव को लेकर चिन्ता व्यक्त की पहलवान रीतिका की आत्म हत्या के बाद अन्तराष्ट्रीय पहलवान योगेश्वर दत्त ने कहा "जीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हार खेल का हिस्सा है और किसी भी खिलाड़ी को इसकी वजह से ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए''(दैनिक जागरण, 2021) उच्च स्तर के एथलीटों जैसे-सौरभ गांगुली का लॉडर्स में टी-शर्ट लहराना, हरभजन सिंह का श्रीसंत को थप्पड़ मारना, मायक टायसन का दूसरे खिलाड़ी को दांतों से काटना, अनुचित तरीकों से विपक्षी खिलाडियों को चोट पहुंचाना इत्यादि मानसिक विकृति को दर्शाते हैं। वर्तमान में जिम के दौरान सीने कलाकार राजू श्रीवास्तव की मौत, सौरभ गांगुली जैसे खिलाड़ी को हृदय आघात आना, सुशांत राजपूत का आत्महत्या करना इत्यादि हमारी फिटनेस के स्तरों में कमी को कहीं न कहीं बयां करती है। भारत ने कई महीनों तक लॉक डाउन की स्थिति का सामना किया है वो सब बताने के लिए पर्याप्त है कि हमारा स्वास्थ्य स्तर उच्च श्रेणी का नहीं है। उचित व्यायाम, आहार, पोषण, दिनचर्या इत्यादि में कमी के चलते हमारा जीवन निरन्तर ढलान की ओर अग्रसर है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बदलाव की अहम आवश्यकता है ताकि उचित समय पर उचित कदम उठाये जा सकें और आने वाले भविष्य को खुशहाल किया जा सके। स्वयं को स्वस्थ एवं खेलों में अग्रणी बनाने हेतु आवश्यकता है कि बालक की नींव को मजबूत किया जाये उसे बाल्यवस्था से ही इस प्रकार शिक्षित किया जाये जिससे उसका सर्वांगीण विकास संभव हो एवं तीव्र गति से हो।

बालक के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यकता है ऐसी शिक्षा प्रणाली की जो समुचित हो और आवश्यकता है ऐसे शिक्षकों की जो कुशल संचलन के माध्यम से शिक्षा एवं शिक्षार्थी को उचित दशा एवं दिशा प्रदान कर सकें। ऐसे में एक मात्र शिक्षा प्रणाली जो सम्पूर्ण विकास करने मे सक्षम है 'शारीरिक शिक्षा' ही उचित विकल्प जान पड़ता है। आज आवश्यकता है कि शिक्षा प्राणाली में शारीरिक शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षक को उचित एवं सम्मानीय स्थान दिया जाये। क्योंकि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक विकास को प्रबल बनाने में सक्षम है और शारीरिक शिक्षा का सही एवं उचित प्रकार से क्रियान्वयन शिक्षक पर निर्भर करता है। विगत कुछ वर्षों में शारीरिक शिक्षा और योग विषय के अनुस्थापन ने इसे एक संभावित अनुशासन के रूप में इसे बदला है। ''शारीरिक शिक्षा विषय की नितियों एवं महत्ता को देखते हुए शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधन, विषय सामग्री एवं उचित कौशल की आवश्यकता है।''(Health and physical education guide) स्वतन्त्र भारत के पूर्व एवं पश्चात शिक्षा को नई दिशा देने हेतु शिक्षा प्राणालियों में अनेक सुधार हुए मैकाले शिक्षा योजना, वुड का घोषणा पत्र, हण्टर कमीशन इत्यादि सभी ने शारीरिक शिक्षा में प्रगति हेतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन किये। National plan and research 1956 में कहा गया है कि शारीरिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से दी जाती है। यह बालकों के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायता करती है। भारत में फिटनेस ओर शारीरिक गतिविधियों को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने के लिए 2019 मे फिट इंडिया प्रोग्राम शुरू किया। (युवा मामले एवं खेल मंत्रालय ,2022)

भारत की शिक्षा नीतियों मे शारीरिक शिक्षा -

कोठारी आयोग(1961-66) ने अपनी रिपोर्ट 29 जून 1967 में प्रस्तुत की; 9 माह पश्चात 5 अप्रैल 1967 को संसद सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया। 24 जुलाई 1968 को सरकार ने विधिवत घोषणा की कि केन्द्रीय बजट का 6 प्रतिशत शिक्षा पर व्यय किया जायेगा एवं छात्रों की शारीरिक फिटनेस ओर खेल कौशल में सुधार के उद्देशय से बड़े पैमाने पर खेल एवं क्रीडा का विकास किया जाएगा। 10+2+3 की शिक्षा संरचना जलवायु में ही प्रतिभावान छात्रों की पहचान कर उनको उनके विकास के उचित अवसर प्रदान किये जायेगें। सभी स्तरों पर स्वास्थ्य लाभ हेतु खेलकूद की उत्तम व्यवस्था की जायेगी और खिलाडियों को प्रात्साहन दिया जायेगा। 1986 की शिक्षा नीति में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में कई क्रांतिकारी परिवर्तन किये। उत्तम शिक्षा व्यवस्था हेतु केन्द्र, राज्य एवं जिले के अनुसार विभाजन किया गया। व्यवहारिक पक्ष एवं शारीरिक पक्ष पर बल देते हुए प्राथमिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को मुख्य स्थान दिया गया है ताकि बालक का सर्वांगीण विकास संभव हो।

अंतरिक्ष वैज्ञानिक के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट के आधार पर 29 जुलाई 2020 को नई शिक्षा नीति 2020 घोषित की गई जो 1968, 1986 एवं शिक्षा नीति के 1992 में हुए संशोधन के पश्चात देश की शिक्षा नीति में पहला परिवर्तन था। विगत शिक्षा नीतियों की तरह इस शिक्षा नीति में भी अच्छी शिक्षा व्यवस्था हेतु उचित प्रयास किये गये हैं। बचपन में प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा हेतु (ई सी सी ई Early childhood care and education) एवं बच्चों के लिए खेल आधारित और गतिविधि आधारित पढ़ाई होती है। कमेटी ने कहा कि छः वर्ष तक ही आयु तक बच्चों के दिमाग का 85 प्रतिशत संचयी विकास हो जाता है। नई शिक्षा नीति की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया। NEP-2020 के मुख्य उद्देश्यों में 2030 तक स्कूली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा में 100 प्रतिशत नामांकन अनुपात का लक्ष्य रखा गया है। अर्थात् सभी के लिए शिक्षा;नई शिक्षा नीति 5+3+3+4 वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव देता है जिसमें 3 से 18 वर्ष तक की आयु के बच्चों को शामिल करता है। 5 से अभिप्राय प्री प्राईमरी और ग्रेड़ 1,2,3 वर्ष का प्राइमरी स्तर एवं 3 वर्ष का माध्यमिक चरण ओर 4 वर्ष का 9,10,11,12. नई शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा पर बल देते हुए विद्यालयों में सभी स्तरों पर छात्रों को बागवानी, नियमित रूप से खेल-कूद, योग, नृत्य, मार्शल आर्ट इत्यादि का प्रशिक्षण स्थानीय उपलब्धता के अनुसार कराने पर ध्यान दिया गया है ताकि बच्चे व्यायाम एवं शारीरिक गतिविधियों में भाग ले।1 अप्रैल 2010 में भारतीय संसद द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 लागू किया जो छह वर्ष से चौदह वर्ष तक ही आयु के सभी बालकों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करने के लिए बनाया गया। संविधान के अनुच्छेद 21 A के अधीन रहते हुए बालको को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार दिये गये।

निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में विद्यालय के लिए मान एवं मानक दिये गये हैं जिनके अन्तर्गत खेल का मैदान और प्रत्येक कक्षा को खेल सामग्री, खेल एवं क्रीडा उपस्कर अपेक्षानुसार उपलब्ध कराये जाने हेतु कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के साथ शारीरिक शिक्षा एवं खेल की अनिवार्यता भी रखी गई है।

शारीरिक शिक्षकों का महत्त्व -

विभिन्न शिक्षा नीतियों एवं अधिनियमों के आधार पर जब बात करते हैं तो पाते है कि सरकारों ने खेल और शारीरिक शिक्षा को बढ़ाने पर बल दिया है परन्तु वास्तविकता की बात करें तो हकीकत कुछ और ही जान पड़ती है। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा और खेलों की बात आती है तो इसके क्रियान्वयन हेतु शारीरिक शिक्षकों की आवश्यकता चाहे वह किसी भी स्तर पर अध्यापन का कार्य कर रहा हो वह बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास अथवा सर्वांगीण विकास में अपनी महति भूमिका निर्वहन करता है। तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो अन्य विषय विशेषज्ञों की अपेक्षा शारीरिक शिक्षक को अधिक प्रतिभा की आवश्यकता होती है क्योकि उसका कार्य केवल कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नही होता अपितु खेल मैदान, सांस्कृतिक क्रिया-कलाप वाले कार्यक्रम कराना भी उसी के कार्य क्षेत्र में आता है। अन्य विषयों के अध्यापकों की धारणा यहां तक बन गई है कि अनुशासन का कार्यक्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अन्य कोई लेना नहीं चाहता है यह कार्य भी शारीरिक शिक्षा-शिक्षक को सौप दिया जाता है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक का कार्य तो सबसे अधिक है परन्तु मिलने वाली सुविधाएं अपर्याप्त है परिस्थितियां विपरीत होती है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक के कन्धों पर भारत के भविष्य नौनिहालों को सुदृढ, सबल, स्वस्थ ओर खेल के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के साथ -साथ उनके चहुँमुखी विकास की जिम्मेदारी भी होती है। वर्तमान समय में हम विश्व में जनसख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है और खेलों और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमारी असफलता जगजाहिर है। इस पिछडेपन का कारण सरकारों का खेलों एवं शारीरिक शिक्षा के प्रति ढुल-मुल रवैया, हमारे खुद के जिम्मेदारी निर्वहन करने के तरीके इत्यादि सब हैं। साथ-साथ बच्चों में बढ़ती ई-गेम की आदतें, खेलों का कम बजट, उपयुक्त उपकरणों का अभाव, प्राथमिक स्तर से खेल-संसाधनों का अभाव,खेलों का माहौल न बन पाना, बढ़ती नशे की आदतें, खेल समय का दुरूपयोग, योग्य प्रशिक्षकों की कमी इत्यादि सब हैं। सरकारों ने समय-समय पर इसके सुधार हेतु प्रयास किये हैं परन्तु वर्तमान को देखकर लगता है कि प्रयास कागजों पर तो हुए परन्तु क्रियान्वयन में हम पिछड़ गये। विभिन्न रिर्पोट, विभिन्न आंकड़े दर्शाते है कि हम शारीरिक व मानसिक रूप से सबल नहीं है। आत्महत्या के बढ़ते मामले, हमलावर होते एथलीट, नशे में पड़े एथलीट इत्यादि आंकडे डराने वाले हैं। डा० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा ने 25/02/2021 को पत्र जारी किया जिसमे सभी सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों को "उत्तर-प्रदेश में छात्रों में बढ़ रही आत्महत्या की दर के दृष्टिगत मनोवैज्ञानिक परामर्श दात्री समिति गठित किये जाने के निर्देश दिये गये।"(डा० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा,2021)

भारत देश में अगर हम देखते हैं तो पाते हैं कि शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के प्रति अरुचि, समान शिक्षा न मिल पाना, समान काम के लिए समान वेतन न मिलना, बढ़ता अस्वास्थ्य इत्यादि शारीरिक एवं मानसिक असंतुलन के लिए जिम्मेदार है। US Department of health service की रिपोर्ट के अनुसार व्यायाम करने एवं पौष्टिक भोजन खाने वाले लोगों के लिए स्वस्थ जीवन जीने के अवसर अधिक होते है।(US Department of health and human service 2008) बच्चों के गिरते स्वास्थ्य, तनाव, चिडचिडेपन, गिरते नैतिक स्तर इत्यादि समस्याओं के जड़ से निस्तारण हेतु हमें आवश्यकता है प्राइमरी स्तर से स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा देने की ताकि हम अपनी नींव को मजबूत कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समय में वहीं राष्ट्र की प्रगति की ओर अग्रसर है जिनमें शिक्षा के समान महत्व शारीरिक शिक्षा एवं खेलों को दिया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र की सच्ची संपदा उसके नागरिक है। स्वस्थ व्यक्ति ही उत्तम राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। विभिन्न विद्वानों ने शारीरिक शिक्षा के महत्व को पहचाना और महान दार्शनिक प्लेटों ने कहा कि क्रियाशीलता की कमी मानव की अच्छी दशा को नष्ट करती है जबकि गति एवं क्रमबद्ध रूप से किया गया प्रयास मनुष्य को उन्नति की ओर अग्रसर करता है। शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलों को प्रत्येक स्तर बढ़ावा देने हेतु शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शारीरिक शिक्षा शिक्षक की आवश्यकता है।

शारीरिक शिक्षा अनुदेशक -

जब हम भारत राष्ट्र की बात करते हैं तो हम पाते हैं कि प्राचीन काल से ही भारत में गुरुकुल परंपरा रही है। गुरुकुलों के आचार्यों-गुरु वशिष्ट, गुरु द्रोण ने अपने शिष्यों को सम्पूर्ण शिक्षा से परिपूर्ण किया एवं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को प्रकाशवान करने वाले महापुरुष तैयार किए। वर्तमान समय में स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बात की जाएं तो रिपोर्ट के अनुसार व्यायाम करने एवं पौष्टिक भोजन खाने वाले लोगों के लिए समस्त जीवन जीने के अवसर अधिक होते हैं बच्चों के गिरते स्वास्थ्य, तनाव, चिड़चिड़ापन गिरते नैतिक मूल्य, गिरते चारित्रिक मूल्य इत्यादि समस्याओं को जड़ से निस्तारण करने हेतु हमें आवश्यकता है कि हम बच्चों की नींव को मजबूत करें। हमें आवश्यकता है की बच्चों के संपूर्ण विकास हेतु उसके जीवन के नैतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु उसे प्राथमिक स्तर से ही शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य संवर्धन हेतु शिक्षा दी जाए। उत्तर प्रदेश में 45000 से अधिक उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। उपरोक्त समस्याओं के निवारण हेतु व बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु वर्ष 2013 में तत्कालीन राज्य सरकार ने कक्षा 6 से 8 वाले परिषदीय जूनियर हाई स्कूलों में शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की नियुक्ति हेतु कार्यक्रम जारी किया। अनुदेशक पूर्णतय: अंशकालिक आधार पर रखे गए थे। अनुदेशकों से तात्पर्य अनुदेश या निर्देश देने वाला और अनुदेशक जब शारीरिक शिक्षा का हो तो अर्थ और भी व्यापक हो जाता है। बालक के सर्वांगीण विकास हेतु उसे अनुदेश कार्य विधि समझा कर शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलो और सामाजिक जीवन जीने के तरीकों का संपूर्ण ज्ञान देना होता है। शारीरिक शिक्षा विषय के विद्वानों, खिलाड़ियों इत्यादि के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय था। खेल सामान हेतु ₹ 10000(दस हजार) प्रति वर्ष राशि राज्य सरकार के माध्यम से प्रधानाध्यापक को आवंटित की जाती है। एक और जहां हम बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शारीरिक एवं मानसिक के साथ-साथ सर्वांगीण विकास की बात कर रहे थे वहीं अनुदेशकों की नियुक्ति करते समय 100 से कम छात्रों की संख्या वाले स्कूलों के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार ने कोई योजना नहीं सुझाई। जिन विद्यालयों में छात्रों की संख्या 100 से अधिक थी उन में अनुदेशकों की नियुक्ति के निर्देश जारी किए गए। अनुदेशकों का वेतनमान ₹ 7000 प्रति माह(11 माह हेतु) निर्धारित किया गया। अनुदेशकों को नियुक्ति के समय कार्य संबंधी अनेक निर्देश एवं दायित्व दिए गए थे। अनुदेशकों की योग्यता का स्तर बीपीएड (बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन) रखा गया था। दिए गए उद्देश्यों के अनुरूप अनुदेशकों की नियुक्ति बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व को निखारने शारीरिक एवं मानसिक स्तर स्वास्थ्य एवं खेलों में शिखर तक ले जाने इत्यादि की पूर्ति हेतु की गई थी। अनुदेशको हेतु कार्य एवं दायित्व इस प्रकार दिए गये थें-

1.विषय का सैद्धांतिक ज्ञान देने हेतु कक्षा शिक्षण करना।

2. प्रार्थना स्थल की गतिविधियों को सुचारू रूप संचालन करना।

3. सामूहिक रूप से बच्चों का शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के महत्व से अवगत कराना।

4. व्यायाम योग व प्राणायाम की जानकारी कराना। प्रतिदिन इनका अभ्यास कराना।

5. प्रार्थना के समय नैतिक प्रसंगों के प्रस्तुतीकरण के साथ पीटी करवाना।

6. राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत व राष्ट्रीय प्रतीकों का ज्ञान कराना।

7. नशीले पदार्थों से होने वाली हानियों से बच्चों का परिचित कराकर उन्हें इनके सेवन न करने के प्रति जागरूक करना।

8. पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न खेलों जैसे कबड्डी, खो-खो, हॉकी, बॉलीबॉल,

फुटबाल टेबल टेनिस, बैडमिंटन, बास्केटबाल की जानकारी कराई जाए साथ ही

समय-समय पर इन्हें खिलाया जाएं।

9. बच्चे की रुचि, क्षमता के अनुसार बच्चों का विभिन्न खेलों के लिए चिन्हित किया जाए तथा उन्हें ब्लॉक, जनपद व मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु उचित रूप से प्रशिक्षण दिया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10. विद्यालय में समय-समय पर खेल व पीटी, योग आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत करना।

11. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का नियमित परीक्षण करना तथा उन्हें अच्छी आदतों हेतु प्रेरित करना।

12. विभिन्न प्रकार की दौड, ऊँची और लंबी कूद, गोला फेंक, डिस्कस फेंक का आयोजन करना एवं बच्चों को इनका नियमित अभ्यास कराना।

13. अनुशासन, खेल भावना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाना, नेतृत्व क्षमता का विकास करना एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं की बच्चों की जानकारी कराना।

शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ छात्र ही सही अर्थों में राष्ट्र की पूजी होते हैं। शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। राज्य में खेलों को प्रोत्साहन देने बालकों में स्वास्थ्य की उत्तम आदतों का विकास करने क्षमता एवं दक्षता के धनी बालकों को खेलों में आगे बढ़ावा देने के उद्देश्य से शारीरिक शिक्षा व स्वास्थ्य हेतु अनुदेशकों की नियुक्ति उच्च प्राथमिक स्कूलों में की गई है। इन कार्यों एवं दायित्व को देखते हुए ₹ 7000 प्रति माह मानदेय 'ऊंट के मुंह में जीरा' वाली कहावत को चरितार्थ करता था। अपने विकासखंड में स्कूल ने मिलने पर चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्ति घर से 40 से 50 किलोमीटर के दायरे में कर दी गई। ₹ 7000 वेतन और घर से दूर नियुक्ति वास्तव में अनुदेशकों के सामने परिवार के भरण पोषण का संकट खड़ा कर रही है।

खेल उपलब्धियां (Sports achievements)-

खेल हमारे जीवन का हिस्सा रहा है क्योंकि हम प्राचीन समय से ही खेल को अनुशासन एवं मनोरंजन के रूप में देखते हैं। खेल हमारे कार्यों में निरंतरता लाता है। खेल हमारी एकाग्रता के स्तर को बढ़ाकर हमारे मस्तिष्क को सकारात्मकता से भरता है। भारतीय खिलाड़ी खेलों में बहुत रुचि रखते हैं और देश को पदक और गौरव दिलाने के लिये कड़ी मेहनत कर रहे हैं। आजकल ग्रामीण लोगों को भी अवसर मिल रहे हैं और वे खेल के महत्व को जानकर अपने विशिष्ट खेल क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। खेल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत ही जरुरी माने जाते हैं। स्वास्थ्य के लिए भी खेल और व्यायाम अत्यन्त आवश्यक है। खेलो में उपलब्धि से तात्पर्य क्षमता या प्राप्ति के मापन से है जो प्रगति या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पूर्ण लक्ष्य को दर्शाता है। खेलो में उपलब्धि एकल या टीम प्रतिभाग, पदक जीतने, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने इत्यादि से ज्ञात होती है।

खेल संसाधन (Sports resources)-

शारीरिक शिक्षा के लिए खेल के मैदान और स्विमिंग पूल, कक्षा-कक्ष तक सुविधाओं की आवश्यकता होती है, कक्षा फर्नीचर, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय और यहां तक कि हॉल को शारीरिक शिक्षा के लिए आवश्यक सुविधाओं के रूप में स्वीकार किया जाता है। विभिन्न प्रकार के खेलों के लिए कुछ तैयारी और विचार की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन एक बार बना प्रारूप और तैयार कर लेने पर उन्हें विभिन्न विद्यार्थियों के साथ बार-बार प्रयोग में लाया जा सकता है। खेलो में खेल संसाधन से तात्पर्य खेल के लिए प्रयोग होने वाले-खेल मैदान, प्रयुक्त उपकरण, वेष-भूषा, खेलो के लिए उपयुक्त स्थान, समय, मौसम इत्यादि से है। सुविधाओं और बुनियादी ढांचे को किसी संस्थान को अपने मिशन को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आवश्यक सभी भूमि, भवन और उपकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सभी संस्थानों को ऐसा वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता है जो उनके संगठन के लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करें। खेलों को बढ़ावा देने एवं खिलाड़ियों के प्रदर्शन को उत्कृष्ट बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि उनको खेलों के लिए उपयुक्त संसाधन मुहैया कराए जाएं। संसाधनों का अभाव खेलों में उभरती हुई प्रतिभा को निखरने से रोकता है। खेल संसाधनों की आवश्यकता एवं उपयोगिता को देखते हुए आवश्यक है कि प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक खेल हेतु आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएं।

कार्य संतुष्टि (Job satisfaction)-

कार्य संतुष्टि का अर्थ व्यावसायिक कार्य से प्राप्त होने वाली संतुष्टि से है जो व्यक्ति को उसके मौलिक एवं प्राकृतिक अवस्थाओं से मिलती हैं। प्रत्येक कार्य के लिए कार्य संतुष्टि परम आवश्यक है। कार्य संतुष्टि से कार्य में निरंतर बनी रहती है। व्यक्ति पूर्ण रुचि के साथ अपना कार्य करता है। यह कहना कठिन होता है कि व्यक्ति यदि संतुष्ट है तो वह अपने कार्य संतुष्टि के चरम पर है। कोई व्यक्ति एक ही समय में संतुष्ट व असंतुष्ट दोनों हो सकता है क्योंकि मनुष्य की इच्छाएं अनंत होती है और असंतुष्ट होना इस बात का द्योतक है की वर्तमान परिस्थितियों में वह कार्य संतुष्टि अनुभव नहीं करता है। कार्य संतुष्टि को मुख्य रूप से दो प्रकार के घटक प्रभावित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1-व्यक्तिगत घटक जिनके अंतर्गत लिंग भेद, आयु, बुद्धि, अनुभव एवं मनोवृति आते हैं।

2-कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले दूसरे प्रकार के घटक में मुख्यतः कार्य संबंधी तत्व होते हैं जैसे वेतन, सुरक्षा, एवं स्थास्तित्व मान्यता कार्य की दशाएं नियोक्ता से अपेक्षाएं व प्रबंध वर्ग द्वारा किए जाने वाला पर्यवेक्षण।

कर्मचारी कार्य के संबंध में क्या अनुभव करता है इसका प्रभाव उसके द्वारा कार्य के लिए किए गए प्रयत्न पर पड़ता है।

समस्या कथन (Statement of the Problem)-

प्रस्तुत शोध अध्ययन सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन पर किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध समस्या अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियां देखना।
2. सहारनपुर मंडल स्थित जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल संसाधनों की जानकारी प्राप्त करना।
3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
4. शारीरिक शिक्षा विषय की उपेक्षा पर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित कराना।
5. मजबूत एवं स्वस्थ व्यक्तित्व विकास हेतु सरकार को सुझाव प्रदान करना।

परिकल्पना (Hypothesis)-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परिकल्पनाएं इस प्रकार बनाई गई।-

1. सहारनपुर मंडल के अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक विद्यालयों के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियों में संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक वाले जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल संसाधनों के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।
3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।
4. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि स्कोर संभवत: पुरुष अनुदेशकों से अधिक होगा।

अध्ययन का महत्व (Significance of the study)-

1. शोध द्वारा प्रयुक्त चरों का उपयोग आगामी योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सकता है।
2. यह अध्ययन उच्च प्राथमिक विद्यालयों में खेलों के लिए बुनियादी ढांचे और सुविधाएं जानने तथा सुधारने में सहायक होगा।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम विद्यालयों में प्रचलित शारीरिक शिक्षा प्रणाली एवं खेल गतिविधियों के कार्यक्रम में परिवर्तन की सिफारिश करता हैं।
4. यह अध्ययन शारीरिक शिक्षा और खेल को लोकप्रिय बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।
5. यह अध्ययन बीपीएड डिग्री धारकों को रोजगारपरक एवं अधिक कार्यकुशल बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोध की सीमांए-

शोधार्थी द्वारा शोध कार्य के दौरान कुछ ऐसी भी परिस्थितियाँ होती है जिन पर शोधार्थी का नियंत्रण नही रह पाता है जो शोध कार्य की प्रकृति को प्रभावित कर सकती है। ऐसी परिस्थितियों को सीमाओं के अंतर्गत रखा जाता है अतः शोधार्थी के लिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इस प्रकार के चरों से उत्तपन्न दशा पर नियंत्रण रखा जाएं।

1. बच्चों का खानपान एवं दैनिक क्रियाकलाप।
2. बच्चों का पूर्व प्रशिक्षण।
3. बच्चों का सामाजिक एवं आर्थिक आधार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों का सामाजिक एवं आर्थिक आधार।
5. अनुदेशकों की आयु एवं स्वास्थ्य।
6. अनुदेशकों की अपने कार्य प्रति निष्ठा।

शोध की परिसीमाएं-

किसी भी शोध कार्य को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने के लिए, एक निश्चित क्षेत्र निर्धारित करना अति आवश्यक होता है जिससे अध्ययन कार्य शोधार्थी के नियंत्रण मे रहे।

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे भी शोध कार्य को शोधार्थी के नियंत्रण मे रखने के लिए परिसीमा निर्धारित की गई थी।

1. सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले समस्त परिषदीय जूनियर हाई स्कूल। [नोट -जूनियर हाई स्कूल से अभिप्राय परिषदीय स्कूलों से है जिन्हे अब एक नाम "उच्च प्राथमिक विधालय के नाम से जाना जाएगा (E jagran,2020)]
2. खेल उपलब्धियां के अंतर्गत मंडलीय स्तर पर प्रतिभागी छात्र-छात्राएं।
3. चर के रूप में खेल उपलब्धियां परिसीमाओं के अंतर्गत हैं।
4. खेल संसाधन इस शोध की परिसीमा है।
5. अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

साहित्य अध्ययन

साहित्य सर्वेक्षण शोध की रीढ़ होता है साहित्य सर्वेक्षण से ही शोध की दिशा एवं दशा निश्चित होती है। साहित्य का अध्ययन मानव के विकास की ओर अग्रसर होने में उसका संचित ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान, पठन-पाठन से अर्जित ज्ञान इत्यादि अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। मानव अपने ज्ञान को तीन चरणों में रखता है; ज्ञान को एकत्र करता है उसमें वृद्धि करता है और उसको दूसरों तक पहुंचाता है। प्रत्येक विषय के विकास में आवश्यक है कि विषय सम्बन्धी जो सिद्धान्त हैं उनसे शोधकर्ता भलि-भांति परिचित हो। अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है। मानव की ज्ञान रूपी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही ज्ञान की अविरल धारा इस पृथ्वी पर बह रही है। मानव की ज्ञान तृष्णा कभी न समाप्त होने वाली हैं-क्या, कब, कैसे ये प्रश्न सदैव बने रहे हैं और बने रहेगें। मानव के अस्तित्व में होने की प्रामाणिकता के संबन्ध में देकार्ते ने कहा है क्योंकि में सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ। मानव मन, अनुभवों एवं अनुसंधान विधियां से जुड़े ज्ञान के अध्ययन हेतु विशेष परियोजनाएं बनानी पड़ती हैं क्योंकि इस ज्ञान को वैज्ञानिक रूप देना पड़ता है। खेल मानव सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। पूर्व में अनेक उच्च कोटि के विद्वतजनों ने शारीरिक शिक्षा सम्बन्धी क्रियाविधियों का बच्चों की शारीरिक स्वस्थता, खेल उपब्धियां, समान काम समान वेतन, अध्यापकों के व्यवहार का अध्ययन इत्यादि किये गये हैं। शोधकर्ता के मार्ग को प्रशस्त करने एवं शोधकार्य के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु सम्बन्धित साहित्य का अत्यधिक महत्व है।

प्रस्तुत शोध सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन हेतु किए गये साहित्य अध्ययन के बारे मे निम्नलिखित वर्णित किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

1. शोध समस्या के स्वरूप का स्पष्ट रूप से आंकलन करने में सहायता करता है।
2. प्रस्तुत शोध समस्या से सम्बधित विभिन्न चरों जिनका समावेश शोध के अन्तर्गत करना है उनकी जानकारी कराता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. शोध समस्या के व्यापक क्षेत्र को उचित प्रकार से ज्ञात करना।
4. शोध प्रबंध की विधि निर्धारण करने हेतु।
5. शोध समस्या से संबद्ध अनेक तथ्यों की पुनरावृत्ति को रोकने में सहायक।
6. विभिन्न चरणों का निर्धारण करने में सहायक।
7. शोधार्थी की अन्तदृष्टि के विकास हेतु।

सम्बंधित साहित्य अध्ययन के लाभ

1. शोध कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है।
2. समस्या सम्बन्धी जो कार्य हो चुके हैं उनको ज्ञात कर सूचना प्राप्त होती है।
3. शोध कार्य में होने वाले सम्भावित दोषों से मुक्ति।
4. समय की बचत होती है।
5. सिद्धान्तों का उचित प्रकार से स्पष्टीकरण होता है।
6. विषय का स्पष्ट ज्ञान होता है कि कौन से क्षेत्र पर कौन-सा अनुसंधान नहीं हुआ है।
7. अध्ययन प्रणाली में सुधार आता है।
8. समस्या के चयन एवं विश्लेषण करने में सहायता मिलती है।
9. शोध सम्बन्धी परिकल्पनाएं बनाने में सहायता मिलती है।

अमर उजाला (2023) प्रकाशित सिटी रिपोर्टर की रिपोर्ट "विश्ववविधालय के 4 परिसरों में से 3 में खेल सुविधाओं का अभाव" के अनुसार वर्ष 2017 में नैक मूल्यांकन टीम ने डॉ० भीम राव आंबेडकर विश्ववविधालय आगरा में खेल सुविधाओं को बढ़ाने के लिए सुझाव दिया था परंतु विगत 6 वर्षों में खेल सुविधाएं जस की तस बनी हुई है। केवल एक परिसर में शारीरिक शिक्षा एवं खेल कूद विभाग है बाकी के परिसर खेल सुविधाओं से अछूते है, बाग फरजाना परिसर में तरणताल है परंतु उसका उदघाटन तक नहीं हुआ है न ही कभी कोई छात्र उसमें उतरा है। बैडमिंटन कोर्ट है मगर वह मानकों के अनुरूप नहीं है ओर ताला लटका हुआ है। विजन 2023 के लिए विधार्थी खेल सुविधाओं को विकसित करने की मांग कर रहे है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Prabhat Khabar, E-paper (2022) में प्रकाशित खबर के अनुसार झारखंड राज्य के सभी विधालयों में खेल शिक्षक का पद तक सृजित नहीं है, प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल, इंटर स्कूलों में से केवल हाई स्कूलों मे ही शारीरिक शिक्षकों के पद स्वीकृत है। प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार राज्य के कुल 35438 स्कूलों में से 16954 के पास खेल के मैदान तक नहीं हैं ओर केवल 648 स्कूलों में शारीरिक शिक्षक नियुक्त हैं। स्कूली बच्चों को खेल की सामान्य जानकारी तक भी नहीं हैं।

गुप्त तरुण (2019) इन्होंने बताया कि खेल मानव सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। जब हम खेल से संबन्धित ढांचे की बात विकसित देशो के मानदंडों पर करते हैं तो खुद एवं विकसित देशों की खेल सुविधाओं के बीच गहरी खाई पाते है। प्रशिक्षण उपकरण, खेल मैदान, प्रतिस्पर्धा, शारीरिक-मानसिक स्वस्थता एव देखभाल के अतिरिक्त पोषण एवं अन्य खस्ताहाल खेल सुविधाएं हमारी खेलो में कमजोरी को बयां करती है। सरकार से मिलने वाली सुविधाएं भी कुछ प्रमुख खेल केंद्रों तक सिमट कर रह गयी है। मुख्यालयों से दूर के केंद्र और समाज के विभिन्न तबके सरकार द्वारा दी जाने वाली इन खेल संसाधनों एवं सुविधाओं से अभी तक वंचित है।

पटेल सुशीला देवी (2018) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" था। शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि जानने के लिए किया गया था इसके अंतर्गत 100 शिक्षक, 100 शिक्षिकाएं एवं 100 शिक्षामित्रों का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। शोध कार्य हेतु नमूना रायबरेली जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा शिक्षामित्रों को लिया गया। शोध उपरांत प्राप्त परिणामो के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं शिक्षामित्रो की व्यवसयिक संतुष्टि का स्तर अलग-अलग है। जहाँ शिक्षक एवं शिक्षिकाएं अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति सतुष्ट है वहीं शिक्षामित्र शिक्षको एवं शिक्षिकाओं के समान वेतन न मिलने के कारण व्यवसायिक असंतोष को दर्शाते है।

E Jagran (2018) में बताया गया कि अंधारठाढी प्रखण्ड, मधुबनी बिहार में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है परंतु सरकारी स्कूलों मे खेल प्रतिभाएं संसाधनों के अभाव में दम तोड़ रही है। कई स्कूलों मे खेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मैदान ही उपलब्ध नहीं हैं, जहां मैदान है वहाँ बुनियादी सुविधाओं एवं जागरूकता का अभाव है। कार्यरत एक शिक्षक ने बताया कि स्कूल में लगभग 500 बच्चें हैं, कुछ बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं मगर खेल के नाम पर कोई सरकारी सहायता प्राप्त नहीं हैं। क्रिकेट से जुड़े खिलाड़ी ने बताया कि भारत विश्व स्तर पर खेलों में अति पिछड़ा हुआ है जिसका प्रमुख कारण विधालयों में खेल सुविधाओं का अभाव है, सरकार को चाहिए कि विधालयों में शिक्षा की भांति खेलकूद को भी अनिवार्य अंग के रूप में लागू किया जाए।

हक एण्ड हसनानीम (2017) द्वारा अपने शोध विषय "लेवल ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ स्कूल टीचर्स इन प्राइवेट सेक्टर बहालपुर" पर शोध कार्य के लिए 105 निजी विद्यालयों के शिक्षको पर अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राइवेट सेक्टर मे कार्यरत शिक्षको की कार्य संतुष्टि देखना था। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होने पाया कि शिक्षको की कार्य संतुष्टि को विद्यालय जलवायु की अपेक्षा वेतन एवं कार्यभार, अधिक प्रभावित करता है।

Sopanaru, Bojan et al. (2017) ने अपने शोध अध्ययन "Stress factor and quality of life adult haemodialysis patient" मे बताया कि शारीरिक स्वस्थता पर तनाव अपना नकारात्मक प्रभाव डालता है, इसलिए स्कूल शिक्षा में शारीरिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है।

Monika, Haga (2016) द्वारा अपने शोध विषय "Motor Skill Development in Italian Pre-School Children Induced by Structured Activities. in a specific Playground" में पाँच वर्ष के बच्चों में मोटर कौशल योग्यता की जांच के लिए शोध किया गया। उत्तरी इटली में किये गये इस शोध में विषय के रूप में 71 बच्चों को लिया गया जिन्हे खेल मैदान में संरचित एवं असंरचित दोनो प्रकार की खेल गतिविधियां करायी गई। मोटर स्किल का आंकलन करने हेतु बच्चों को तीन फाइन एवं छह ग्रासमोटर स्किल करायी गई। 29 बच्चें जो मैदान मे नहीं आ रहे थे उनको नियन्त्रण ग्रुप के रूप मे रखा गया। 10 सप्ताह तक प्रति सप्ताह 1 घंटे के नियमित अभ्यास के बाद प्राप्त परिणाम के अध्ययन में पाया गया कि यह अभ्यास मोटर कौशल में सकरात्मकता लाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NCERT (2016) में अध्यापकों के लिए दिशा-निर्देश दिए कि व्यक्तिगत एवं टीम के विभिन्न कौशलों को सिखाने के लिए शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि कक्षा की अवधि 45 मिनट एवं प्रत्येक वर्ग के लिए पर्याप्त गुणवत्ता वाली आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो।

Health and physical education guide for 6th (2016) में बताया गया कि शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य में शिक्षक का कुशल संचलन ही महत्वपूर्ण भूमिका निवर्हन करता है। बीते कुछ वर्षों में शारीरिक शिक्षा एवं योग के अनुस्थापन ने इसे एक समन्वित अनुशासन के रूप में बदल दिया है। शारीरिक शिक्षा विषय की नीतियों एवं महत्व को देखते हुए शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को क्षेत्र की आवश्यकता की पूर्ति हेतु संसाधन एवं विषय सामग्री एवं उचित कौशल की आवश्यकता है।

राय, जम्पा, वेनकता, चन्द्र, रामा (2015) द्वारा किए गये शोध कार्य विषय "Job satisfaction among secondary schools teachers" नामक अध्ययन में इन्होने माध्यमिक स्कूल के शिक्षको पर अपना अध्ययन किया। वर्णनात्मक शोध विधि के माध्यम से किये गये इस शोध कार्य में विजयवाडा शहर स्थित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत 200 शिक्षको को यादृच्छिक न्यायदर्श विधि (Random Sampling Technique) के माध्यम से चयन किया गया। शोध सांख्यिकी में मानक विचलन पद्धतियों एवं टी-परीक्षण का उपयोग किया गया प्राप्त आंकडो के आधार पर परिणाम में पाया गया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयो के शिक्षको की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं। सरकारी विद्यालय के शिक्षक निजी विद्यालय के शिक्षको की तुलना मे जेन्डर,आयु एवं प्रबंधन को लेकर अधिक संतुष्ट पाये गये।

बिड़ीयानी, आई. एम. (2015) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हॉयर सैन्डरी स्कूल टीचर्स" नामक अध्ययन में सौराष्ट्र के उच्च्व माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षको की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया। अध्ययन हेतु 285 शिक्षकों का चयन सर्वेक्षण विधि से किया गया। अध्ययन शिक्षकों के सेक्स , आयु एवं संकाय के सन्दर्भ मे किया गया। टी-टेस्ट (ANOVA) के प्रयोग से विश्लेषण के उपरान्त पाया गया कि निजी विद्यालय के शिक्षकों में अपने कार्य के प्रति कार्य संतुष्टि में कमी पायी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलिगोरवीस बोझाना, ग्रीक एदित एवं गुलयूसेस ड्रेगना (2014) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड जेंडर डिफरेन्सेज ऑफ टीचर्स इन सर्वियाई" रखा गया। शोध के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षको की पदोन्नति, पर्यवेक्षण, आकस्मिक पुरस्कार, संचालन प्रक्रियाओं, सह कार्यकर्ता, कार्य की प्रकृति इत्यादि कारको को लेकर उनकी कार्य - सतुष्टि का अध्ययन किया। अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकडों के आधार पर यह पाया कि महिला शिक्षक अपने कार्य के प्रति पुरुषों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पायी गई। पुरुष शिक्षको में असंतोष का मुख्य कारण वेतन लाभ और संचालन प्रक्रियाओं को मुख्य माना गया। पर्यवेक्षण और कार्य की प्रकृति में लिंग-भेद का अन्तर पाया गया।

Pemoen, Hoggard and Peters (2014) ने अपने शोध अध्ययन मे बताया कि ऐथलीट को उसके खेल में शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबल बनाने एवं प्रदर्शन को बेहतर बनाने हेतु कोच की आवश्यकता होती है जो उसे प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन देता है।

Singh, Dr. Priyanka (2013) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Study of Sports Infrastructures and Facilities in Schools and colleges of Purvanchal" था जिसका उद्देश्य पूर्वाञ्चल के सरकारी स्कूलों एवं प्राइवेट स्कूलों के मध्य खेल संसाधनों एवं खेल सुविधाओं को देखना था। शोध अध्ययन के उपरांत इन्होंने पाया कि खेल अवसंरचना से संबंधित सुविधाएं जैसे बैडमिंटन कोर्ट, कबड्डी कोर्ट, खो-खो कोर्ट, स्विमिंग पूल, टेबल टेनिस, बहुउद्देशीय व्यायाम शाला, खेल अवसंरचन विकास समिति, खेल उपकरण स्टोर रूम उपलब्धता, पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता, स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला, आउटडोर खेल मैदान दोनों स्कूलों में लगभग एक समान पाए गए उनकी उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एथलेटिक ट्रैक, शारीरिक शिक्षा गतिविधियों एवं कक्षा-कक्ष शिक्षण के मध्य उचित अनुपात, लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम, ग्राउंड्स मैन उपलब्धता, खेल उपकरण सुविधा इत्यादि सरकारी स्कूलों में प्राइवेट स्कूलों में सार्थक अन्तर पाया गया। शारीरिक शिक्षा शिक्षक शिक्षकों की योग्यता, शारीरिक स्वस्थता परीक्षण, खेलने की सुविधा, बच्चों और स्टाफ का एक साथ खेलने की सुविधा, खेल की फीस, कोचिंग कैंप, इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्राइवेट एजेंसी का खेल को संचालित करना इत्यादि में प्राइवेट और सरकारी स्कूलों के मध्य कोई सार्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर नहीं पाया गया। स्टाफ की सैलरी देने में सरकारी और प्राइवेट स्कूल के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

Subhdhi (2013) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Job satisfaction of teacher educator in relation of their attitude towards teaching" था जिसमें सैकेंडरी स्कूल अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि पर शोध किया गया। शोध परिणाम यह दर्शाता है कि महिला अध्यापिका पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अपनी नौकरी से अधिक सन्तुष्ट है। साथ ही साथ यह शोध दर्शाता है कि 22 से 35 आयु वर्ग के अध्यापक 36 से 55 आयु वर्ग के अध्यापकों से अधिक संतुष्ट पाये गये।

Brian T. Gearity (2011) ने "Athletes experiences of the psychological effects of poor coaching" नामक शोध अध्ययन किया अध्ययन का उद्देश्य कॉलेज स्तर, पेशेवर और अर्ध-पेशेवर एथलीटों द्वारा रिपोर्ट की गई खराब कोचिंग के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का वर्णन करना था। इस शोध हेतु नमूने के तौर पर 16 एथलीटों का चयन किया गया। सभी प्रतिभागियों को खराब कोचिंग के अपने अनुभवों का वर्णन करने के लिए कहा गया। सभी प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड किया गया, प्रतिलेखित किया गया, और प्राप्त ऑकड़ों एक श्रृंखला के माध्यम से विश्लेषण किया गया, जिससे पांच विषयों की पहचान हुई जो खराब कोचिंग के साथ एथलीटों के अनुभवों को बताते हैं। एथलीटों द्वारा दिए गये प्रति-उत्तरों के आधार पर बनी रिपोर्ट में पांच विषय थे - कोच द्वारा खराब शिक्षण, लापरवाही, अनुचित व्यवाहर, एथलीट के मानसिक कौशल में बाधा डालना और एथलीट को एक से अधिक खेलों की कोचिंग देना। इनमें से दो विषय एथलीट के मानसिक कौशल और एथलीट को एक से अधिक खेलों की कोचिंग देना ऐसे हैं जो मनोवैज्ञानिक संरचनाओं से निकटता से जुड़े हुए हैं। एथलीटो ने मानसिक कौशल को बाधित करने का कारण उन खराब कोचों से जुड़ा हुआ बताया, जो ध्यान भटकाने वाले, आत्म-संदेह पैदा करने वाले, हतोत्साहित करने वाले और टीम को विभाजित करने वाले थें।

Ray U.S. et al. (2011) द्वारा अपने शोध अध्ययन में "युवा शोधार्थियों के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव" नामक शोध अध्ययन में 20 से 25 वर्ष के 54 अभ्यर्थियों (28 प्रायोगिक व 26 नियंत्रित) को 10 माह तक योगाभ्यास कराया गया। 10 माह पश्चात् प्रयोगिक इस समूह में नियंत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूह की अपेक्षा कधों, गर्दन, जांघों के जोड़ों में लचीलापन पाया गया। योग अभ्यास के बाद चिंता एवं अवसाद में कमी तथा मानसिक स्थिति में संतुलन एवं सुधार पाया गया।

Evenson, Wen, et al. (2010) द्वारा किए गये शोध कार्य शीर्षक "स्कूल शारीरिक गतिविधि सुविधाओं तक सामुदायिक पहुंच में बदलाव का राष्ट्रीय अध्ययन:स्कूल स्वास्थ्य नीतियों और कार्यक्रमों का अध्ययन" विषय पर एक अध्ययन किया। उनके शोध का उद्देश्य स्कूल की शारीरिक गतिविधि सुविधाओं तक सामुदायिक पहुंच में बदलाव का राष्ट्रीय अध्ययन एवं स्कूल स्वास्थ्य नीतियों और कार्यक्रमों का अध्ययन करना था। इस अध्ययन का उद्देश्य 2000 ओर 2006 में स्कूलों में इनडोर और आउटडोर सुविधाओं की व्यापकता और जनता के लिए उन सुविधाओं की उपलब्धता का वर्णन करना था। शोध प्रविधि-2000 और 2006 में, स्कूल स्वास्थ्य नीतियां और कार्यक्रम अध्ययन आयोजित किए गए थे। इन्होंने प्रत्येक राज्य में यादृच्छिक तरीके से चयनित जिलों, स्कूलों और कक्षाओं में यह विश्लेषण किया गया जो सार्वजनिक और गैर-सार्वजनिक प्राथमिक, मध्य और उच्च विद्यालयों पर केंद्रित था नमूना चयन से स्कूल स्तर की प्रश्नावली (2000 में N=921 और 2006 में N-984) थी। परिणाम: 2000 से 2006 तक युवा या वयस्क सामुदायिक खेल टीमों, कक्षाओं या ओपन जिम के लिए स्कूल की शारीरिक गतिविधि सुविधाओं तक पहुंच की व्यापकता में कोई सार्थक परिवर्तन नहीं पाया गया। निष्कर्ष- ये राष्ट्रीय डेटा 2000 और 2006 से देश के सार्वजनिक और निजी स्कूलों के अनुपात को बढ़ाने की दिशा में प्रगति की कमी का संकेत देते हैं जो सामान्य स्कूल के घंटों के अतिरिक्त सभी व्यक्तियों के लिए उनकी शारीरिक गतिविधि सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करते हैं।

Lagarde F, LeBlanc C (2010) द्वारा किए गये शोध कार्य शीर्षक "स्कूलों में शारीरिक गतिविधि का समर्थन करने के लिए नीति विकल्प" पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि के परिणामस्वरूप दुनिया भर में बच्चों और युवाओं में मोटापे और संबंधित पुरानी बीमारियों की दर के बढ़ रहे स्तर, कम उम्र में स्वस्थ जीवन शैली व्यवहार को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए रहन सहन वातावरण मे परिवर्तन की आवश्यकता था; जिसके लिए स्कूल एक आदर्श स्थान है जिसमें छात्र शारीरिक क्रियाओं का स्तर और स्वस्थ भोजन वातावरण में सुधार के लिए विभिन्न प्रकार के परिवर्तन शामिल किए जाते हैं। परिणाम: यह अध्ययन स्कूल वातावरण में शारीरिक क्रियाओं का स्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ाने के लिए प्रभावी और आशाजनक नीतियों की समीक्षा करता है और अन्य अप्रयुक्त हस्तक्षेपों का परिचय देता है जो भविष्य में अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए अध्ययनों का आधार बन सकते हैं। इस समीक्षा में उल्लिखित नीतियों पर सरकार द्वारा विचार किया जाना चाहिए और सावधानीपूर्वक निगरानी और मूल्यांकन किया जाना चाहिए। शोध निष्कर्ष: इन नीतियों में दैनिक, गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित शारीरिक शिक्षा और शारीरिक गतिविधि शामिल होनी चाहिए, पाठ्येतर शारीरिक गतिविधि, शारीरिक गतिविधियों का प्रशिक्षण, स्कूल से आने-जाने के लिए सक्रिय परिवहन, पर्याप्त सुविधाएं, और समाज की पहुँच में स्कूल होने चाहिए।

S. J. Huang, Hung, Sharpe and Wai (2010) द्वारा शोध कार्य शीर्षक "ताइवान में शहरी और ग्रामीण स्कूली बच्चों के बीच आस-पास का वातावरण और शारीरिक गतिविधि" विषय पर एक अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य ताइवान में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूली बच्चों के बीच शारीरिक गतिविधि पर कथित आस-पास के वातावरण के प्रभाव की जांच करना था। यह अध्ययन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के दस प्राथमिक विद्यालयों से चयनित कक्षा पाँच और छह के पाँच सौ तेईस बच्चों ने अध्ययन में भाग लिया। बच्चों की शारीरिक गतिविधि के स्तर का अनुमान लगाने के लिए एक संशोधित अंतर्राष्ट्रीय शारीरिक गतिविधि प्रश्नावली संक्षिप्त रूप का उपयोग किया गया था। नेबरहुड एनवायरनमेंट वॉक एबिलिटी स्केल के चीनी अनुवाद में पर्यावरणीय विशेषताओं का आंकलन किया गया। डेटा विश्लेषण में वर्णनात्मक आँकड़े और विचरण और एकाधिक प्रतिगमन मॉडल का विश्लेषण शामिल था। परिणाम: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच चलने की क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शारीरिक गतिविधि के लिए स्थानों तक पहुंच में अंतर था, शहरी बच्चों ने अधिक पहुंच की सूचना दी। ग्रामीण बच्चों की तुलना में शहरी बच्चों ने स्कूल के बाद, छुट्टियों और सप्ताहांत पर एवं कुल शारीरिक गतिविधि में भी अधिक शारीरिक गतिविधि की सूचना दी। निष्कर्षत- सुविधाओं तक पहुंच का बच्चों की शारीरिक गतिविधि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

कुमार, वीरेन्द्र (2010) द्वारा किए गये शोध अध्ययन "भारत में खेलों का विकास का विवेचनात्मक अध्ययन" में पाया कि खेल एवं शारीरिक शिक्षा तक पहुँचने के मौके सभी क्षेत्रों में काफी कम हैं, इनमें बच्चियों का प्रतिभाग बच्चों की अपेक्षा काफी कम है एवं भारत में दिव्यांगों हेतु खेल सुविधाएं लगभग न के बराबर हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले एथलीटों के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी सुविधाएं अर्याप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष 2002 में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में क्रमश: 39, 57 एवं 78 प्रतिशत खेल के मैदान उपलब्ध हैं; भारत के 10.31 लाख में से केवल 48 प्रतिशत विद्यालयों के पास ही खेल मैदान उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र (2009) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश स्कूलों मे जहाँ शारीरिक शिक्षा अध्यापक नियुक्त होते हैं वहाँ उन्हें खेल ओर शारीरिक शिक्षा क्रियाविधि के अतिरिक्त अन्य जिम्मेदारियां सौप दी जाती हैं। अधिकांश स्कूल ऐसे पाये गये जहाँ शारीरिक शिक्षा शिक्षक होते ही नहीं हैं। विद्वानों ने माना कि शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विद्यार्थियों की उपलब्धि का अन्य विषयो की तरह मूल्यांकन किया जाना चाहिए एवं शारीरिक शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

Kumar Arun , Kumar Muchhal (2009) द्वारा अपने शोध में हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर पढ़ाई के तनाव पर यौगिक व्यायाम का प्रभाव देखने हेतु अध्ययन किया गया जिसमें नमूने के रूप में हाईस्कूल स्तर के 120 विद्यार्थियों का चयन मोगा(पंजाब) से किया गया। विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक एंव नियंत्रित समूह को 60-60 में विभक्त किया गया। प्रयोगात्मक समूह को 30 दिन तक योगाभ्यास (प्राणायाम, ध्यान, कपालभाँति एवं त्राटक) कराया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर पाया गया कि यौगिक अभ्यास का कार्यक्रम 10 वीं स्तर के विद्यार्थियों में पढ़ाई का तनाव तथा उसके घटकों को दूर अथवा कम करने में प्रभावकारी है।

M. Dobbins, Robeson, et al.(2009) द्वारा किए गये शोध कार्य शीर्षक “6-18 आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों में शारीरिक गतिविधि और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए स्कूल-आधारित शारीरिक गतिविधि कार्यक्रम” विषय पर एक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बच्चों और किशोरों में शारीरिक गतिविधि और फिटनेस को बढ़ावा देने में स्कूल-आधारित हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता के साक्ष्य को संक्षेप में प्रस्तुत करना था। शोध के लिए आंकड़ों का संग्रहण करना ओर संभावित रूप से प्रासंगिक अध्ययनों के लिए शामिल लेखों और पृष्ठभूमि पत्रों की संदर्भ सूचियों की समीक्षा की गई, साथ ही स्वास्थ्य देखभाल ओर स्वास्थ्य नीति मे किए गए अनुसंधानों की समीक्षाओं के संदर्भों को देखना था। अतिरिक्त जानकारी के लिए आवश्यकतानुसार शामिल अध्ययनों के प्राथमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों से संपर्क किया गया। बच्चों और किशोरों में शारीरिक गतिविधि और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाइयों में कर्मचारियों द्वारा कार्यान्वित, सुविधाजनक या प्रचारित किया जाना चाहिए, स्कूल की कार्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए और इसका उद्देश्य शारीरिक गतिविधि को बढ़ाना, बच्चों के लिए परिणामों पर रिपोर्ट करना और किशोर(6 से 18 वर्ष की आयु), और एक नियंत्रण समूह के साथ एक प्रारूप का उपयोग किया गया। डेटा संग्रह और विश्लेषण-प्रत्येक अध्ययन की पद्धतिगत गुणवत्ता का मूल्यांकन करने और डेटा निष्कर्षण के लिए दो स्वतंत्र समीक्षकों द्वारा मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया था। जहां विसंगतियां थीं वहां सर्वसम्मति बनने तक चर्चा हुई। जनसंख्या में व्यापक भिन्नता, हस्तक्षेपों के मूल्यांकन और मापे गए परिणामों के कारण परिणामों को मानक रूप से संक्षेपित किया गया था। परिणाम मे पाया गया कि 13841 शीर्षकों की पहचान की गई और उनकी जांच की गई और 482 लेख पुनर्प्राप्त किए गए। एक ही परियोजना पर कई प्रकाशनों को मिलाकर एक परियोजना के रूप में गिना गया, जिसके परिणामस्वरूप 395 अलग-अलग परियोजनाओं का अध्ययन हुआ। 395 अध्ययनों में से 104 को प्रासंगिक माना गया और उनमें से 4 को मजबूत कार्यप्रणाली गुणवत्ता वाले 22 मध्यम गुणवत्ता वाले और 78 कमजोर माने गए थे। समीक्षा में कुल मिलाकर 26 अध्ययन शामिल किये गये। जिससे प्रमाण मिलता हैं कि स्कूल-आधारित शारीरिक गतिविधि हस्तक्षेप का नौ परिणाम उपायों में से चार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से शारीरिक गतिविधि की अवधि, टेलीविजन देखने पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया। VO2 अधिकतम, और रक्त कोलेस्ट्रॉल। आम तौर पर स्कूल-आधारित हस्तक्षेपों का ख़ाली समय की शारीरिक गतिविधि दर, सिस्टोलिक और डायस्टोलिक रक्तचाप, बॉडी मास इंडेक्स और पल्स दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। कम से कम, मुद्रित शैक्षिक सामग्रियों के संयोजन और शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देने वाले स्कूल पाठ्यक्रम में बदलाव के परिणामस्वरूप सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष-यह देखते हुए कि कोई हानिकारक प्रभाव नहीं है और जीवनशैली व्यवहार और शारीरिक स्वास्थ्य स्थिति उपायों पर सकारात्मक प्रभाव के कुछ सबूत हैं, इस समय स्कूलों में शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देने की सिफारिश की जाती है।

Timmons (2007) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक “Physical Activity for Preschool Children” के अंतर्गत बताया कि प्री-स्कूल के बच्चो में बढ़ता मोटापा प्रारम्भिक जीवन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक शिक्षा गतिविधि को आवश्यकता को दर्शाता है। उनके शोध का मुख्य उद्देश्य दो से पांच वर्ष के बच्चो में शारीरिक गतिविधियों एवं जीव विज्ञान और मनोविज्ञान मे संबंध को वैज्ञानिक प्रमाण प्रदान करना था। शोध उद्देश्य पूर्ति हेतु इन्होने अनेक साहित्य अध्ययन किये जो बताते है कि 2 से 5 वर्ष के बच्चो में शारीरिक स्वस्थता बढ़ाने, स्वस्थ वातावरण तैयार करने में शारीरिक क्रियाएं अहम भूमिका निवर्हन करती है।

Verma, Manisha (2004) ने "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दैनिक प्रार्थना बालसभा एवं खेल कूद संबन्धी समस्यायें" का अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष मे बताया कि इस स्तर पर बच्चों में दैनिक प्रार्थना से सम्बन्धित समस्यायें है और दैनिक प्रार्थना के प्रति उनकी रूचि औसत है एवं प्रतिदिन की प्रार्थना एवं खेल के प्रति रूचि में सामान्य स्तर का संबंध पाया जाता है। यह दोनो साथ साथ बढ़ती है।

खेलों से सम्बन्धित अध्ययनों में गुसरनदास त्यागी (2004), अजमेर सिंह एवं अन्य (2002), रमा वर्मा (2002), व्यास देव शर्मा (2001), उषा बोरोवालिया (1999), विल्मेयर जे.एच. (1999), पी.एन. पाण्डेय (1998), शंकरलाल शर्मा (1996), हरदयाल सिंह (1991), एम.एल. कमलेश (1988), शम्भूनाथ कपूर (1988), गारिन्डर एम. डाना (1985), लक्ष्मीकांत पाण्डेय (1983) एम.एल. कमलेश (1983), अरूण अर्णव (1982), अजय भल्ला (1980) डिक. फ्रैंक डब्ल्यू (1980), चार्ल्स ए. बुचर (1979), एम.जे. इलियस (1973), बटलर जार्ज डी. (1959) ने अपने खेलों की ऐतिहासिकता, ओलम्पिक-एशियाई खेलों के आयोजन, खेल साहित्य में खेल एवं शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता, खेलों के लक्षण, मानव संस्कृति और सभ्यता के उद्भव एवं विकास के साथ खेल संस्कृति का विकास, क्रीड़ा एक संस्था के रूप में व्यक्ति के समाजीकरण, व्यक्तित्व विकास, संवेगात्मक तथा सामाजिक व्यवस्थापन से खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा के सम्बन्धों, खेल प्रशिक्षणों पर प्रकाश डाला है। इन सभी के खेल साहित्यों में निष्कर्ष रूप में हम पाते हैं कि योग्यता, आयु, सामाजिक-आर्थिक स्तर, लिंग, संस्कृति या धार्मिक भूमिका का भेदभाव किये बिना खेल-कूद एवं शारीरिक शिक्षा सभी बच्चों को ऐसे कौशल, ज्ञान तथा समझ प्रदान करती है जो ता-उम्र शारीरिक क्रियाकलापों व खेल में भाग लेने के लिए आवश्यक है। जो बालक खेलता है वह न खेलने वालों की अपेक्षा बहुत स्फूर्तिवान, साहसी तथा स्वस्थ दिखाई देता है। विद्वानों ने अपने खेल साहित्य में व्यक्त किया है कि खेल केवल जैविक संतुष्टि की गतिविधि ही नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य मनुष्य के जीवित रहने के लिए भी आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। साथ ही साथ खेल व्यक्ति की बुद्धिमत्ता के ताने-बाने को भी बुनता है। खेल हमारे सांस्कृतिक विरासत का एक अत्यंत आवश्यक अंग है। यह हमारी सांस्कृतिक सभ्यता के मूल एवं सामाजिक विकास के प्रचार प्रसार को भी प्रभावित करता है। बालक इसलिए खेलता है क्योंकि उसमें ऊर्जा का अधिक संचार हो रहा है। क्रीड़ा से जुड़ी प्रत्येक गतिविधियों से उसके शरीर और मस्तिष्क का विकास होता है और उसमें स्नायु नियंत्रण का विकास होता है जिससे उसकी समन्वयता की योग्यता में वृद्धि होती है। खेल को एक ऐसा दर्पण कह सकते है जिसका प्रतिबिंब अन्तःमन की भावनाओं को बाहरी पर्दे पर परावर्तित किया जा सकता है। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे बालक प्रसन्नता प्राप्त करता है और कष्टदायक अनुभवों से दूर होता है। युवा एवं बुजुर्गों के लिए खेल एक तनाव कम करने का साधन है। खेल शारीरिक के साथ-साथ मानसिक तनावों को कम करने में सक्षम है। विद्वानों का मानना है कि खेल को किसी भी प्रकार से देखें तो हम पाते है कि यह एक ऐसी क्रिया है जो कि इस संसार में हमको मानसिक शान्ति और अच्छे स्वास्थ्यमय जीवन के लिए योग्य बनाने हेतु समाजीकृत तथा शिक्षित करती है।

Sudarshan, P.V. and Balkrishna S. (2003) द्वारा अपने शोध विषय "मैसूर जिले के प्राथमिक स्कूलों में शारीरिक शिक्षा की पाठ्यचर्या" का मूल्यांकन किया और पाया कि 80 प्रतिशत हेडमास्टर, 60 प्रतिशत शिक्षा प्रणाली शिक्षक एवं 90 प्रतिशत शारीरिक शिक्षकों का शारीरिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक रूख था। 40 प्रतिशत शिक्षा प्रणाली शिक्षकों में नकारात्मक देखी गई। इस शोध में इन्होंने पाया कि शारीरिक शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाएं तो हैं किन्तु 50 प्रतिशत स्कूलों में शारीरिक शिक्षा के अध्यापक नहीं थे।

Abbassi (2003) इन्होंने अपने शोध अध्ययन "Study of job satisfaction" में ईरान और भारत में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षणों के बीच कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों की नौकरी से सतुष्टि का स्तर मध्यम हैं।

Gould, D., Greenleaf, C., et al. (2000) द्वारा अपने शोध विषय "Positive and negative factors influencing U.S. Olympic athletes and coaches" के अंतर्गत उन कारकों की जांच की जिनके बारे में एथलीटों ने माना था कि 1998 के शीतकालीन ओलंपिक खेलों के दौरान उनके प्रदर्शन पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ा था। शोधकर्ताओं ने सात ओलंपिक एथलीटों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहन फ़ोन साक्षात्कार आयोजित किए और खेलों में भाग लेने वाले अतिरिक्त 83 ओलंपिक एथलीटों का सर्वेक्षण किया। शोध में एथलीटों का लिंग नहीं बताया गया। इन एथलीटों ने माना कि नौ कोचिंग तथ्यों ने उनके प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाला है इनमे खराब संचार और जानकारी, टीम का गलत चयन निर्णय, उपकरण परिवर्तन और समस्याएं, समर्थन और प्रोत्साहन की कमी, खराब योजना, तकनीकी ओर रणनीतिक त्रुटियां, उत्साह और प्रयास की कमी, अनुचित उपचार और नकारात्मक रवैया, कोचों पर एथलीट द्वारा कम भरोसा एवं एथलीटों से ज्यादा अपेक्षाएं नकारात्मक प्रदर्शन को बढ़ाने का जिम्मेदार कारक रही।

लोक शिक्षण संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा वर्ष (1999-2000) द्वारा स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया(SGFI) की सलाह पर तथा उनके द्वारा आयोजित की जाने वाली अनेक खेल प्रतियोगिताओं के आधार पर लोक शिक्षण संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा वर्ष (1999-2000) में आयोजित होने वाली वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों के लिये जो खेल कलेण्डर जारी किया है उनमें फुटबाल, हॉकी, वालीबाल, बास्केटबाल, बैडमिंटन, टेबलटेनिस, लॉनटेनिस,तलवारबाजी, तैराकी, वाटर पोलो, बॉलबैडमिंटन, क्रिकेट, जूडो-कुश्ती, हैण्डबाल, साफ्टबाल, बेसबाल, शतरंज, एथलेटिक्स, जिमनास्टिक, भारत्तोलन (केवल बालकों के लिए) खेल आयोजनों का उल्लेख किया है। उपरोक्त गतिविधियों के आधार पर यह सुनिश्चित होता है कि विधालय स्तर पर इन खेल सुविधाओं का होना आवश्यक है।

Gould, D., Guinan, D., et al.(1999) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Factors affecting Olympic performance:Perceptions of athletes and coaches from more and less successful teams" के अंतर्गत 1996 के अटलांटा ओलंपिक खेलों में सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रदर्शन से संबंधित एथलीटों और कोचों द्वारा पहचाने गए कारकों पर एक अध्ययन किया जो यह समझने के लिए था कि क्यों कुछ ओलंपिक एथलीट सफल हुए जबकि अन्य विफल रहे। इससे संबंधित मौजूदा साहित्य के आधार पर एक साक्षात्कार मार्गदर्शिका विकसित की। उन्होंने आठ टीमों के दो से चार एथलीटों के साथ असफलता से संबंधित प्रश्नों को लेकर समूह साक्षात्कार आयोजित किए। 1996 के अटलांटा ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले कुल 11 पुरुष और 12 महिला ओलंपिक एथलीटों का साक्षात्कार लिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार के दौरान उन्होंने कोच का उनके प्रति रवैया, खराब एथलीट-कोच संचार, एथलीट-कोच विश्वास की कमी, कोचों का व्यक्तिगत होना एवं कोचों की भूमिकाओं को अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित करने की आवश्यकता है। जबकि एथलीटों की व्यक्तिगत कोचों तक पहुंच की इच्छा हो सकती है परंतु ओलंपिक एथलीटों के प्रति उदासीन रहें इस प्रकार एथलीटों ने कोच को एक ऐसे कारक के रूप में पहचाना जिसने उनके प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। अन्य कारकों मे खराब कोचिंग के अधिक संकेत दिए। शोधकर्ताओं ने नोट किया कि विशेष रूप से एक टीम के एथलीटों ने कोचिंग के मुद्दों पर अपनी अधिकांश चर्चा पर ध्यान केंद्रित किया।

पी.एन. पाण्डेय (1998) ने अपनी पुस्तक "क्रीड़ा और व्यवस्था" के अंतर्गत बताया कि खेल मानवीय क्रिया कलाप के रूप में हमारी सस्कृति का एक अभिन्न अंग है। विश्व की प्राचीनतम मानव संस्कृतियों के उदय के साथ ही खेल का भी आविर्भाव एवं विकास होता गया। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक का ऐतिहासिक सर्वेक्षण इस बात को सिद्ध करते है कि क्रीड़ा एक संस्था के रूप में व्यक्ति के समाजीकरण, व्यक्तित्व के विकास तथा सामाजिक व्यवस्थापन से पूरी तरह जुड़ी है। ऐतिहासिक सर्वेक्षणों से पता चलता है कि क्रीड़ा एक शारीरिक अभ्यास है जिसका उद्भव विश्व स्तर पर मानव संस्कृति एवं सभ्यता के साथ एवं विकास भी साथ-साथ हुआ है।

Agrawal, Reena (1998) द्वारा अपने शोध विषय "प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों, सहायक सामग्री के प्रयोग एवं छात्रों की शैक्षिक सम्प्रति का अध्ययन" के अंतर्गत नमूने के रूप में सीतापुर जनपद के 20 विद्यालयों के 143 छात्र एवं 29 शिक्षक को सम्मिलित किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों, सहायक सामग्री के प्रयोग एवं छात्रों की शैक्षिक विकास को देखना था। प्राप्त आंकड़ों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उसमें पाया गया कि सीतापुर जनपद के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी है। ज्यादातर विद्यालयों में महिला अध्यापिका नहीं है। शिक्षक एवं छात्र अनुपात अत्यधिक है। 40 प्रतिशत विद्यालयों में 100 से 200 तक के मध्य एक तथा 10 प्रतिशत विद्यालयों में 200 से अधिक छात्रों पर एक अध्यापक नियुक्त है वह शिक्षक इण्टरमीडियट एवं प्रशिक्षित है। किसी भी विद्यालय ने क्लर्क व चपरासी नहीं है। विद्यालयों में कक्षाएँ सामान्यत: छोटी है एवं कम है। अधिकतर विद्यालयों में पीने के पानी, शौचालय एवं खेल के मैदान की समुचित व्यवस्था नहीं है। विद्यालय के भवन जर्जर है तथा विद्यालय परिसर खुला है, विद्यालयों में पाठ्य पुस्तके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपलब्ध हैं। सीतापुर जनपद के अधिकतर विद्यालयों में 'आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना' के तहत शिक्षण सामग्री उपलब्ध तो है किन्तु शोधार्थी को इन सहायक सामग्री का प्रयोग नहीं होता पाया गया। अध्यापक बच्चों को पढ़ाते समय श्यामपट्ट एवं पुस्तक का सहारा लेते पाये गये। सीतापुर जनपद के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों के विकास का स्तर अत्यन्त दैननीय पाया गया। 1.39 प्रतिशत छात्र निपुणता की ओर अग्रसर है। छात्रों की सम्प्रति हिन्दी में अधिक एवं गणित में कम पाई गई। स्कूलों मे अनुशासन बनाए रखने के लिए अध्यापक छात्रों को शारीरिक दण्ड देते पाये गये, स्कूलों मे कैलेण्डर एवं समय सारणी नहीं है अतः विद्यालय का कार्य दिशा विहीन होता है।

शंकरलाल शर्मा (1996) ने अपनी पुस्तक "शारीरिक शिक्षा तथा खेलकूद" में पाया कि शारीरिक शिक्षा केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही प्रभावित नहीं करती है अपितु शारीरिक क्षमता, मानसिक संचेतना पर भी अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से सद्गुणों को विकसित करने में भी मदद मिलती है, जैसे खेल भावना, नेतृत्व, अनुशासन, विजय भावना और हार जीत को स्वीकारना इत्यादि। शारीरिक शिक्षा में विकासात्मक व्यायाम, लयात्मक क्रियाकलाप, खेल और क्रीड़ाएँ, पैदल चाल और सामूहिक क्रियाकलापों को शामिल किया जाता है। ये सभी क्रियाकलाप सरल एवं जटिल दोनों प्रकार के होते है।

Kevin Patrick, M.D. (1995) ने अपने शोध कार्य के अंतर्गत अमेरिका में सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु एवं बीमारियों को रोकने हेतु शारीरिक गतिविधियों में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया गया। विभिन्न शारीरिक गतिविधियों एवं स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन खर्च किये जाने वाले समय की समीक्षा हेतु पांच वैज्ञानिकों की एक कमेटी तैयार की गई। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया कि प्रत्येक वयस्क को स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन 30 मिनट शारीरिक गतिविधि करने की आवश्यकता है।

Cross, N. (1995) द्वारा अपना शोध अध्ययन "Coaching effectiveness in hockey: A Scottish perspective" किया गया अध्ययन हेतु नमूने के रूप में छह स्कॉटिश राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ियों (1 पुरुष और 5 महिलाओं) को चुना गया। एथलीटों से उन कारकों के बारे में साक्षात्कार लिया गया जिन्हें वे प्रभावी कोचिंग के रूप में मानते थे। शोधार्थी ने साक्षात्कार प्रोटोकॉल प्रदान नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया ओर न ही डेटा संग्रह के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों का विस्तृत विवरण दिया। हालाँकि, दो खिलाड़ियों, जिनमें 1 पुरुष और 1 महिला, ने अप्रभावी कोचिंग से संबंधित कई कारकों की पहचान की। जिसे क्रॉस ने 'सीमित कारक' कहा। इन सीमित कारकों में कोच द्वारा प्रतिबद्धता की कमी, खराब कोचिंग शैली, कोच के ज्ञान की कमी, कोच की प्रेरित करने में असमर्थता और कोच की अंतर्ज्ञान की कमी शामिल है।

Stewart, C.(1993) ने अपने शोध "Coaching behaviours: The way you were, or the way you wished you were" के दौरान 87 छात्रों को नमूने के रूप में चयनित किया। छात्रों से उनके सबसे अधिक और सबसे कम पसंदीदा कोच के बारे मे लिखने के लिए कहा गया। छात्रों के बारे में कोई जनसांख्यिकीय डेटा प्रदान नहीं किया गया था। उन्होंने पसंदीदा और सबसे कम पसंदीदा प्रशिक्षकों के लिए रिपोर्ट किए गए व्यवहारों को तीन समूहों में वर्गीकृत किया-संज्ञानात्मक, भावनात्मक या शारीरिक व्यवहार; संज्ञानात्मक व्यवहार शिक्षण जैसे ज्ञान गुणों से संबंधित थें, भावनात्मक व्यवहार प्रेरणा जैसी भावनाओं से संबंधित थें, और शारीरिक व्यवहार मात्रात्मक व्यवहार जैसे कि देर से आना या हर चीज में जीत पर जोर देना इत्यादि से संबन्धित थें। स्टीवर्ट ने शोध उपरांत 45 से अधिक सबसे प्रतिकूल कोचिंग गुणों की सूचना दी जैसे कि कोच को खेल का ज्ञान नहीं था (संज्ञानात्मक), कोच ने पक्षपात दिखाया या स्वार्थी(भावुक) था, और कोच आलसी था या खिलाड़ियों के प्रति अपमानजनक था(शारीरिक)। हालांकि अध्ययन की रिपोर्ट ने अध्ययन के संचालन में उपयोग किए गए डिजाइन और तरीकों की कठोरता का आंकलन करने की अनुमति नहीं दी, लेकिन उन्होंने छात्रों द्वारा कम से कम पसंदीदा प्रशिक्षकों के व्यवहार के बारे में छात्रों की प्रतिक्रियाओं की जानकारी दीं।

Sharma, H.N., Dutta, Binita et al.(1991) द्वारा प्राथमिक शिक्षा की समस्या की पहचान पर शोध कार्य किया गया। शोध उपरांत इन्होंने पाया कि प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न विद्यालयों के पास ढाँचागत सुविधाओं का अभाव था। 46 प्रतिशत स्कूल ऐसे थे जो बिना भवन थे, 42 प्रतिशत स्कूलों में विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था उचित नहीं थी, बच्चों के स्वास्थ्य और सफाई की समस्या बहुत गम्भीर थी। 61 प्रतिशत स्कूलों में पेयजल की व्यवस्था उचित नहीं थी। 73 प्रतिशत विद्यालयों के पास शौचालय नहीं था। प्राथमिक स्कूलों में खेलकूद अहम हिस्सा है लेकिन 54 प्रतिशत विद्यालय के पास खेल मैदान ही नहीं थे। 58 प्रतिशत स्कूलों के पास खेलकूद के सामानों का अभाव था। 73 प्रतिशत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों में केवल एक अध्यापक, 19 प्रतिशत में दो अध्यापक एवं 8 प्रतिशत स्कूलों में तीन अध्यापक पाये गये। शिक्षक -छात्र अनुपात केवल एक स्कूल में अधिक 1:11 पाया गया। 24 प्रतिशत स्कूलों में यह अनुपात 1:11 और 1:20 के मध्य था। 48 प्रतिशत मे 1:21 ले 1:30 के मध्य और 28 प्रतिशत स्कूलों में यह अनुपात 1:42 पाया गया। असम सरकार की छात्रों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराने की अव्यवस्थित वितरण मुख्य समस्या थी। 71 प्रतिशत शिक्षकों ने माना कि प्राथमिक शिक्षा की मुख्य समस्या अभिभावकों का असहयोग है। 53 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षक ऐसे थे जो पढ़ाते समय उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग नहीं करते थें। विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति और उनकी शैक्षिक प्रगति के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। 35 प्रतिशत स्कूलों में श्यामपट्ट नहीं था और 81 प्रतिशत स्कूलों के पास कोई धनराशि शैक्षिक मद में नहीं पाई गई।

हरदयाल सिंह (1991) द्वारा लिखित अपनी पुस्तक "साईंस ऑफ स्पोर्टस ट्रेनिंग" में कहा कि समाज में खेलों का स्तर बढ़ने से खेलकूद प्रशिक्षण और भी महत्वपूर्ण हो गया है। उत्तम खेल प्रशिक्षण कार्यक्रम उच्च श्रेणी के खिलाड़ी तैयार करने की प्रक्रिया का प्रमुख साधन है। खेल प्रशिक्षण विज्ञान एक खिलाड़ी को किसी खेल गतिविधि के लिए तैयार करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा खिलाड़ियों को उच्च स्तर के प्रदर्शन के लिए तैयार किया जाता है। खेल प्रशिक्षण खेलो में विकास की वह प्रक्रिया है जो वैज्ञानिक सिद्धांतों पर संचालित की जाती है; जिसके माध्यम से मानसिक और शारीरिक क्षमता,दक्षता और प्रेरणा के क्रमबद्ध विकास से खिलाड़ियों को उत्कृष्ट और स्थापित कीर्तिमान तोड़ने वाले प्रदर्शन में सहायता मिलती है।

राष्ट्रीय खेल नीति (1980) के अंतर्गत भारत सरकार ने विद्यालय खोलने की अनुमति के प्रावधान संबंधी आदेश में स्पष्ट किया कि किसी को भी विद्यालय खोलने की अनुमति तभी मिलेगी जब उसके पास 6 एकड़ भूमि होगी। राष्ट्रीय खेल नीति के प्रारूप(1980) में विद्यालय स्तर पर खेल सुविधाओं की आवश्यकताओं पर बल दिया गया है जो इस प्रकार है-एथलेटिक ट्रैक, खो-खो, कबड्डी, बास्केटबाल, वालीबाल, फुटबाल, हॉकी, कुश्ती के मैदान एक कम लागत का सुविधाजनक ढका हुआ जिमनेजियम जिसका प्रयोग एक शिक्षण कक्ष के रूप में भी उपयोग किया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय अध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि

शोध विषय का चयन (Selection of research problem)

प्रस्तुत शोध अध्ययन शीर्षक 'सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन' हेतु विषयों का चयन सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधि (Simple random sampling) का उपयोग करते हुए किया गया है। शोध के लिए प्रयुक्त चर निम्न प्रकार है -

1.खेल उपलब्धियां(Sports Achievements)-

सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों के बच्चों का मंडल स्तर खेलों में प्रतिभाग का खेल उपलब्धि संबंधी विवरण उपलब्ध अभिलेख विवेचना के आधार पर करना।

2.खेल संसाधन(Sports Resources)-

प्रश्नावली-Man-made Questionnaire constructed by Dr. Priyanka Singh, Department of Physical Education, Banasthali University Rajsthan 2013 Questionnaire for facilities and infrastructure available (profile of the school)

3.अनुदेशक कार्य संतुष्टि (Job Satisfaction)-

प्रश्नावली-Standardized questionnaire constructed by Dr. Meera Dixit for job satisfaction 1993

प्रयुक्त मापनियों की व्याख्या

खेल उपलब्धियां-

सहारनपुर मण्डल के जूनियर हाईस्कूलों के बच्चो की खेल उपलब्धियों को आंकलन करने के उद्देश्य हेतु इन स्कूलों मे अनुदेशको की नियुक्ति वर्ष 2013-14 से 2022-23 तक का मण्डल स्तर खेलों के आंकड़ों का अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत यह सर्वे किया गया कि शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्ति वाले कितने बच्चों ने 2013-14 से 2022-23 तक मण्डल स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों के कितने बच्चो ने मण्डल स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया। खेल उपलब्धियों संबंधी जानकारी प्राप्त करने हेतु -

1. सहारनपुर बी एस ए ऑफिस से खेल उपलब्धियों की जानकारी गुरुकुल काँगड़ी विश्वविधालय द्वारा आँकड़े संग्रहण करने हेतु दिए गये पत्र के आधार पर प्राप्त की गई।
2. मुजफ्फरनगर बी एस ए ऑफिस से खेल उपलब्धियों की जानकारी गुरुकुल काँगड़ी विश्वविधालय द्वारा आँकड़े संग्रहण करने हेतु दिए गये पत्र के आधार पर प्राप्त की गई।
3. शामली बी एस ए ऑफिस से खेल उपलब्धियों की जानकारी गुरुकुल काँगड़ी विश्वविधालय द्वारा आँकड़े संग्रहण करने हेतु दिए गये पत्र के आधार पर प्राप्त की गई।

खेल संसाधन –

संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए डॉ० प्रियंका सिंह द्वारा अपने शोध कार्य शीर्षक "Study of sports Infrastructures and facilities in schools and colleges of Purvanchal" के समय निर्मित की गई प्रश्नावली Questionnaire for facilities and infrastructure available (profile of the school) का उपयोग आंकड़ों के संग्रहण के लिए किया गया।

इस प्रश्नावली में प्रश्नो की कुल संख्या '37' है जिनमे से पहले '15' प्रश्न Sports Infrastructure (खेल अवसंरचना) प्रश्न 16 से 31 अर्थात '16' प्रश्न Sport facilities (खेल सुविधाओं) एवं '6' प्रश्न Finance and Budget Related Information (वित्त एवं बजट संबंधी) जानकारी से संबन्ध रखते है।

प्रश्नावली निर्माण-

प्रश्नावली तैयार करने से पहले शोधार्थी ने अपने अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया और प्रश्नावली निर्माण हेतु सभी आवश्यक चरणों का पालन किया। प्रश्नावली शारीरिक शिक्षा सुविधाओं के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई थी। सबसे पहले प्रश्नावली तार्किक क्रम में व्यवस्थित की गई यहाँ पर प्रत्येक कथन को स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया था ताकि स्कूल उन कथनो को बिना किसी कठिनाई के समझ सके एवं उत्तर दे सकें। प्रत्येक कथन को बिना किसी अस्पष्टता के सटीक तरीके से तैयार करने में बहुत सावधानी बरती गई। इस प्रश्नावली को अन्तिम रूप देने से पहले शोधार्थी ने स्कूलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कॉलेजो के लिए खेल के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं की आवश्यकता को सूचीबद्ध करने के लिए गहन अध्ययन किया।शारीरिक शिक्षा के योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों के परामर्श के बाद प्रश्नावली बनाई गई।

प्रश्नावली के निर्माण में अध्ययन के सभी प्रासंगिक पहलुओं पर बहुत ध्यान दिया गया ताकि विषय से अधिकतम सार्थक प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सकें।

प्रश्नो का निर्माण एवं व्यवस्था तार्किक तरीके से की गई ताकि प्रतिक्रिया कथनो मे क्रमबद्ध तरीके से अनुक्रम आसानी से उपलब्ध हो सके। प्रश्नो को सरल, स्पष्ट और प्रासंगिक रखने का प्रयास किया गया जिसने ताकि अस्पष्टता की कोई सम्भावना न रहे।

प्रश्नावली निर्माण के चरण-

प्रारंभिक लेखन : पहले प्रयास में विभिन्न प्रश्न तैयार किए गये जिनके उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' मे अपेक्षित थे। तत्पश्चात समय-समय पर दिशा निर्देशो ओर विशेषज्ञों की राय के अनुसार इन प्रश्नों में बदलाव किया गया। विशेषज्ञों द्वारा अनुशंसित सभी प्रश्नो का प्रश्नावली में रखा गया था।

पूर्व परीक्षण: अन्वेषक की संतुष्टि के अनुरूप प्रश्नावली तैयार करने के पश्चात सभी वस्तुओं को व्यवस्थित तरीके से सम्मिलत करने के बाद प्रश्नावली को परीक्षण के लिए भेजा गया था। पूर्व परीक्षण अथवा ट्रायल का उद्देश्य यह पता लगाना था कि प्रश्नावली में लिखित समस्त कथन उत्तर दाता को उचित प्रकार समझ आ रहे है अथवा नहीं। यह आंकलन भी किया गया कि वांछित जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्न पर्याप्त है या नहीं। ट्रायल के दौरान शारीरिक शिक्षा के विशेषज्ञों को प्रश्नावली दी गयी और अनुरोध किया गया कि प्रश्नावली के प्रश्नों का आवश्यक आलोचनात्मक मूल्याकन करें एवं यदि आवश्यक हो तो अपने सुझाव भी प्रस्तुत करें।

पुनर्लेखन: प्रतिक्रियाओं और सुझावो के मूल्यांकन के आधार पर प्रश्नावली में आवश्यक परिवर्तन किये गये और अंततः विशेषज्ञों की सहमति के उपरांत स्कूल और कॉलेज के लिए अलग -अलग प्रश्नावली तैयार की गई।

प्रश्नावली से सबंद्ध नीतिगत बातें शोधार्थी द्वारा डॉ० प्रियंका सिंह से की गई जो वर्तमान में असिस्टेंट प्रोफेसर(शारीरिक शिक्षा) के पद पर कार्यरत है। उन्होंने बताया कि उक्त प्रश्नावली का निर्माण खेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतियों, NCRTE के स्कूलों में मूलभूत ढांचों को लेकर दिए गये दिशा निर्देश एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है जो खेल संसाधनों संबंधित जानकारी को एकत्र करने मे सहायक है।

अनुदेशको की कार्य संतुष्टि-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शारीरिक शिक्षा अनुदेशको की कार्य-संतुष्टि के आकंडों को एकत्र करने हेतु प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के एकत्रीकरण के लिए प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षको की कार्य-संतुष्टि मापने हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली प्रश्नावली को मापनी के रूप मे चुना गया। मापनी निर्माण डा०(श्रीमती) मीरा दीक्षित ने किया है। आंकड़े एकत्र करने हेतु हिन्दी भाषा वाली मापनी को प्रयोग किया गया।

प्रश्नावली निर्माण

डा०(श्रीमती) मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य-संतुष्टि प्रश्नावली में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों की कार्य- संतुष्टि जानने हेतु आंतरिक पहलू, वेतन कार्यदशा एवं प्रोन्नति, भौतिक सुविधाएं, संस्था के कार्य योजना एवं नीतियां, संस्था प्रधान के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्थिति एवं परिवार कल्याण, विद्यार्थियो के साथ ताल-मेल एवं सहकर्मियो के साथ संबंध इत्यादि 8 कारको को जानने का प्रयास किया गया है। प्रश्नावली में कुल 52 प्रश्न रखे गये है जिनमे से आंतरिक पहलू हेतु-7, वेतन, कार्य दशा एवं प्रोनन्ति हेतु -8, भौतिक सुविधाओं हेतु-9, संस्था की कार्य योजनाओ एवं नीतियों हेतु-6, संस्था प्रधान के साथ संतुष्टि हेतु-9, सामाजिक स्थिति एवं परिवार कल्याण हेतु-5, विद्यार्थियो के साथ तालमेल हेतु-6 एवं सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध हेतु-5 प्रश्न है।

यह प्रश्नावली हिंदी एवं अंग्रेजी दोनो भाषाओं में तैयार की गई थी। शिक्षको से प्राप्त जानकारियों, प्राइमरी एवं माध्यमिक शिक्षको की प्रकृति एंव स्थितियों को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम प्रश्नावली में प्रश्नो की संख्या 58 रखी गई थी। प्रश्नावली निर्माण से पहले यह पांच बिंदु पैमाना निर्माण करने हेतु साहित्य एंव विषय विशेषज्ञों से परामर्श लिया गया। इस प्रारूप को सत्यापित करने हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षा के 'चार व्याख्याता' दो डिग्री कॉलेजो के 'प्राचार्य', इंटर कॉलेज के 'दो प्रधानाचर्य', मनोविज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय के 'एक रीडर', प्राथमिक विधालय की 'एक प्रधानाध्यापिका', हाईस्कूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर के 'दो शिक्षक' अर्थात कुल 12 सदस्य सम्मिलत थे। इन सदस्यों को यह निर्णय करना था कि ये प्रश्न कार्य संतुष्टि से संबद्ध है भी या नहीं। जिन प्रश्नो पर 80% सहमति पायी गई उन्हे प्रश्नावली में शामिल किया गया, हिन्दी संस्करण के निर्माण के लिए प्रश्नो के अनुवाद की पद्धति अपनाई गई। प्रश्नो को यादृच्छिक रूप से क्रमबद्ध किया गया। प्रश्नावली के प्री-टेस्ट को लखनऊ शहर के विभिन्न संस्थानों के 100 व्यक्तियों पर किया गया।

प्रश्नो की वैधता का पता प्रश्न परीक्षण सहसंबध विधि द्वारा पियर्सन के आर का उपयोग करके 25% उच्चतम स्कोर एवं 25% न्यूतम स्कोर लेते हुए लगाया गया और अंत में हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रश्नावली हेतु अलग-अलग 'टी-मान' की गणना की गई। प्रारम्भ के 58 प्रश्नों में से 6 महत्त्वहीन प्रश्नो को छोड़ना पड़ा।

प्रश्नावली की विश्वसनीयता

पैमाने की विश्वसनीयता को 'Split-half-method' के द्वारा मापा गया। टेस्ट को दो हिस्सों में विभाजित कर सहसंबन्ध की गणना की गई। गणना लिए स्पीयरमैन ब्राउन भविष्यवाणी सूत्र का उपयोग किया गया। प्रश्नावली की विश्वसनीयता को टेस्ट-री-टेस्ट से भी आंकलन किया गया 'Split Half Method' द्वारा विश्वसनीयता .87 एवं टेस्ट-री-टेस्ट द्वारा विश्वसनीयता .76 पायी गई।

परीक्षण का प्रशासन

किसी भी आकार के समूह पर प्रयोग किये जाने वाला यह एक स्व प्रशासित पैमाना है। इस पैमाने का उपयोग व्यक्तिगत रूप से भी किया जा सकता है। निर्देश फार्म पर अंकित होते है। सामान्य रूप से प्रश्नो के उत्तर हेतु एक घन्टा पर्याप्त है परन्तु फिर भी ऐसी कोई समय-सीमा की बाध्यता नहीं है। स्पष्टता, ईमानदारी एवं पूर्ण सहयोग की आवश्यकता होती है। समूह को आश्वशत किया जाना चाहिए कि उत्तरों को पूरी तरह गोपनीय रखा जायेगा।

स्कोरिंग

इस प्रश्नावली की स्कोरिंग एक से पांच (1 से 5) तक के पैमाने पर होती है।

I. दृढ़ता से सहमत के लिए स्कोरिंग-1

II. असहमत के लिए स्कोरिंग-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

III. अनिर्णय के लिए स्कोरिंग-3

IV. सहमत के लिए स्कोरिंग-4

V. दृढ़ता से असहमत के लिए स्कोरिंग-5

प्रतिभागियों का उन्मुखिकरण

ऑकडो के एकत्रीकरण हेतु अध्ययन के प्रति प्रतिभागियो की चेष्टा बढ़ाना अत्यन्त महत्तवपूर्ण था प्रतिभागियों से आँकडे प्राप्त करने हेतु उनको अध्ययन के महत्तव से भली प्रकार अवगत गया उनको बताया गया कि यह अध्ययन-

शारीरिक शिक्षा विषय को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगा।

खेल संसाधनों की जानकारी प्राप्त कर उनके हेतु सरकार को सुझाव दिये जायेंगे।

शारीरिक शिक्षा अनुदेशको का मानदेय बढ़ाने का सुझाव सरकार को दिया जायेगा।

प्रयुक्त साख्यिकी विधियाँ

सहारनपुर मण्डल परिक्षेत्र के लिए किये गये शोध हेतु शोधार्थी ने साख्यिकी विश्लेषण के लिए 'खेल उपलब्धियों' एवं 'शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि' हेतु **'स्वतन्त्र-टी परीक्षण'** का प्रयोग किया गया है जिसका सार्थकता स्तर .05 स्तर निर्धारित किया गया। 'खेल संसाधनो' के बारे में जानकारी के लिए वर्णनात्मक साख्यिकी अर्थात **'आवृति और प्रतिशत'** एवं **'काई-स्क्वायर'** का उपयोग शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक स्कूलो के बीच खेल संसाधनों के महत्त्वपूर्ण अंतर का पता लगाने के लिए किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय

अध्ययन के आंकड़ों और परिणाम का विश्लेषण

सर्वेक्षण शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। शोध शीर्षक 'सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि: एक अध्ययन' है। इस अध्ययन के अंतर्गत बच्चों की खेल उपलब्धियों के आंकड़े (वर्ष 2013-14 से 2022-23 तक मंडल स्तर खेलों में प्रतिभाग) के आधार पर एकत्र किए गए, खेल संसाधनो के आंकड़ों का एकत्रीकरण प्रश्नावली के माध्यम से एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि से संबंधित आंकड़ों का एकत्रीकरण भी प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। प्रस्तुत शोध में नमूने के रूप में सहारनपुर मंडल के 350 परिषदीय जूनियर हाईस्कूलों को लिया गया है इस शोध के अंतर्गत ऐसे सभी स्कूल है जिनमें अनुदेशक नियुक्त हैं ऐसे स्कूलों की संख्या175 है। यादृच्छिक नमूना विधि से 175 गैर अनुदेशक स्कूलों को शोध के लिए चुना गया है। शोधार्थी द्वारा खेल उपलब्धियों के आंकड़े विगत वर्षो के मंडल स्तर पर बच्चों के प्रतिभाग के रिकॉर्ड अभिलेख के आधार पर लिए गए हैं। खेल संसाधनों का आंकड़ा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से प्रश्नावली के प्रति-उत्तर के आधार पर एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का आंकड़ा महिला एवं पुरुष अनुदेशकों से प्रश्नावली प्रति-उत्तर के आधार पर एकत्र किया गया है। बच्चों की खेल उपलब्धियों में अंतर जानने के लिए स्वतंत्र टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया है। खेल संसाधनों के आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं काई- स्क्वायर टेस्ट के माध्यम से एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का विश्लेषण स्वतंत्र टी-टेस्ट के माध्यम से किया गया है। वर्तमान अध्याय सांख्यिकीय विश्लेषण की सहायता से निष्कर्ष की तालिका प्रस्तुत करता है तालिकाओं को उनके स्पष्टीकरण के साथ अनुक्रमिक क्रम में प्रस्तुत किया गया है संशोधित आंकड़ों की समझ को विस्तृत करने हेतु जिन तालिकाओं की आवश्यकता होती है उन्हें आंकड़ों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल उपलब्धियां

मण्डल स्तर पर अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक स्कूलों के बच्चों का प्रतिभाग

तालिका – 1

वर्ष 2013-14 से 2022-23 तक मंडल स्तर खेलों में प्रतिभाग का टी -टेस्ट के माध्यम से वर्णनात्मक विश्लेषण-

	स्कूलों के प्रकार	आयोजन अवसर	Mean	SD	T-value
चर-खेल उपलब्धियां	अनुदेशक वाले स्कूल	6	256.33	33.73	11.8880
	गैर अनुदेशक स्कूल	6	80.67	13.14	

***Significant at 0.05 level of significance on df =10 (t = 2.22)**

रेखा-चित्र

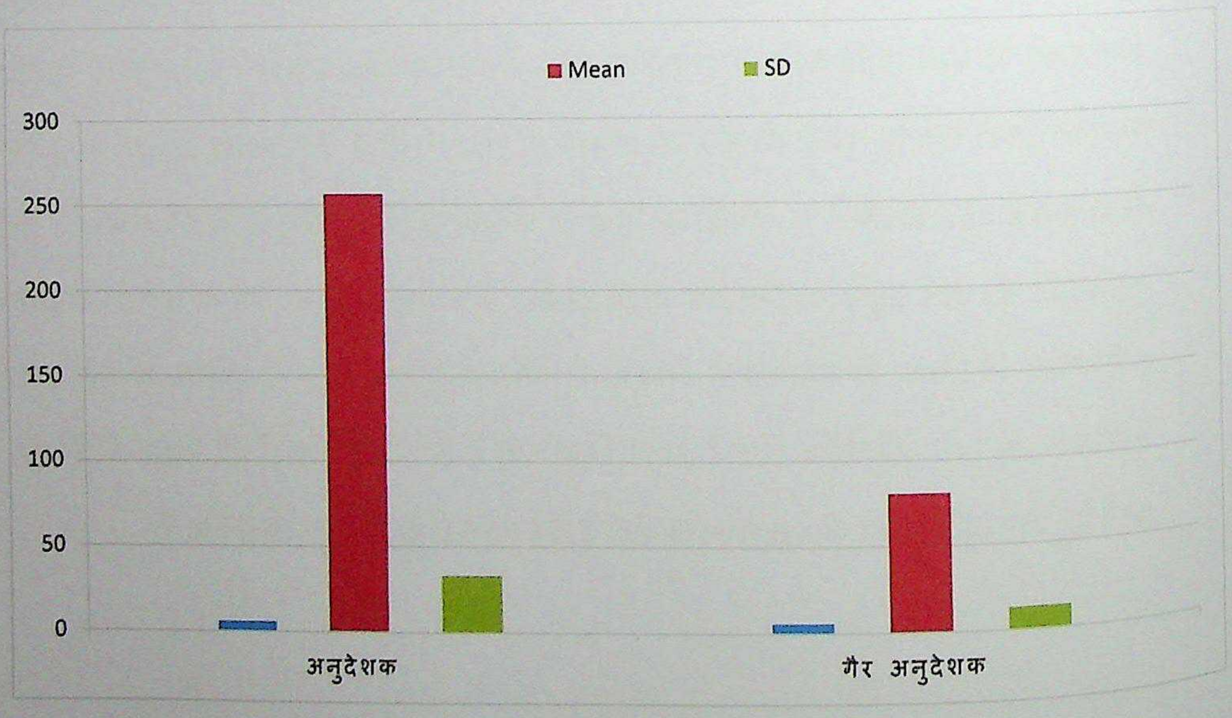

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका 1 यह दर्शाती है कि शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों वाले स्कूलों से प्रतिभाग करने वाले खिलाडियों का माध्य 256.33 व मानक विचलन 33.73 तथा गैर-अनुदेशक वाले स्कूलों से प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों का माध्य 80.67 व मानक विचलन 13.14 है जो प्रतिभागी बच्चों की संख्या के अंतर को स्पष्ट रूप से दर्शाता है ओर बताता है की अनुदेशक नियुक्ति वाले स्कूलों के बच्चों ने अधिक संख्या मे प्रतिभाग किया है।

प्राप्त टी मान 11.8880 df 10 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 2.228 से अधिक है।

आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि अनुदेशक वाले स्कूलों से प्रतिभागी बच्चों की संख्या एवं गैर अनुदेशक स्कूलों से प्रतिभागी बच्चों की संख्या के मध्य सार्थक अंतर है।

उपलब्ध खेल संसाधन

प्रश्नावली द्वारा एकत्र आँकड़ें-

प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 1 की आवश्यकता जिसमे एथलेटिक ट्रैक की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 1 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	03	1.71	172	98.28	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	01	0.57	174	99.42	175	.51
कुल	04	1.14	346	98.85	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 1 यह दर्शाती है कि एथलेटिक ट्रैक की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 03(1.71%) ने अपनी सकारात्मक एवं 172(98.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 01(0.57%) ने सकारात्मक एवं 174(99.42%) ने अपनी नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 04(1.14%) ने सकारात्मक एवं 346 (98.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

आंकड़ों के माध्यम से प्राप्त परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(.51) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में एथलेटिक ट्रैक की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 2 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में बैडमिंटन कोर्ट की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 2 में दर्शाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	05	2.85	170	97.14	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	04	2.28	171	97.71	175	.00065
कुल	09	2.57	341	97.42	350	

रेखा-चित्र

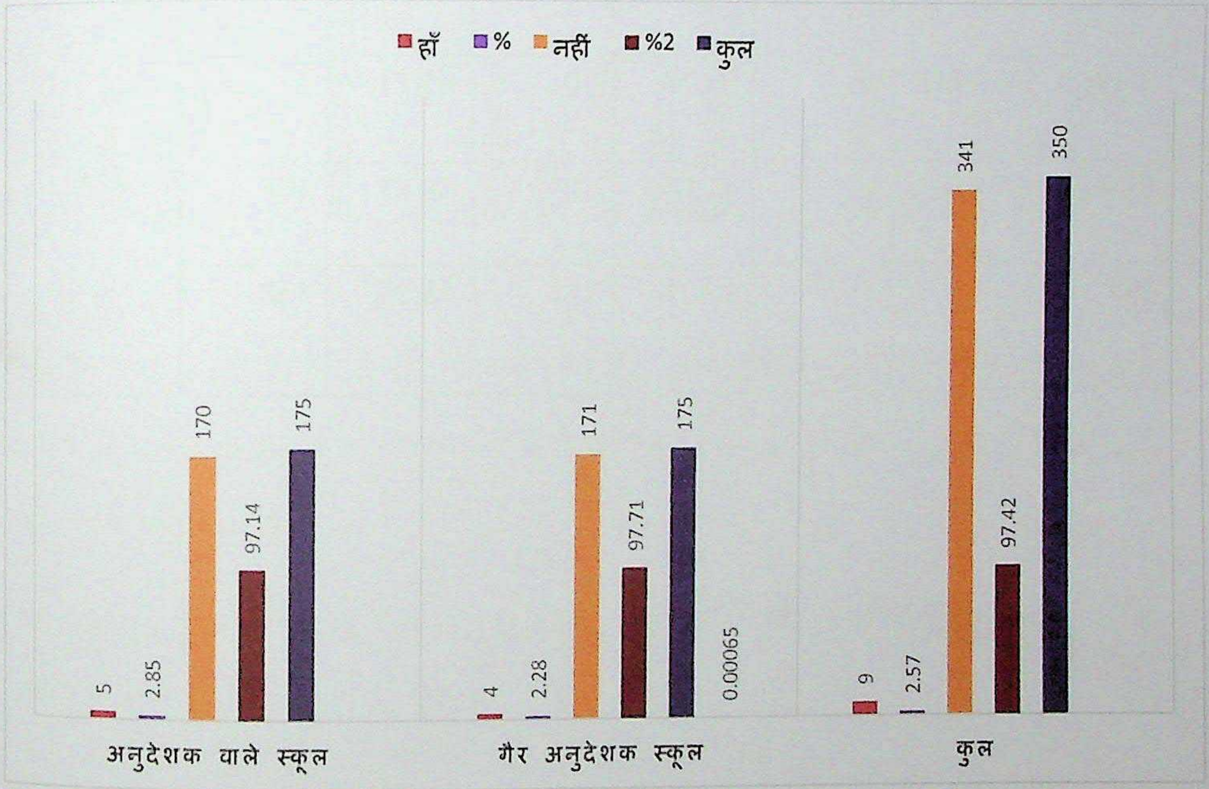

तालिका नंबर 2 यह दर्शाती है कि बैडमिंटन कोर्ट की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 05(2.85%) ने अपनी सकारात्मक एवं 170(97.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 04(2.28%) ने अपनी सकारात्मक एवं 171(97.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 09(2.57%) ने सकारात्मक एवं 341(97.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

आंकड़ों के माध्यम से प्राप्त परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(.00065) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में बैडमिंटन कोर्ट की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 3 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय मे कबड्डी कोर्ट की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 3 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	95	54.28	80	45.71	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	72	41.14	103	58.85	175	.0173
कुल	167	47.71	183	52.28	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

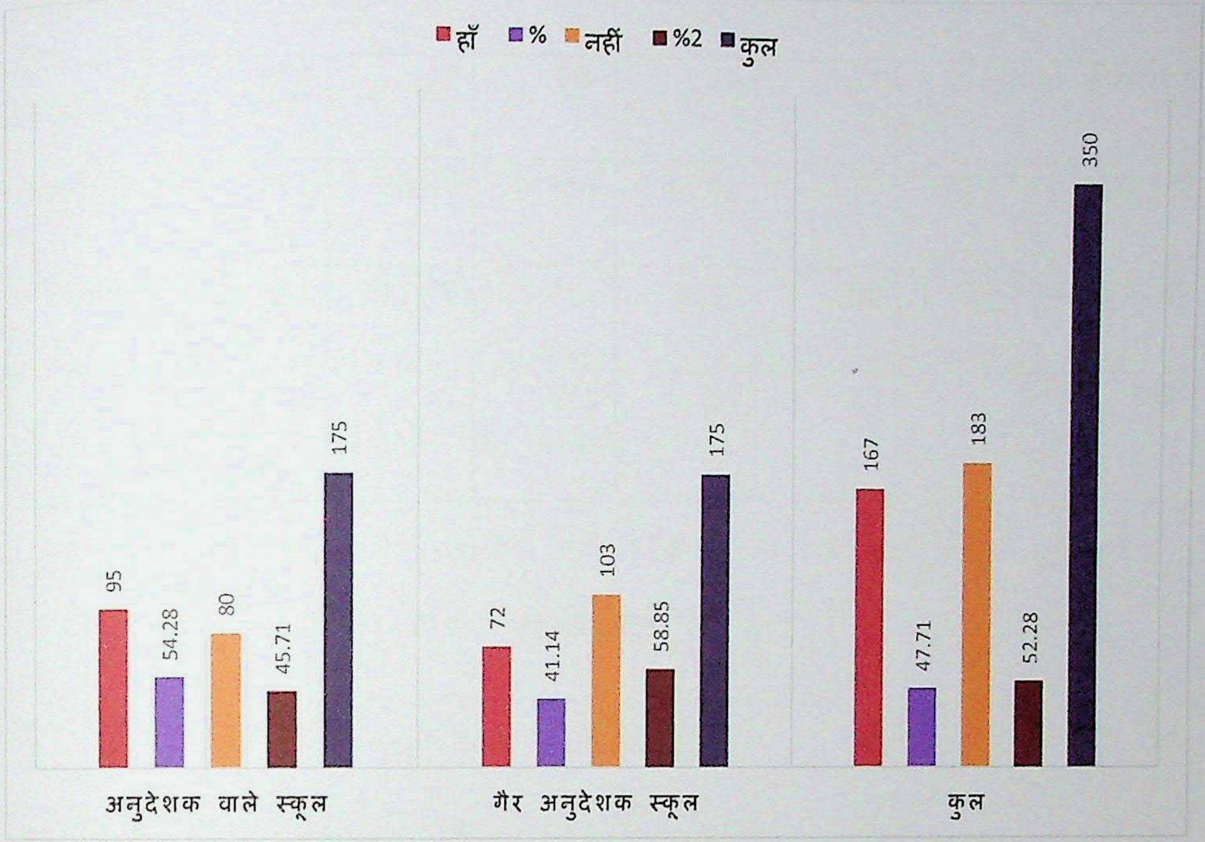

तालिका नंबर 3 यह दर्शाती है कि कबड्डी कोर्ट की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 95(54.28%) ने सकारात्मक एवं 80(45.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 72(41.14%) सकारात्मक एवं 103(58.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 167(47.71%) ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर स्वीकार किया एवं 183(52.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(.0173) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में कबड्डी कोर्ट की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 4 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खो-खो मैदान की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 4 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	51	29.14	124	70.85	175	1.796
गैर अनुदेशक स्कूल	40	22.85	135	77.14	175	
कुल	91	26	259	74	350	

रेखा-चित्र

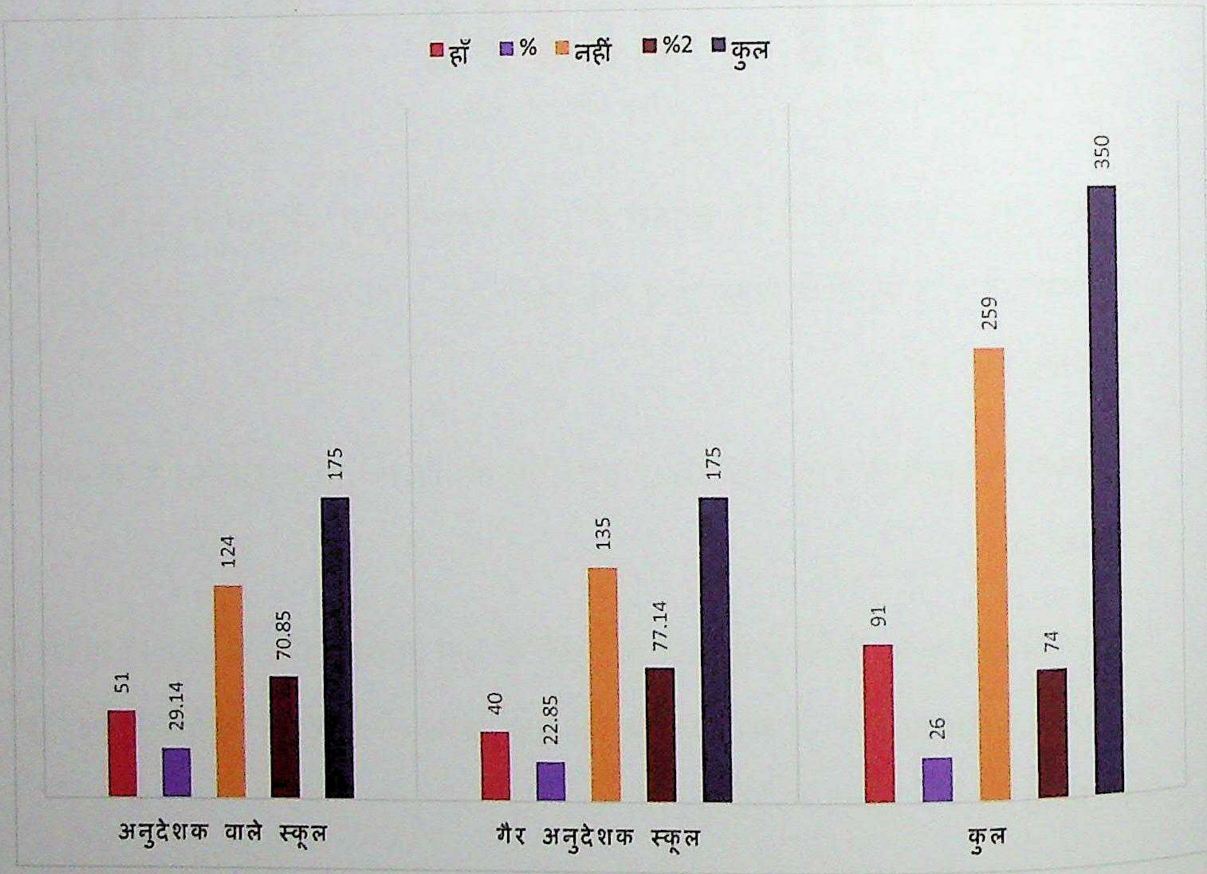

तालिका नंबर 4 यह दर्शाती है कि खो-खो कोर्ट की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 51(29.14%) ने सकारात्मक एवं 124(70.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 40(22.85%) सकारात्मक एवं 135(77.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 91(26%) ने सकारात्मक एवं 269(74%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(1.796) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खो-खो कोर्ट की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 5 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में स्विमिंग पूल की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 5 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	∞
कुल	00	00	350	100	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

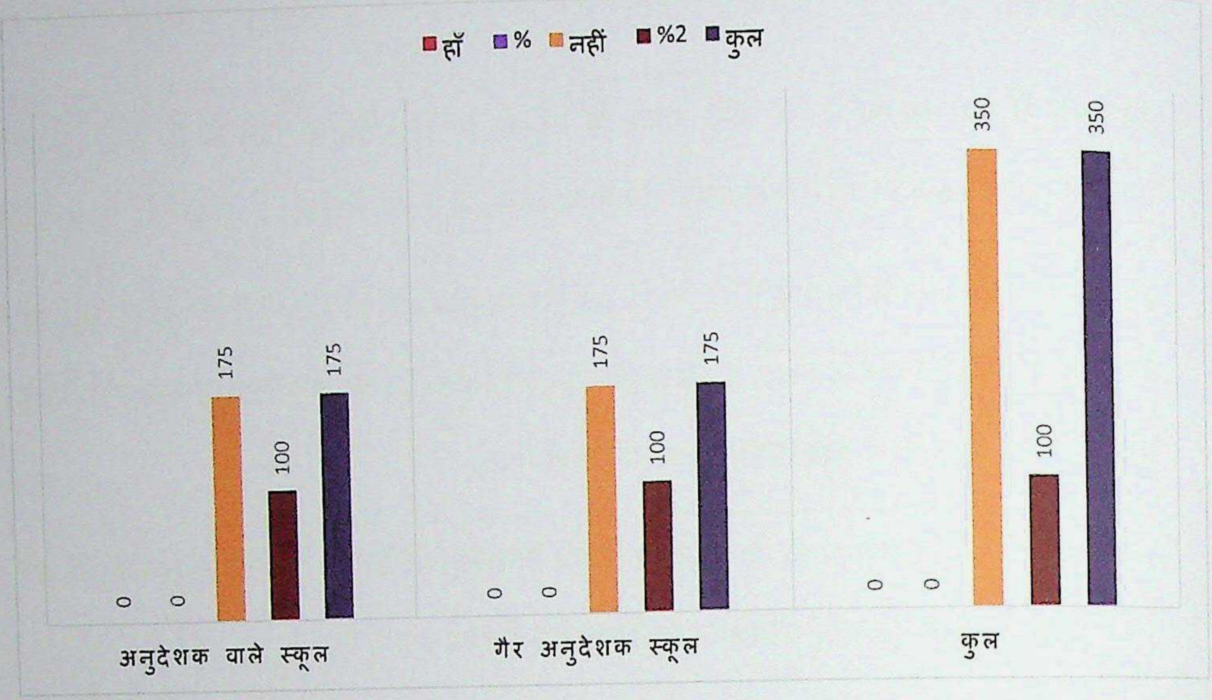

तालिका नंबर 5 यह दर्शाती है कि स्विमिंग पूल की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350 (100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में स्विमिंग पूल की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

6. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 6 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में टेबल-टेनिस टेबल की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 6 में दर्शाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	08	4.57	167	95.43	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	05	2.85	170	97.14	175	.719
कुल	13	3.71	337	96.28	350	

रेखा-चित्र

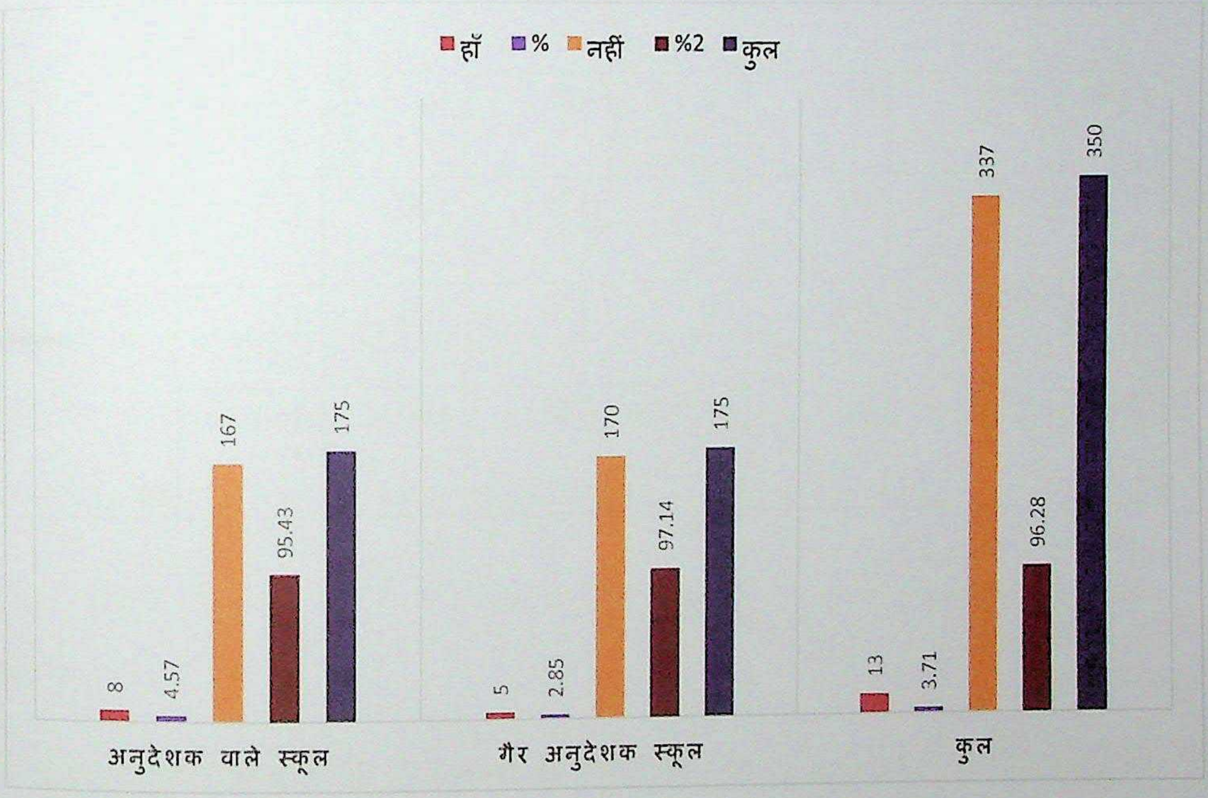

तालिका नंबर 6 यह दर्शाती है कि टेबल-टेनिस टेबल की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 08(4.57%) ने सकारात्मक एवं 167(95.43%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 05(2.85%) ने सकारात्मक एवं 170(97.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 13(3.71%) ने सकारात्मक एवं 337(96.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(.719) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में टेबल-टेनिस टेबल की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

7.प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 7 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में बहुउद्देशीय व्यायाम शाला/ इंडोर प्रशिक्षण हॉल की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 7 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	00	00	350	100	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

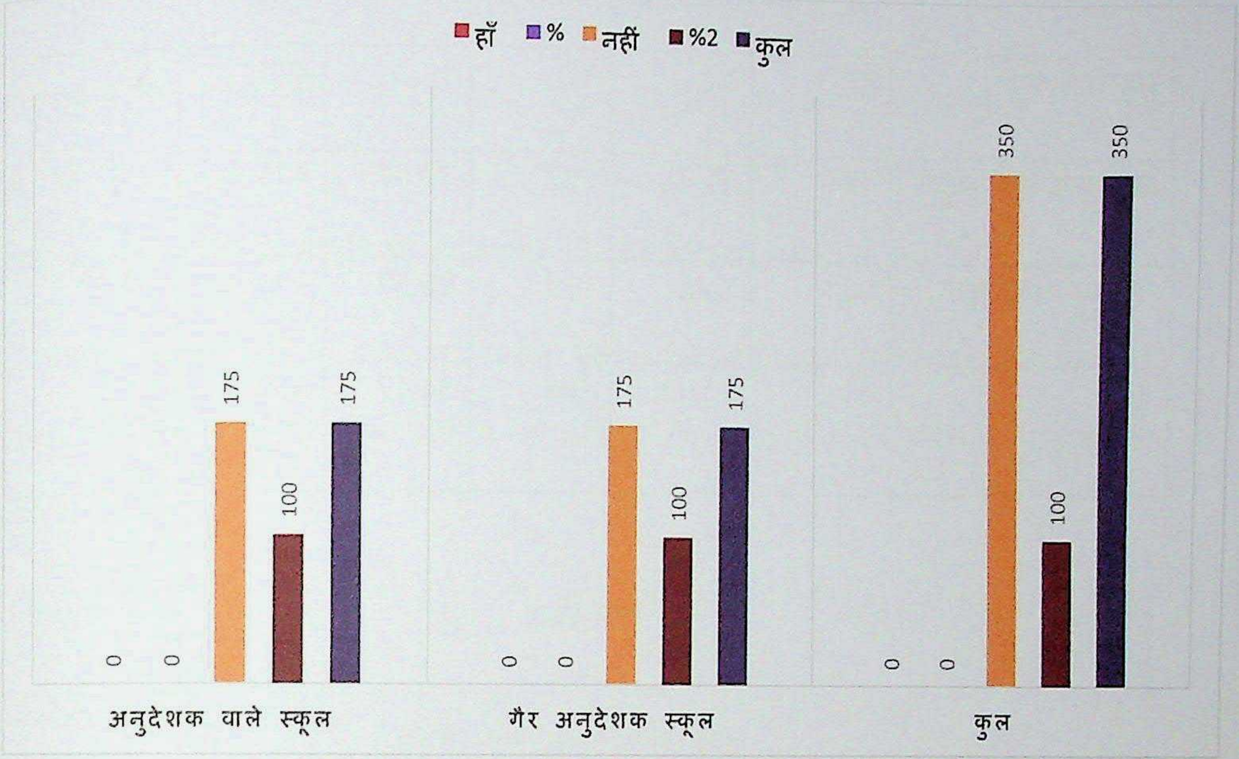

तालिका नंबर 7 यह दर्शाती है कि में बहुउद्देशीय व्यायाम शाला/ इंडोर प्रशिक्षण हॉल की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी ।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में बहुउद्देशीय व्यायाम शाला/ इंडोर प्रशिक्षण हॉल की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 8 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेल अवसंरचना विकास समिति की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 8 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	48	27.42	127	72.57	175	38.62
गैर अनुदेशक स्कूल	06	3.42	169	96.57	175	
कुल	54	15.42	296	84.57	350	

रेखा-चित्र

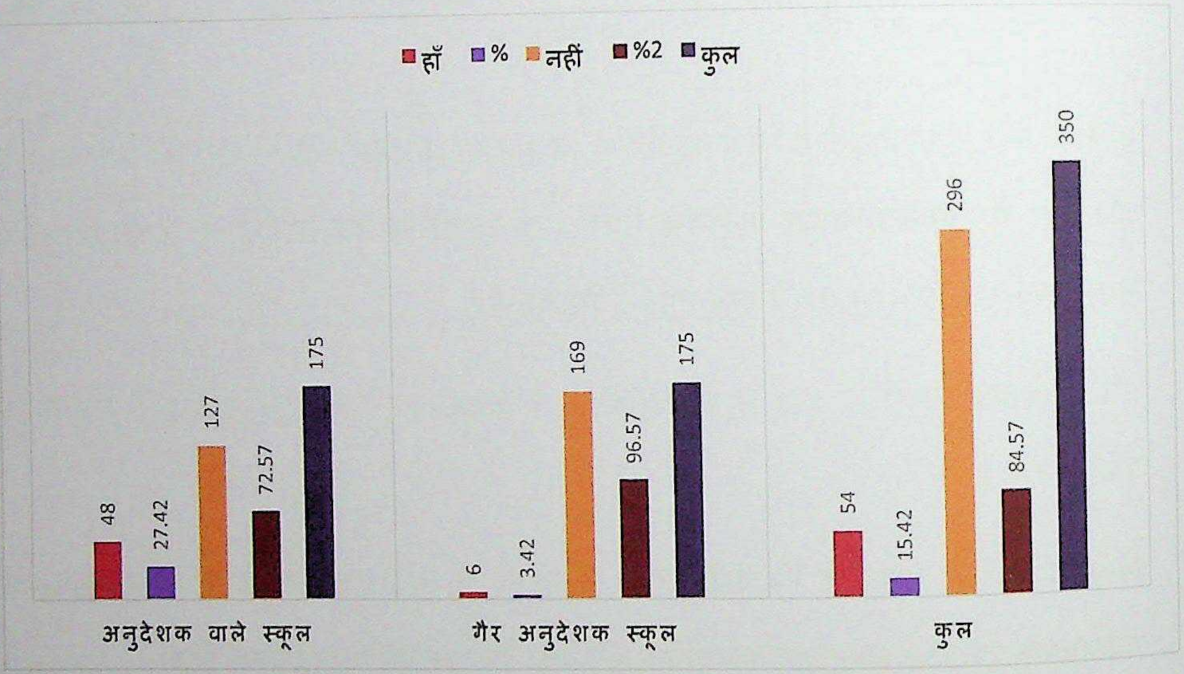

तालिका नंबर 8 यह दर्शाती है कि खेल अवसंरचना विकास समिति की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 48(27.42%) ने सकारात्मक एवं 127(72.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 06(3.42%) ने सकारात्मक एवं 169(96.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 54(15.42%) ने सकारात्मक एवं 296(84.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(38.62) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से ज्यादा है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल अवसंरचना विकास समिति की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

9. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 9 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय द्वारा प्राप्त उपकरण खेल कार्यक्रम चलाए जाने के लिए पर्याप्ता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 9 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	72	41.14	103	58.85	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	83	47.42	92	52.57	175	1.401
कुल	155	44.28	195	55.71	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

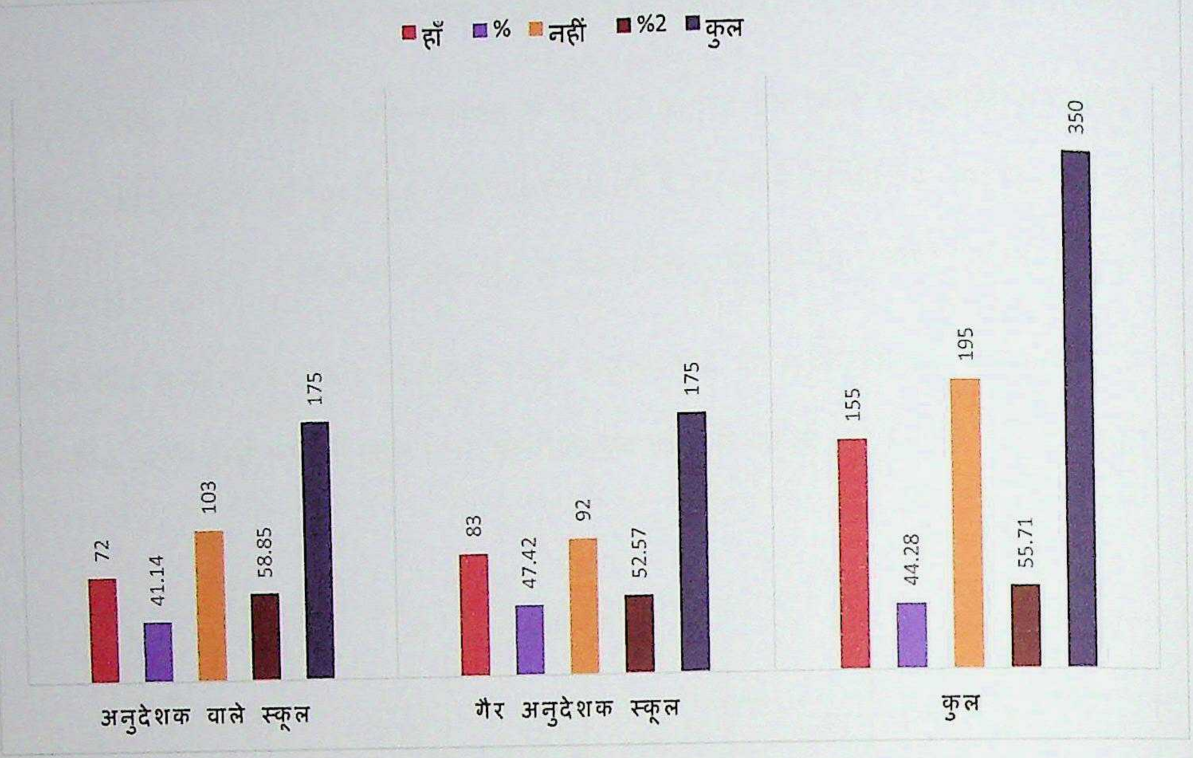

तालिका नंबर 9 यह दर्शाती है कि खेल कार्यक्रम चलाएं जाने के लिए खेल उपकरणों की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 72(41.14%) ने सकारात्मक एवं 103(58.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 83(47.42%) ने सकारात्मक एवं 92(52.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 155(44.28%) ने सकारात्मक एवं 195(55.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(1.401) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल कार्यक्रम चलाएं जाने के लिए खेल उपकरणों की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

10. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 10 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेल उपकरण रखने हेतु स्टोर रूम उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 10 में दर्शाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	05	2.85	170	97.14	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	04	2.28	171	97.71	175	.114
कुल	09	2.57	341	97.42	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 10 यह दर्शाती है कि खेल उपकरण रखने हेतु स्टोर रूम की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 5(2.85%) ने सकारात्मक एवं 170(97.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 4(2.28%) ने सकारात्मक एवं 171(97.17%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 09(2.57%) ने सकारात्मक एवं 341(97.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(.114) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल उपकरण रखने हेतु स्टोर रूम की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

11. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 11 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने हेतु पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 11 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	108	61.71	67	38.28	175	2.986
गैर अनुदेशक स्कूल	92	52.57	83	47.42	175	
कुल	200	57.14	150	42.85	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 11 यह दर्शाती है कि स्कूलों में सुचारू रूप से चलाने हेतु पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 108(61.71%) ने सकारात्मक एवं 67(38.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 92(52.57%) ने सकारात्मक एवं 83(47.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 200(57.14%) ने सकारात्मक एवं 150(42.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(2.986) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में सुचारू रूप से चलाने हेतु पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 12 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेल उपकरणों एवं खेल मैदानों के रख-रखाव हेतु ग्राउंडमैन उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 12 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	00	00	350	100	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 12 यह दर्शाती कि खेल उपकरणों एवं खेल मैदानों के रख-रखाव हेतु ग्राउंडमैन उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल उपकरणों एवं खेल मैदानों के रख-रखाव हेतु ग्राउंडमैन उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

13. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 13 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में शारीरिक शिक्षा गतिविधियों और कक्षा–कक्षा शिक्षण के मध्य उचित अनुपात के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 13 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	85	48.57	90	51.42	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	68	38.85	107	61.14	175	3.356
कुल	153	43.71	197	56.28	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 13 यह दर्शाती है कि गतिविधियों और कक्षा–कक्षा शिक्षण के मध्य उचित अनुपात की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 85(48.57%) ने सकारात्मक एवं 90(51.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 68(38.85%) ने सकारात्मक एवं 107(61.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 153(43.71%) ने सकारात्मक एवं 197(56.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(3.356) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में गतिविधियों और कक्षा–कक्षा शिक्षण के मध्य उचित अनुपात की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 14 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में अलग से स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 14 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	107	61.14	68	38.85	175	154.11
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	107	30.57	243	69.42	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 14 यह दर्शाती है कि स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से107(61.14%) ने सकारात्मक एवं 68(38.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 107(26%) ने सकारात्मक एवं 243(69.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(154.11) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में से स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

15. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 15 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय के पास आवश्यकता के अनुरूप स्वयं का आउटडोर खेल मैदान की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 15 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	15	8.57	160	91.42	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	09	5.14	166	94.85	175	1.61
कुल	24	6.85	326	93.14	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 15 यह दर्शाती है कि आवश्यकता के अनुरूप स्वयं का आउटडोर खेल मैदान की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 15(8.57%) ने सकारात्मक एवं 160(91.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 09(5.14%) ने सकारात्मक एवं 166(94.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 24(6.85%) ने सकारात्मक एवं 326 (93.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(1.61) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में आवश्यकता के अनुरूप स्वयं का आउटडोर खेल मैदान की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 16 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में शारीरिक शिक्षा शिक्षक की उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 16 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	350
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	175	50	175	50	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 16 यह दर्शाती है कि शारीरिक शिक्षा शिक्षक की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 175(50%) ने सकारात्मक एवं 175(50%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(350) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में शारीरिक शिक्षा शिक्षक की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

17. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 17 की आवश्यकता जिसमे शारीरिक शिक्षा शिक्षक की योग्यता निर्धारित मानकों के अनुरूप है या नहीं के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 17 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	350
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	175	50	175	50	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

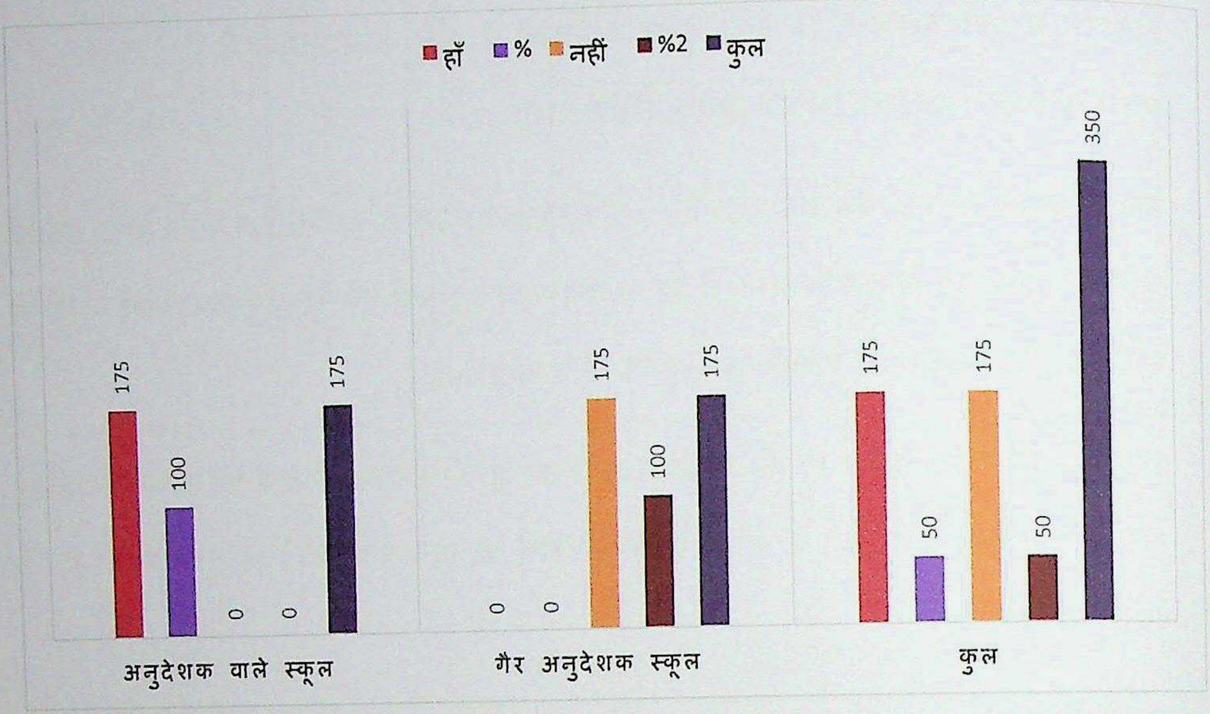

तालिका नंबर 17 यह दर्शाती है कि शारीरिक शिक्षा शिक्षक की योग्यता निर्धारित मानकों के अनुरूपता के प्रति-उत्तर मे शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 175(50%) ने सकारात्मक एवं 175(50%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(350)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में शारीरिक शिक्षा शिक्षक की योग्यता निर्धारित मानकों के अनुरूपता मे सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

18. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 18 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में विधार्थियो के लिए लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 18 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	175	100	00	00	175	∞
कुल	350	100	00	00	350	

रेखा-चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका नंबर 18 यह दर्शाती है कि विधार्थियो के लिए लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 350(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी ओर इसे पूर्णतया स्वीकार किया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में विधार्थियो के लिए लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

19. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 19 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में छात्रों हेतु शारीरिक स्वास्थता परीक्षण लागू किये जाने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 19 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	28	16	147	84	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	18.788
कुल	28	8	322	92	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 19 यह दर्शाती है कि छात्रों हेतु शारीरिक स्वास्थता परीक्षण लागू किया जाने की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 28(16%) ने सकारात्मक एवं 147(84%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 28(8%) ने सकारात्मक एवं 322(92%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(18.78) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में छात्रों हेतु शारीरिक स्वास्थता परीक्षण लागू किया जाने की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

20. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 20 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय बच्चों को उनके आयु वर्ग के अनुरूप खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 20 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	168	96	07	04	175	153.32
गैर अनुदेशक स्कूल	57	32.57	118	67.42	175	
कुल	225	64.28	125	35.71	350	

रेखा-चित्र

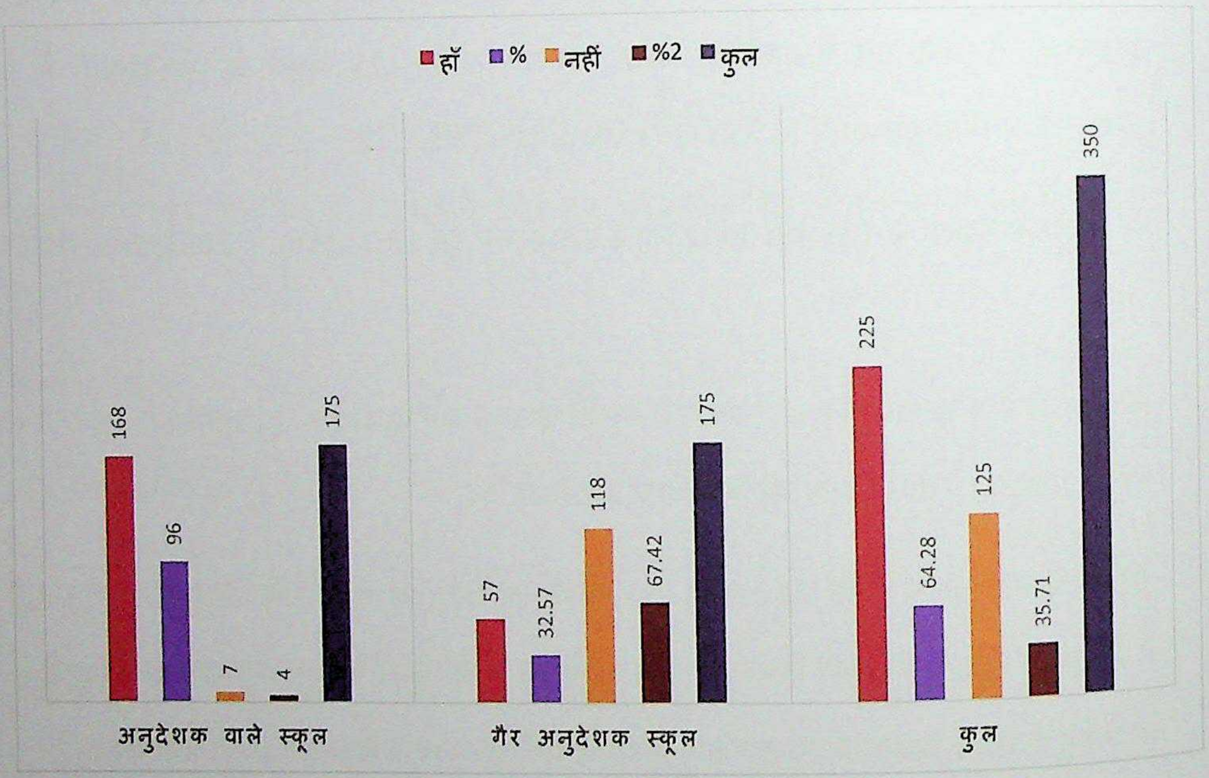

तालिका नंबर 20 यह दर्शाती है कि विद्यालय बच्चों को उनके आयु वर्ग के अनुरूप खेल सुविधाओं की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 168(96%) ने सकारात्मक एवं 07(4%) नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 57(32.57%) ने सकारात्मक एवं 118(67.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 225(26%) ने सकारात्मक एवं 125(74%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(153.52) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में विद्यालय बच्चों को उनके आयु वर्ग के अनुरूप खेल सुविधाओं की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

21. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 21 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में पर्याप्त शारीरिक शिक्षा कक्षाएं उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 21 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	151	86.28	24	13.71	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	265.577
कुल	151	43.14	199	56.85	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 21 यह दर्शाती है कि पर्याप्त शारीरिक शिक्षा कक्षाएं उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 15(86.28%) ने सकारात्मक एवं 24(13.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 151(43.14%) ने सकारात्मक एवं 199(56.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(265.577) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में स्कूल में पर्याप्त शारीरिक शिक्षा कक्षाएं उपलब्धता में सार्थक पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

22. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 22 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय समय के अतिरिक्त भी बच्चों को खेल सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 22 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	08	4.57	167	95.42	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	8.187
कुल	08	2.28	342	97.71	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 22 यह दर्शाती है कि में विद्यालय समय के अतिरिक्त भी बच्चों को खेल सुविधाओं की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 08(4.57%) ने सकारात्मक एवं 167(95.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 08(2.28%) ने सकारात्मक एवं 342(97.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(8.187) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में विद्यालय समय के अतिरिक्त भी बच्चों को खेल सुविधाओं की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

23. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 23 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय बच्चों एवं स्टाफ को एक साथ खेल गतिविधियां प्रदान करने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 23 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	169	96.57	06	3.42	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	101	57.71	74	42.28	175	74.90
कुल	270	77.14	80	22.85	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 23 यह दर्शाती है कि बच्चों एवं स्टाफ को एक साथ खेल गतिविधियां की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 169(96.57%) ने सकारात्मक एवं 06(3.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 101(57.71%) ने सकारात्मक एवं 74(42.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 270(77.14%) ने सकारात्मक एवं 80(22.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(74.90).05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में क्या स्कूल बच्चों एवं स्टाफ को एक साथ खेल गतिविधियां की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 24 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय द्वारा बच्चों से खेल की फीस लेने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 24 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	00	00	350	100	350	

रेखा-चित्र

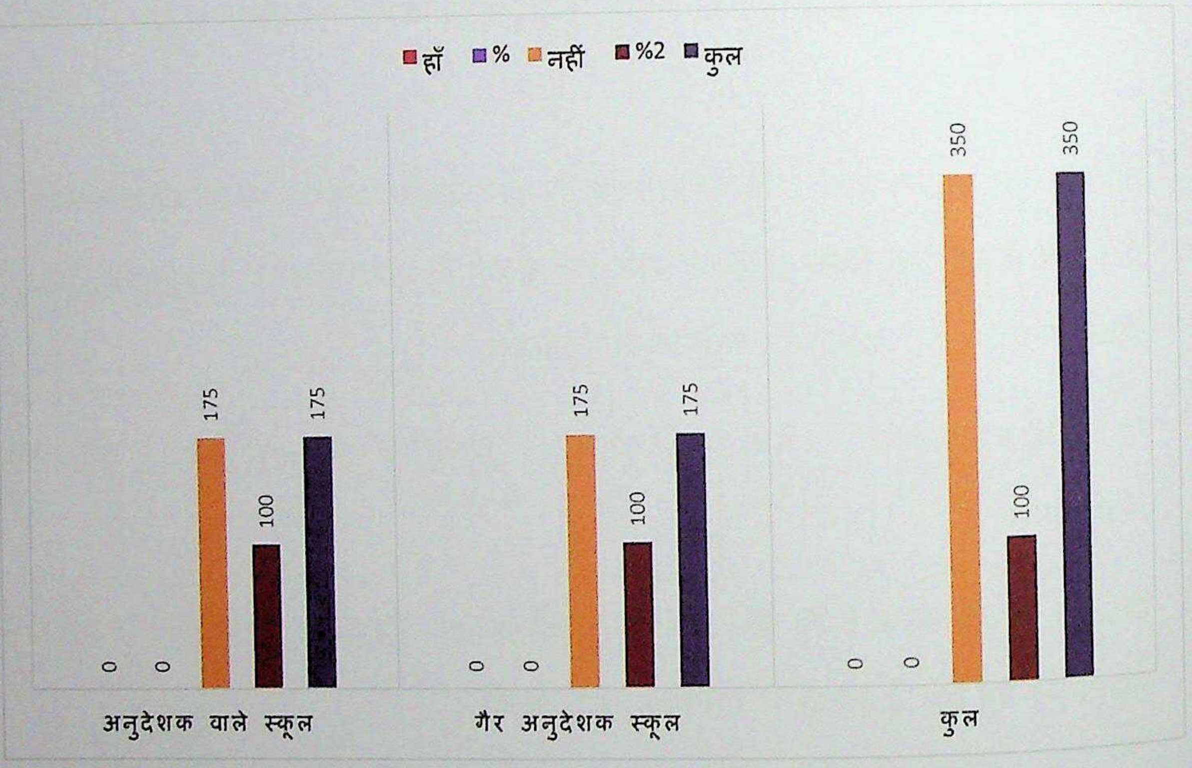

तालिका नंबर 24 यह दर्शाती है कि स्कूल द्वारा बच्चों से खेल की फीस लेने के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूल द्वारा बच्चों से खेल की फीस ली जाती है में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

25. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 25 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में विधार्थियो के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 25 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	93	53.14	82	46.85	175	157.85
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	93	26.57	257	73.42	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 25 यह दर्शाती है कि विधार्थियो के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 93(53.14%) ने सकारात्मक एवं 82(46.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 93(26.57%) ने सकारात्मक एवं 257(73.42%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(157.85) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में विधार्थियो के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 26 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्रतियोगिताएं आयोजित कराने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 26 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	107	61.14	68	38.85	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	154.115
कुल	107	30.57	243	69.43	350	

रेखा-चित्र

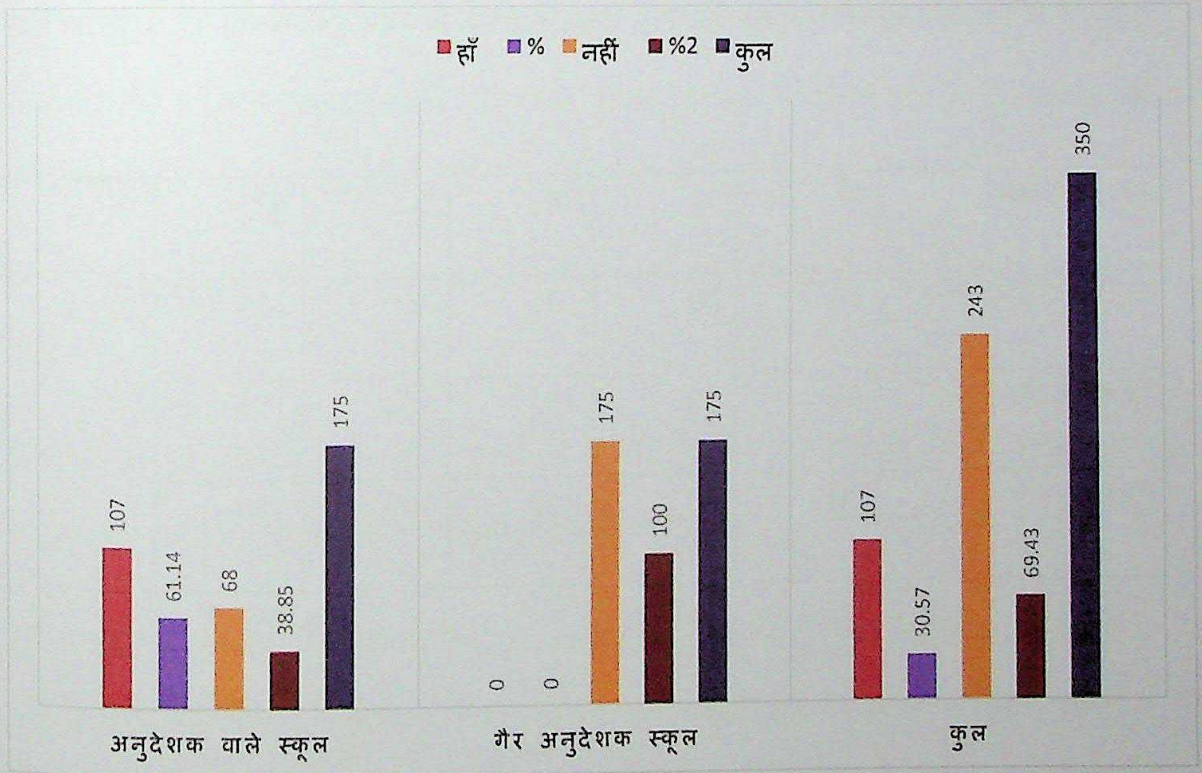

तालिका नंबर 26 यह दर्शाती है कि इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्रतियोगिताएं आयोजन की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 107(61.14%) ने सकारात्मक एवं 68(38.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 107(30.57%) ने सकारात्मक एवं 243(69.43%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(154.115) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्रतियोगिताएं आयोजन की उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

27. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 27 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेलकूद संचालन हेतु निजी एजेंसियां नियुक्त करने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 27 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	∞
कुल	00	00	350	100	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 27 यह दर्शाती है कि स्कूल में खेलकूद संचालन हेतु निजी एजेंसियां नियुक्त है के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेलकूद संचालन हेतु निजी एजेंसियां नियुक्त है में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 28 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय द्वारा गर्मी की छुट्टियों के दौरान विशेष कोचिंग कार्यक्रम आयोजित किये जाने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 28 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	∞
कुल	00	00	350	100	350	

रेखा-चित्र

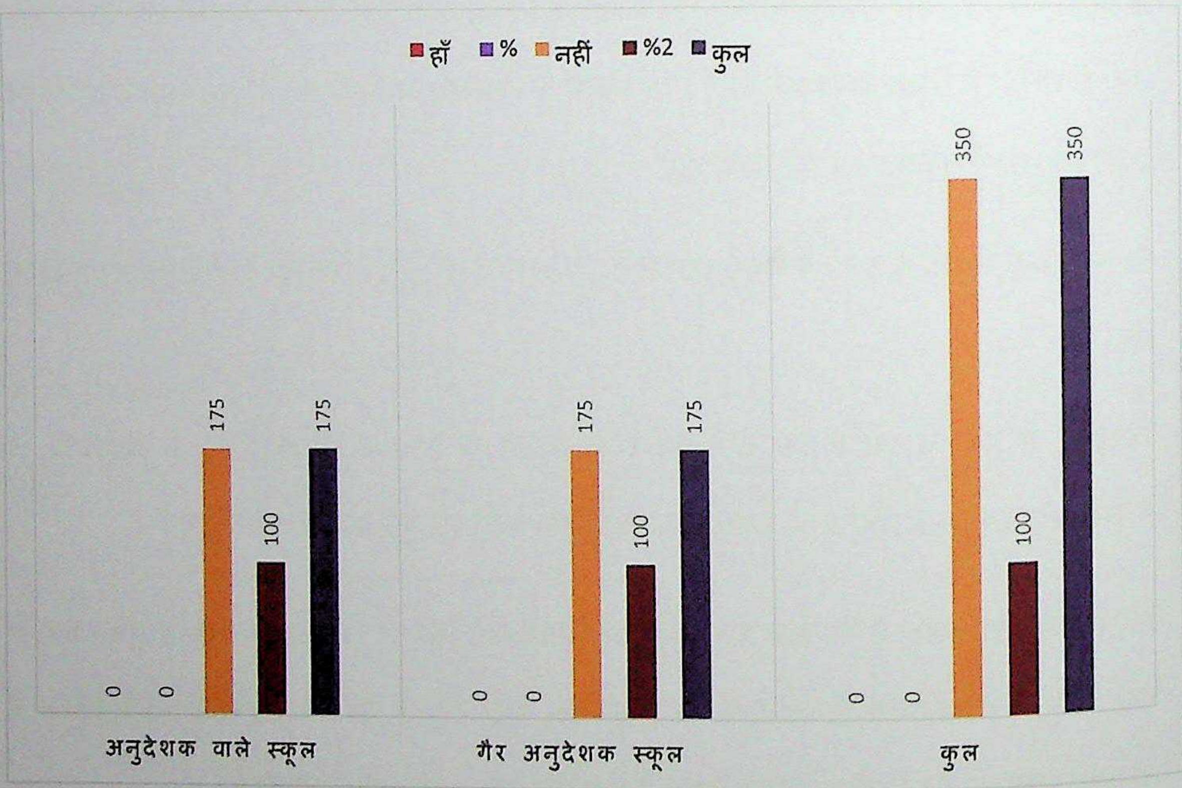

तालिका नंबर 28 यह दर्शाती है कि गर्मी की छुट्टियों के दौरान कोई विशेष कोचिंग कार्यक्रम आयोजन के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों द्वारा गर्मी की छुट्टियों के दौरान कोई विशेष कोचिंग कार्यक्रम आयोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

29. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 29 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए खेल प्रदर्शन की व्यवस्था करने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 29 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	101	57.71	74	42.28	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	37	21.14	138	78.85	175	49.00
कुल	138	39.42	212	60.57	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

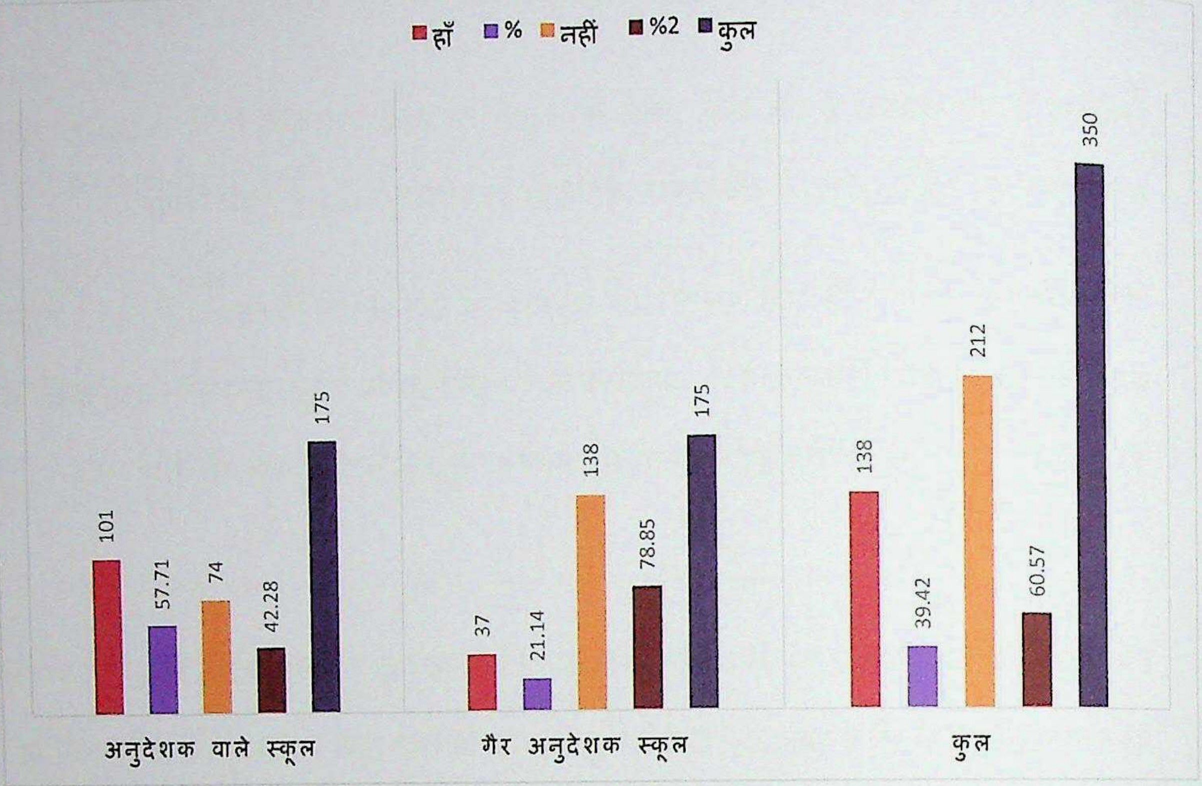

तालिका नंबर 29 यह दर्शाती है कि विद्यार्थियों के लिए खेल प्रदर्शन की व्यवस्था उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 101(57.71%) ने सकारात्मक एवं 74(42.28%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 37(21.14%) ने सकारात्मक एवं 138(78.85%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 138(39.42%) ने सकारात्मक एवं 212(60.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(49.00) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए खेल प्रदर्शन की व्यवस्था उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 30 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में बच्चों के लयबद्ध व्यायाम एवं नृत्य कार्यक्रम की व्यवस्था के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 30 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	153	87.42	22	12.57	175	187.300
गैर अनुदेशक स्कूल	25	14.28	150	85.71	175	
कुल	178	50.85	172	49.14	350	

रेखा-चित्र

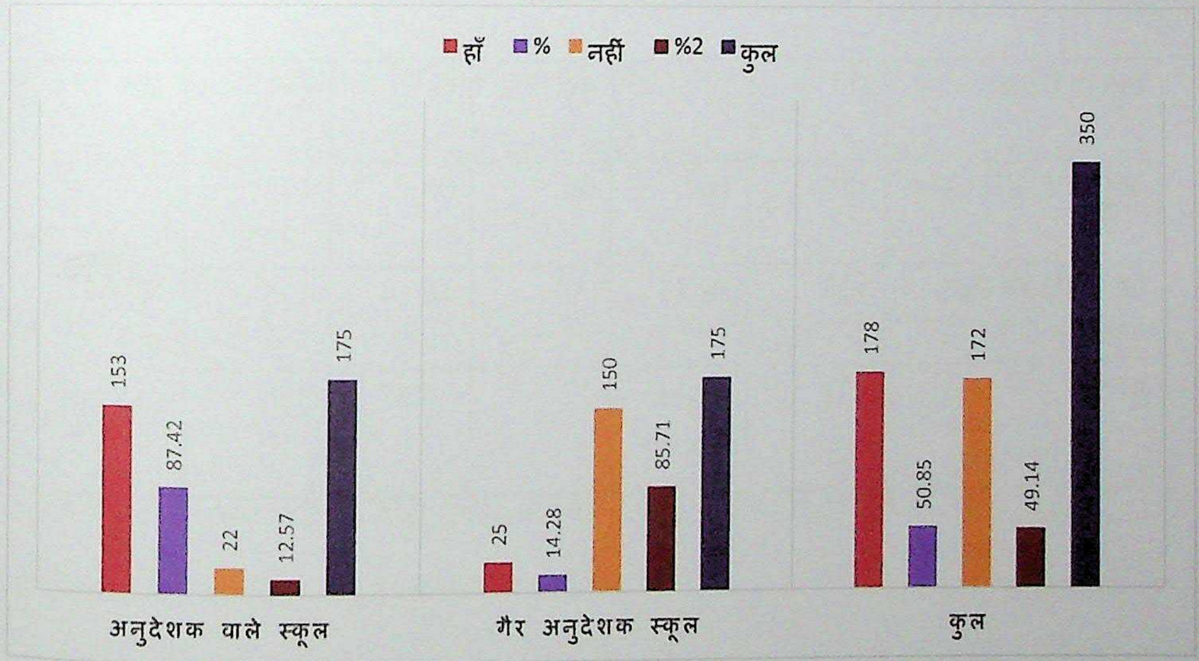

तालिका नंबर 30 यह दर्शाती है कि बच्चों के लयबद्ध व्यायाम एवं नृत्य कार्यक्रम की व्यवस्था उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 153(87.82%) ने सकारात्मक एवं 22(12.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 25(14.28%) ने सकारात्मक एवं 150(85.71%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 178(50.85%) ने सकारात्मक एवं 172(49.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(187.300).05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में बच्चों लयबद्ध व्यायाम एवं नृत्य कार्यक्रम की व्यवस्था उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

31. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 31 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेल दिवस/ वार्षिक उत्सव मनाये जाने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 31 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	103	58.85	72	41.14	175	90.647
कुल	278	79.42	72	20.57	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

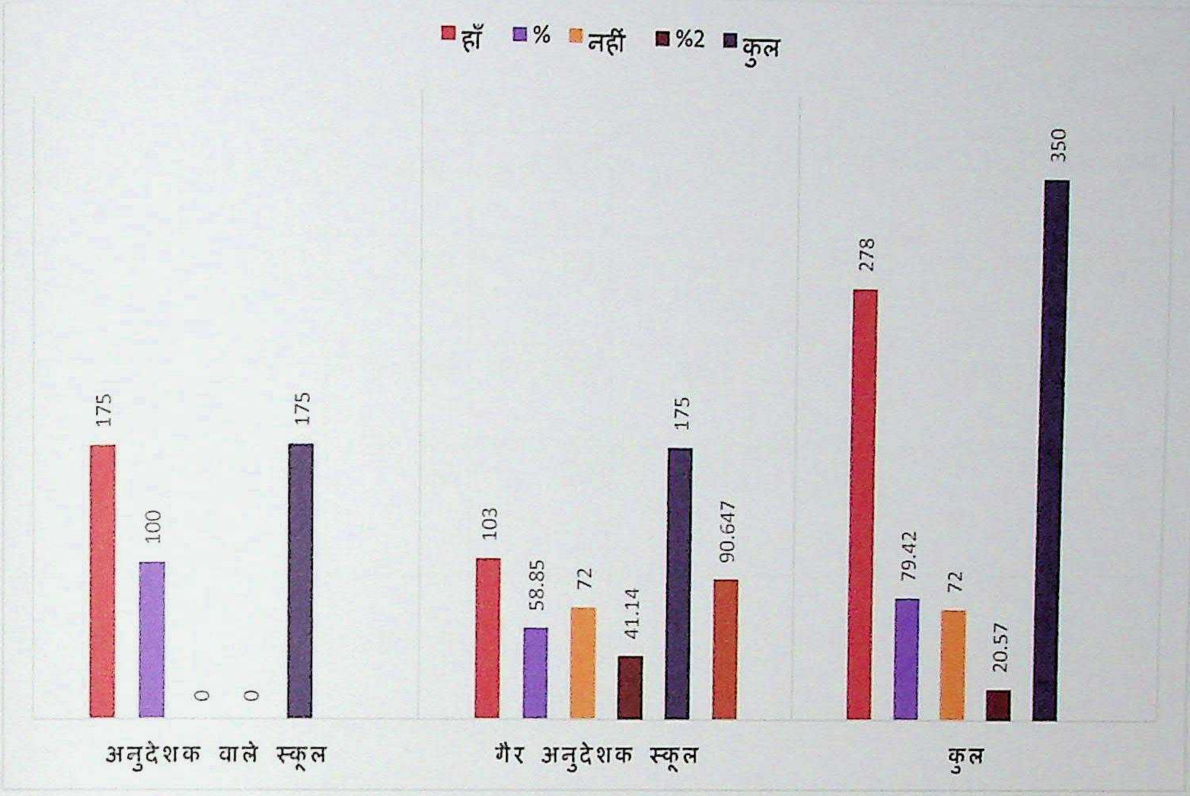

तालिका नंबर 31 यह दर्शाती है कि खेल दिवस/ वार्षिक उत्सव मनाये जाने के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 103(58.85%) ने सकारात्मक एवं 72(41.14%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 278(79.42%) ने सकारात्मक एवं 72(20.57%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(90.647) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल दिवस/ वार्षिक उत्सव मनाये जाने में सार्थक अंतर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 32 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेल एवं शारीरिक शिक्षा के लिए वार्षिक बजट उपलब्धता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 32 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	175	100	00	00	175	
कुल	350	100	00	00	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 32 यह दर्शाती है कि खेल एवं शारीरिक शिक्षा के लिए वार्षिक बजट की उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 350(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी ओर इसे पूर्णतया स्वीकार किया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल एवं शारीरिक शिक्षा के लिए वार्षिक बजट की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

33. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 33 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय में खेलों के लिए प्राप्त बजट पर्याप्त के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 33 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	35	20	140	80	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	70	40	105	60	175	16.6667
कुल	105	30	245	70	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 33 यह दर्शाती है कि खेलों के लिए प्राप्त बजट उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 35(20%) ने सकारात्मक एवं 140(80%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 70(40%) ने सकारात्मक एवं 105(60%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 105(30%) ने सकारात्मक एवं 245(70%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त X^2(16.6667) .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त X^2(3.84) से अधिक है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि गैर अनुदेशक एवं अनुदेशक वाले स्कूलों में खेलों के लिए प्राप्त बजट उपलब्धता में सार्थक अंतर पाया गया।

34. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 34 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय की किसी अन्य बाहरी स्रोत से किसी आय के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 34 में दर्शाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	00	00	350	100	350	

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 34 यह दर्शाती है कि किसी अन्य बाहरी स्रोत से स्कूल की कोई आय के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलो में किसी अन्य बाहरी स्रोत से स्कूल की कोई आय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

35. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 35 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय खेल उपकरण हेतु वार्षिक बजट उपलब्ध के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 35 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	175	100	00	00	175	
कुल	350	100	00	00	350	

रेखा-चित्र

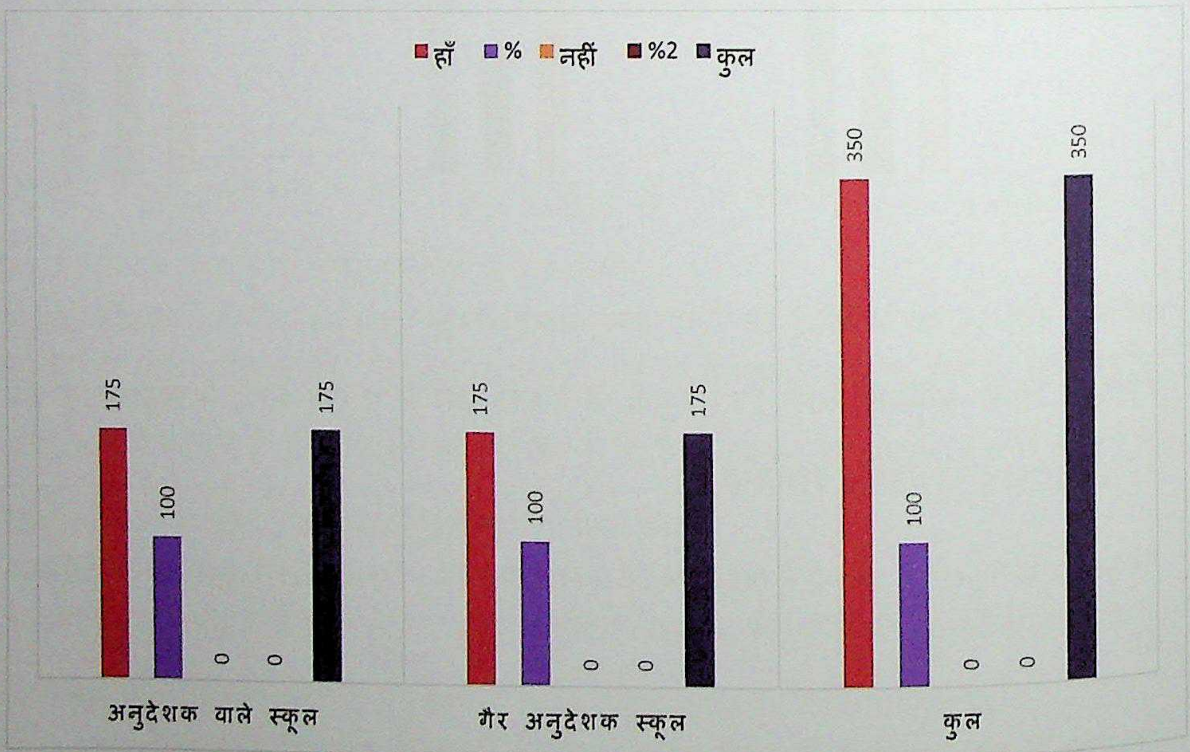

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका नंबर 35 यह दर्शाती है कि खेल उपकरण हेतु वार्षिक बजट उपलब्धता के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 350(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी ओर इसे पूर्णतया स्वीकार किया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में खेल उपकरण हेतु वार्षिक बजट उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

36. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 36 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय को किसी स्पेशल प्रोग्राम के लिए विद्यालय बजट के अतिरिक्त तदर्थ अनुदान प्राप्त होता के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 36 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	00	00	175	100	175	∞
गैर अनुदेशक स्कूल	00	00	175	100	175	
कुल	00	00	350	100	350	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका नंबर 36 यह दर्शाती है कि किसी स्पेशल प्रोग्राम के लिए विद्यालय बजट के अतिरिक्त प्राप्त तदर्थ अनुदान प्राप्ति के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 175(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 00(00%) ने सकारात्मक एवं 350(100%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया देकर इसे पूरी तरह से नकार दिया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूल किसी स्पेशल प्रोग्राम के लिए विद्यालय बजट के अतिरिक्त प्राप्त तदर्थ अनुदान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37. प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 37 की आवश्यकता जिसमे विद्यालय सरकारी मानकों के अनुरूप अपने शिक्षकों को वेतन देने के बारे में एकत्र जानकारी का तुलनात्मक विवेचन सूची संख्या 37 में दर्शाया गया है।

स्कूलों के प्रकार	हाँ	%	नहीं	%	कुल	X^2
अनुदेशक वाले स्कूल	175	100	00	00	175	
गैर अनुदेशक स्कूल	175	100	00	00	175	∞
कुल	350	100	00	00	350	

रेखा-चित्र

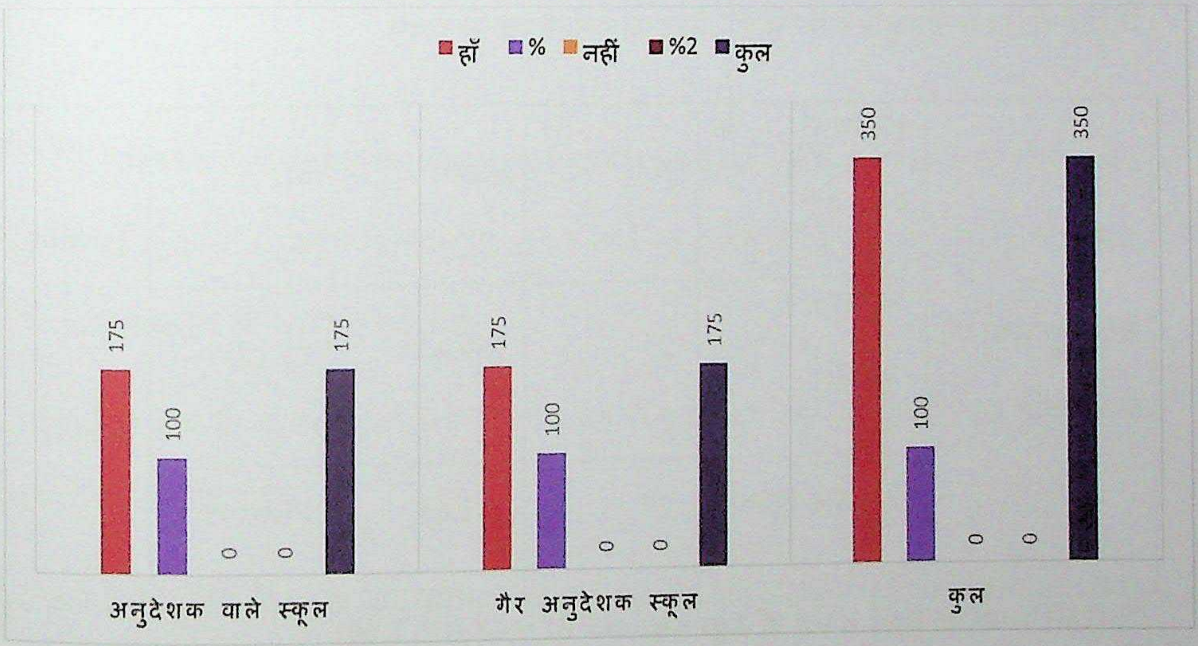

तालिका नंबर 37 यह दर्शाती है कि सरकारी मानकों के अनुरूप अपने शिक्षकों को वेतन देने के प्रति-उत्तर में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले 175 स्कूलों के उत्तरदाताओं में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

गैर अनुदेशक स्कूलों के 175 में से 175(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों प्रकार के स्कूलों के 350 उत्तरदाताओं में से 350(100%) ने सकारात्मक एवं 00(00%) ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी ओर इसे पूर्णतया स्वीकार किया।

परिणाम से पता चलता है कि प्राप्त $X^2(\infty)$ .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त $X^2(3.84)$ से कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक वाले स्कूलों एवं गैर अनुदेशक वाले स्कूलों में सरकारी मानकों के अनुरूप अपने शिक्षकों को वेतन देने में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि

सहारनपुर जिले के महिला अनुदेशकों व पुरुष अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर

तालिका – 1

अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर के टी -टेस्ट का वर्णनात्मक विश्लेषण

	अनुदेशकों के प्रकार	N	Mean	SD	T-value
चर-अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि	अनुदेशक (महिला)	25	169.48	25.1911	6.0041
	अनुदेशक (पुरुष)	25	133.68	15.9445	

***Significant at 0.05 level of significance df = 48 (t = 2.00)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

तालिका – 1 में सहारनपुर मण्डल के सहारनपुर जिले की महिला अनुदेशको की कार्य संतुष्टि का माध्य169.480 व मानक विचलन 25.1911 तथा पुरुष अनुदेशको की कार्य संतुष्टि का माध्य 133.680 व मानक विचलन 15.9445 है।

आंकड़ों से प्राप्त टी मान(6.0041) df 48 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान(2.00) से अधिक है।

आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि महिला अनुदेशको एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुजफ्फरनगर जिले के महिला अनुदेशकों व पुरुष अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर

तालिका – 2

अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर के टी -टेस्ट का वर्णनात्मक विश्लेषण

	अनुदेशकों के प्रकार	N	Mean	SD	T-value
चर-अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि	अनुदेशक (महिला)	12	149.00	9.835	7.935
	अनुदेशक (पुरुष)	12	123.916	4.813	

***Significant at 0.05 level of significance df = 22 (t = 2.074)**

रेखा-चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका 2 में महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का माध्य149.000 व मानक विचलन 9.835 है एवं पुरुष अनुदेशकों कार्य संतुष्टि का माध्य 128.916 व मानक विचलन 4.813 है।

आंकड़ों से प्राप्त टी मान 7.935 df 22 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 2.074 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि महिला अनुदेशको एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

शामली जिले के महिला अनुदेशकों व पुरुष अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर

तालिका – 3

अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर के टी -टेस्ट का वर्णनात्मक विश्लेषण

	अनुदेशकों के प्रकार	N	Mean	SD	T-value
चर-अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि	अनुदेशक (महिला)	15	140.666	9.839	5.3978
	अनुदेशक (पुरुष)	15	125.133	5.235	

***Significant at 0.05 level of significance df = 28 (t=2.048)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

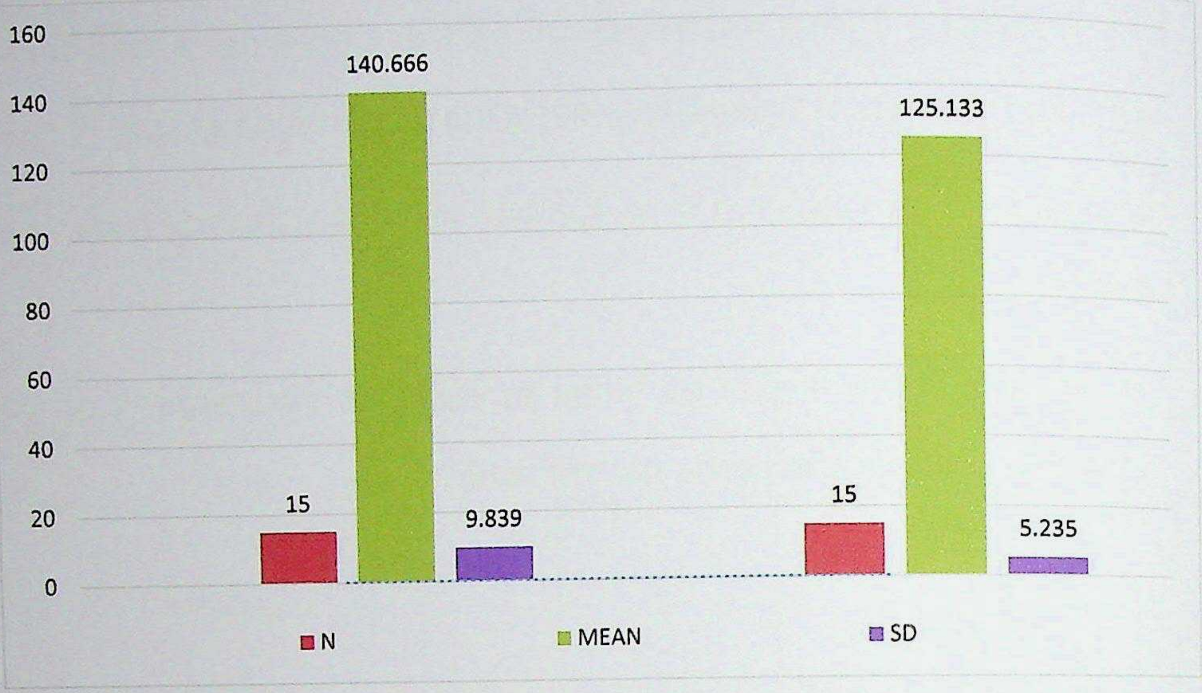

तालिका 3 में महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का माध्य 140.666 है एवं मानक विचलन 9.835 है तथा पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का माध्य 125.133 है एवं मानक विचलन 5.235 है।

आंकड़ों से प्राप्त टी मान 5.3978 df 28 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 2.048 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि महिला अनुदेशकों एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहारनपुर मण्डल के महिला अनुदेशकों व पुरुष अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर

तालिका – 4

अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर के टी -टेस्ट का वर्णनात्मक विश्लेषण

	अनुदेशकों के प्रकार	N	Mean	SD	T-value
चर-अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि	अनुदेशक (महिला)	52	156.44	22.707	7.6666
	अनुदेशक (पुरुष)	52	128.96	12.348	

***Significant at 0.05 level of significance df = 102 (t = 1.962)**

रेखा-चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका 4 में सहारनपुर मण्डल की महिला अनुदेशकों एवं पुरुष अनुदेशकों से प्राप्त कार्य संतुष्टि के आंकड़ों का माध्य 156.44 एवं मानक विचलन 22.707 है। पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का माध्य 128.96 एवं मानक विचलन 12.384 है। आंकड़ों से प्राप्त टी मान 7.6666 df 102 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 1.962 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि महिला अनुदेशक पुरुष अनुदेशकों से अधिक संतुष्ट पायी गयी। महिला अनुदेशकों एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय

सारांश, निष्कर्ष और सुझाव

शिक्षा व्यक्ति को तर्कसंगत, परिपक्व एवं जानकार इंसान बनाने के लिए सर्वोत्तम तरीके से तैयार की गई एक प्रणाली है। व्यापक अर्थों में शिक्षा कुशल जीवन के लिए तैयारी करना है। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति का चहुंमुखी विकास करना होता है। शिक्षा एक अहर्निश चलने वाली वह प्रक्रिया है जो मानव में सर्वोत्म जैविक स्वास्थ्य, भावनात्मक जीवन शक्ति, सामाजिक चेतना, नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों को विकसित कर सम्पूर्ण दृष्टिकोण को विकसित करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने एवं इसमें फिट होने के तरीके तलाश करता है। व्यक्ति के व्यवाहरिक दृष्टिकोण में अंतर शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। व्यवाहरिक दृष्टिकोण कार्य को करके सीखने पर प्रकाश डालता है। कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, खेल का मैदान, व्यायामशाला, घर, यात्राएं इत्यादि सब वह स्थान है जहाँ पर कार्य को किये बिना सीखना असम्भव होता है।

शारीरिक शिक्षा; शारीरिक फिटनेस, कार्य दक्षता, मानसिक सतर्कता, चारित्रिक विकास इत्यादि गुणों के विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में चल रहे शारीरिक शिक्षा संबन्धी कार्यक्रमों को बालकों की वृद्धि एवं समुचित विकास हेतु पुनः जाँचने, परखने एवं नये से डिजाइन करने की आवश्यकता है। माध्यामिक शिक्षा आयोग ने स्कूलों में सभी चरणों हेतु शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम को अनिवार्य कर दिया है। परन्तु वर्तमान की स्थिति यह है कि सभी के लिए समान शिक्षा कानून होने के बावजूद भी कुछ स्कूलों के विद्यार्थियो का शारीरिक शिक्षा शिक्षक(अनुदेशक) उपलब्ध है और कुछ में उपलब्धता नहीं है। जिसके कारण एक समान शिक्षा संभव नहीं हो पा रही है।विभिन्न स्कूलों में शारीरिक शिक्षा विषय के लिए एक समान व्यवस्थाएं नही हैं।

शारीरिक शिक्षा; शिक्षा का वह चरण है जो व्यक्ति के शारीरिक विकास, मानव कल्याण से संबद्ध है जो मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, नैतिक गुणों को प्रभावित करती है। शिक्षा जहाँ कक्षा-कक्ष एंव बालक की मानसिक स्थितियों से संबद्ध रखती है वही शारीरिक शिक्षा मुख्य रूप ये माँसपेशी की गतिविधियों की विशेषता वाली स्थितियों एवं प्रतिक्रियाओ से संबंधित है। मांसपेशी प्रक्रियाओं एवं गतिविधियों से तात्पर्य यह नहीं है कि यह केवल शरीर के लिए ही है क्योकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का वास होता है। अर्थात जीवन के प्रत्येक पहलू में उच्चता लाने हेतु शारीरिक शिक्षा अति महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षा में नए रुझान, नई तकनीके शैक्षिक उन्नति क्षेत्र के विकास को निश्चित करते है। सरकार विकास हेतु नई नितियां बनाती है उनको लागू करती है। जब बात शिक्षा के वृहत क्षेत्र शारीरिक शिक्षा की करते है तो पाते है कि पश्चिम उत्तरप्रदेश के सबसे पश्चिम में स्थित सहारनपुर मंडल में उच्च प्राथमिक स्तर पर कि यह नगण्य एवं अभावग्रस्त प्रतीत होती है। सर्वेक्षण के माध्यम से किये गये इस शोध के आधार पर शोधार्थी सहारनपुर मण्डल के उच्च प्राथमिक विधालयों में शारीरिक शिक्षा के दृष्टिकोण से उपलब्ध कुछ स्कूलों मे शारीरिक शिक्षा अनुदेशको की कार्य संतुष्टि की स्थिति, खेल कराने हेतु, बच्चो के समग्र विकास हेतु उपलब्ध खेल संसाधनों एंव अनुदेशको की न्यूक्ति के पश्चात बच्चों की खेल उपलब्धियों पर क्षेत्रीय अधिकारियों, उत्तर प्रदेश सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहेगें।

परिकल्पना परीक्षण (Hypothesis Testing)

शोध हेतु शोधार्थी ने शोध साहित्य के अध्ययन के उपरांत परिकल्पनाओं का निर्माण किया -

1.सहारनपुर मंडल के अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक विद्यालयों के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियों में संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना चुनाव का प्रथम आधार यह था कि स्कूलों में नियुक्त अनुदेशक बी पी एड किए हुए है जबकि कोच के लिए योग्यता NSNIS चाहिए होती है, एक अन्य कारण यह था कि अनुदेशकों का वेतनमान 7000/माह है जो नियुक्ति से अभी तक जस का तस बना हुआ है। अन्य शोध यथा – **E Jagran (2018)** में बताया गया कि अंधारठाढी प्रखण्ड, मधुबनी बिहार में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है परंतु सरकारी स्कूलों मे खेल प्रतिभाएं संसाधनों के अभाव में दम तोड़ रही है। कईं स्कूलों मे खेल के मैदान ही उपलब्ध नहीं है, जहां मैदान है वहाँ बुनियादी सुविधाओं एवं जागरूकता का अभाव है। कार्यरत एक शिक्षक ने बताया कि स्कूल में लगभग 500 बच्चें है, कुछ बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं मगर खेल के नाम पर कोई सरकारी सहायता प्राप्त नहीं है। क्रिकेट से जुड़े खिलाड़ी ने बताया कि भारत विश्व स्तर पर खेलों में अति पिछड़ा हुआ है जिसका प्रमुख कारण विधालयों में खेल सुविधाओं का अभाव है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार को चाहिए कि विधालयों में शिक्षा की भांति खेलकूद को भी अनिवार्य अंग के रूप में लागू किया जाए।

Brian T. Gearity (2011) ने "Athletes experiences of the psychological effects of poor coaching" नामक शोध अध्ययन किया अध्ययन का उद्देश्य कॉलेज स्तर, पेशेवर और अर्ध-पेशेवर एथलीटों द्वारा रिपोर्ट की गई खराब कोचिंग के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का वर्णन करना था। इस शोध हेतु नमूने के तौर पर 16 एथलीटों का चयन किया गया। सभी प्रतिभागियों को खराब कोचिंग के अपने अनुभवों का वर्णन करने के लिए कहा गया। सभी प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड किया गया, प्रतिलेखित किया गया, और प्राप्त ऑकड़ों एक श्रृंखला के माध्यम से विश्लेषण किया गया, जिससे पांच विषयों की पहचान हुई जो खराब कोचिंग के साथ एथलीटों के अनुभवों को बताते है। एथलीटों द्वारा दिए गये प्रति उत्तरों के आधार पर बनी रिपोर्ट में पांच विषय थे; कोच द्वारा खराब शिक्षण, लापरवाही, अनुचित व्यवाहर, एथलीट के मानसिक कौशल में बाधा डालना, और एथलीट को एक से अधिक खेलों की कोचिंग देना। इनमें से दो विषय एथलीट के मानसिक कौशल और एथलीट को एक से अधिक खेलों की कोचिंग देना ऐसे हैं जो मनोवैज्ञानिक संरचनाओं से निकटता से जुड़े हुए हैं। एथलीटो ने मानसिक कौशल को बाधित करने का कारण उन खराब कोचों से जुड़ा हुआ बताया, जो ध्यान भटकाने वाले, आत्म-संदेह पैदा करने वाले, हतोत्साहित करने वाले और टीम को विभाजित करने वाले थे।

कुमार, वीरेन्द्र (2010) द्वारा किए गये शोध अध्ययन "भारत में खेलों का विकास का विवेचनात्मक अध्ययन" में पाया कि खेल एवं शारीरिक शिक्षा तक पहुँचने के मौके सभी क्षेत्रों में काफी कम हैं, इनमें बच्चियों का प्रतिभाग बच्चों की अपेक्षा काफी कम है एवं भारत में दिव्यांगों हेतु खेल सुविधाएं लगभग न के बराबर हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले एथलीटों के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी सुविधाएं अर्याप्त है। वर्ष 2002 में प्राथमिक, उच्च्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में क्रमशः 39, 57 एवं 78 प्रतिशत खेल के मैदान उपलब्ध हैं; भारत के 10.31 लाख में से केवल 48 प्रतिशत विद्यालयों के पास ही खेल मैदान उपलब्ध है।

उपरोक्त शोध खराब कोचिंग के प्रभाव एवं संसाधनों की कमी को दर्शाते है। वर्तमान शोध में किए अध्ययन में अनुदेशक वाले स्कूलों के बच्चों की खेल उपलब्धियां गैर अनुदेशक स्कूलों के बच्चों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल उपलब्धियों से अधिक पाई गयी अतः शोध से प्राप्त आँकड़ें यह बताते है कि अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक वाले जूनियर हाई स्कूलों के बच्चों की खेल उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया गया। किए गये शोध के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

2.सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक वाले जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल संसाधनों के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना चुनाव का प्रथम आधार यह था कि शोध विषय के अंतर्गत एक ही प्रकार के स्कूलों को चुना गया था। अंतर केवल अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक से है। खेल संसाधनों से संबंधित अन्य शोध अध्ययन यथा -**गुप्त तरुण (2019)** इन्होंने बताया कि खेल मानव सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। जब हम खेल से संबन्धित ढांचे की विकसित देशो के मानदंडों पर करते हैं तो खुद एवं विकसित देशों की खेल सुविधाओं के बीच गहरी खाई पाते है। प्रशिक्षण उपकरण, खेल मैदान, प्रतिस्पर्धा, शारीरिक-मानसिक स्वस्थता एव देखभाल के अतिरिक्त पोषण एवं अन्य खस्ताहाल खेल सुविधाएं हमारी खेलो में कमजोरी को बयां करती है। सरकार से मिलने वाली सुविधाएं भी कुछ प्रमुख खेल केंद्रों तक सिमट कर रह गयी है। मुख्यालयों से दूर के केंद्र और समाज के विभिन्न तबके सरकार द्वारा दी जाने वाली इन खेल संसाधनों एवं सुविधाओं से अभी तक वंचित है।

Singh, Dr. Priyanka (2013) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Study of Sports Infrastructures and Facilities in Schools and colleges of Purvanchal" था जिसका उद्देश्य पूर्वाञ्चल के सरकारी स्कूलों एवं प्राइवेट स्कूलों के मध्य खेल संसाधनों एवं खेल सुविधाओं को देखना था। शोध अध्ययन के उपरांत इन्होंने पाया कि खेल अवसंरचना से संबंधित सुविधाएं जैसे बैडमिंटन कोर्ट, कबड्डी कोर्ट, खो-खो कोर्ट, स्विमिंग पूल, टेबल टेनिस, बहुउद्देशीय व्यायाम शाला, खेल अवसंरचन विकास समिति, खेल उपकरण स्टोर रूम उपलब्धता, पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता, स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला, आउटडोर खेल मैदान दोनों स्कूलों में लगभग एक समान पाए गए उनकी उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एथलेटिक ट्रैक, शारीरिक शिक्षा गतिविधियों एवं कक्षा-कक्ष शिक्षण के मध्य उचित अनुपात, लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम, ग्राउंड्स मैन उपलब्धता, खेल उपकरण सुविधा इत्यादि सरकारी स्कूलों में प्राइवेट स्कूलों में सार्थक अन्तर पाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक शिक्षा शिक्षक शिक्षकों की योग्यता, शारीरिक स्वस्थता परीक्षण, खेलने की सुविधा, बच्चों और स्टाफ का एक साथ खेलने की सुविधा, खेल की फीस, कोचिंग कैंप, इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्राइवेट एजेंसी का खेल को संचालित करना इत्यादि में प्राइवेट और सरकारी स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। स्टाफ की सैलरी देने में सरकारी और प्राइवेट स्कूल के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

Sharma, H.N., Dutta, Binita et al(1991) द्वारा प्राथमिक शिक्षा की समस्या की पहचान पर शोध कार्य किया गया। शोध उपरांत इन्होंने पाया कि प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न विद्यालयों के पास ढाँचागत सुविधाओं का अभाव था। 46 प्रतिशत स्कूल ऐसे थे जो बिना भवन थे, 42 प्रतिशत स्कूलों में विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था उचित नहीं थी, बच्चों के स्वास्थ्य और सफाई की समस्या बहुत गम्भीर थी। 61 प्रतिशत स्कूलों में पेयजल की व्यवस्था उचित नहीं थी। 73 प्रतिशत विद्यालयों के पास शौचालय नहीं था। प्राथमिक स्कूलों में खेलकूद अहम हिस्सा है लेकिन 54 प्रतिशत विद्यालय के पास खेल मैदान ही नहीं थे। 58 प्रतिशत स्कूलों के पास खेलकूद के सामानों का अभाव था। 73 प्रतिशत स्कूलों में केवल एक अध्यापक, 19 प्रतिशत में दो अध्यापक एवं 8 प्रतिशत स्कूलों में तीन अध्यापक पाये गये। शिक्षक -छात्र अनुपात केवल एक स्कूल में अधिक 1:11 पाया गया। 24 प्रतिशत स्कूलों में यह अनुपात 1:11 और 1:20 के मध्य था। 48 प्रतिशत मे 1:21 ले 1:30 के मध्य और 28 प्रतिशत स्कूलों में यह अनुपात 1:42 पाया गया। असम सरकार की छात्रों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराने की अव्यवस्थित वितरण मुख्य समस्या थी। 71 प्रतिशत शिक्षकों ने माना कि प्राथमिक शिक्षा की मुख्य समस्या अभिभावकों का असहयोग है। 53 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षक ऐसे थे जो पढ़ाते समय उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग नहीं करते थे। विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति और उनकी शैक्षिक प्रगति के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। 35 प्रतिशत स्कूलों में श्यामपट्ट नहीं था और 81 प्रतिशत स्कूलों के पास कोई धनराशि शैक्षिक मद में नहीं पाई गई।

उपरोक्त शोध संसाधनों के अभाव को दर्शाते है। वर्तमान शोध में किए अध्ययन के आधार पर केवल शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की उपस्थिति ओर उनके कार्यों के आधार पर केवल उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग में सार्थक अंतर पाया गया। संसाधनों की दशा जो खेलों के लिए पर्याप्त नहीं है वह सभी स्कूलों मे एक जैसी पाई गई। किए गये शोध के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना चुनाव का प्रथम आधार यह था कि शोध विषय के अंतर्गत एक ही प्रकार के स्कूलों से समान वेतन एवं समान कार्य वाले पुरुष एवं महिला अनुदेशकों को चुना गया था। कार्य संतुष्टि से संबंधित अनेक शोध यथा -**पटेल सुशीला देवी (2018)** द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" किया। शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि जानने के लिए किया गया था इसके अंतर्गत 100 शिक्षक, 100 शिक्षिकाएं एवं 100 शिक्षामित्रों का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। शोध कार्य हेतु नमूना रायबरेली जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा शिक्षामित्रों को लिया गया। शोध उपरांत प्राप्त परिणामो के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं शिक्षामित्रो की व्यवसयिक संतुष्टि का स्तर अलग-अलग है। जहाँ शिक्षक एवं शिक्षिकाएं अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति सतुष्ट है वहीं शिक्षामित्र शिक्षको एवं शिक्षिकाओं के समान वेतन न मिलने के कारण व्यवसायिक असंतोष को दर्शाते है।

हक एण्ड हसनानीम (2017) द्वारा अपने शोध विषय "लेवल ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ स्कूल टीचर्स इन प्राइवेट सेक्टर बहालपुर" पर शोध कार्य के लिए 105 निजी विद्यालयों के शिक्षको पर अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राइवेट सेक्टर मे कार्यरत शिक्षको की कार्य संतुष्टि देखना था। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होने पाया कि शिक्षको की कार्य संतुष्टि को विद्यालय जलवायु की अपेक्षा वेतन एवं कार्यभार, अधिक प्रभावित करता है।

उपरोक्त शोध अध्यापकों की कार्य संतुष्टि को दर्शाते है। वर्तमान शोध में किए अध्ययन के आधार पर पुरुष एवं महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। प्रस्तुत शोध के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

4.सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि स्कोर संभवत: पुरुष अनुदेशकों से अधिक होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस परिकल्पना चुनाव का प्रथम आधार यह था कि हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है जिसमे ज्यादातर महिलाएं पुरुषों पर ही आश्रित है घर का खर्च चलाने का दायित्व पुरुष का माना जाता है। दूसरा ये कि महिला अनुदेशकों की नियुक्ति पुरुष अनुदेशकों की अपेक्षा स्कूलों से कम दूरी पर थी। कार्य संतुष्टि से संबंधित अनेक शोध यथा - **गिलिगोरवीस बोझाना, ग्रीक एदित एवं गुलयूसेस ड्रेगना (2014)** द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड जेंडर डिफरेन्सेज ऑफ टीचर्स इन सर्वियाई" रखा गया। शोध के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षको की पदोन्नति, पर्यवेक्षण, आकस्मिक पुरस्कार, संचालन प्रक्रियाओं, सह कार्यकर्ता, कार्य की प्रकृति इत्यादि कारको को लेकर उनकी कार्य -सतुष्टि का अध्ययन किया। अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकडों के आधार पर यह पाया कि महिला शिक्षक अपने कार्य के प्रति पुरुषों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट पायी गई। पुरुष शिक्षको में असंतोष का मुख्य कारण वेतन लाभ और संचालन प्रक्रियाओं को मुख्य माना गया। पर्यवेक्षण और कार्य की प्रकृति में लिंग-भेद का अन्तर पाया गया।

Subadhi (2013) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Job satisfaction of teacher educator in relation of their attitude towards teaching" था जिसमें सैकेंडरी स्कूल अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि पर शोध किया गया। जिसका परिणाम यह दर्शाता है कि महिला अध्यापिका पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अपनी नौकरी से अधिक सन्तुष्ट है। साथ ही साथ यह शोध दर्शाता है कि 22 से 35 आयु वर्ग के अध्यापक 36 से 55 आयु वर्ग के अध्यापकों से अधिक संतुष्ट पाये गये।

उपरोक्त शोध उक्त परिकल्पना बनाने में सहयोगी रहे है। वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्ष से परिणाम निकलता है कि महिला अनुदेशकों का कार्य संतुष्टि स्कोर पुरुष अनुदेशकों से अधिक पाया गया जिसके आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।

वर्तमान शोध के निन्नलिखित उद्देश्य है-

1. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियां देखना।

2. सहारनपुर मंडल स्थित जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल संसाधनों की जानकारी प्राप्त करना।

3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. शारीरिक शिक्षा विषय की उपेक्षा पर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित कराना।

5. मजबूत एवं स्वस्थ व्यक्तित्व विकास हेतु सरकार को सुझाव प्रदान करना।

सहारनपुर मण्डल के तीनो जिलो में से शारीरिक शिक्षा अनुदेशको की नियुक्ति वाले सभी 175 स्कूलों को चुना गया एवं प्रत्येक जिले से बराबर सख्या में गैर अनुदेशक स्कूलों को यादृच्छिक रूप में चुना गया था। बच्चो की खेल उपलब्धियों के आंकड़ों का संग्रहण बच्चों का मण्डल स्तर खेलो में प्रतिभाग का पूर्व रिकार्ड, खेल संसाधन की जानकारी हेतु प्रियंका सिंह द्वारा बनाई गई (Facilities and infrastructure available (profile of the school) प्रश्नावली एंव अनुदेशको की कार्य संतुष्टि के लिए Dr. Meera Dixit 5 Scale questionnaire का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकडो में बच्चों की खेल उपलब्धियों एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के बीच अंतर हेतु स्वतंत्र टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया जिसका सार्थकता स्तर .05 स्तर पर निर्धारित किया गया। खेल संसाधनों के बारे में जानकारी के लिए वर्णानात्मक सांख्यिकी आवृति एव प्रतिशत का प्रयोग किया गया इसके अतिरिक्त काई-स्कावयर टेस्ट का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष

सार्थक निष्कर्ष पर पहुचनें से पहले शोधार्थी ने सांख्यिकीय निष्कर्षो की आलोचानात्मक जांच की, सांख्यिकीय निष्कर्षों की व्याख्या की, स्कूलो में उपलब्ध सुविधाओं और बुनयादी ढांचों से संबधित साहित्य की व्यापक समीक्षा की। विशेषज्ञों एवं पर्यवेक्षकों साथ विचार-विमर्श के बाद समझ के आधार पर प्रश्नावली के माध्यम से मिले उत्तरो के आधार पर अंततः निष्कर्ष निकाले गये जो इस प्रकार है-

सहारनपुर मण्डल के अनुदेशक नियुक्ति वाले एवं अनुदेशक के अभाव वाले जूनियर हाई स्कूल [नोट - जूनियर हाई स्कूल से अभिप्राय परिषदीय स्कूलों से है जिन्हे अब एक नाम उच्च प्राथमिक विधालय के नाम से जाना जाएगा (E Jagran,2020)] में **खेल उपलब्धियों, खेल संसाधनों एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि** के परिणाम इस प्रकार है।

खेल उपलब्धियों से संबंधित परिणाम इस प्रकार है - वर्ष 2013 से 22-23 तक हुए मण्डल स्तर खेलों मे प्रतिभाग मे अनुदेशक वाले स्कूलों के खिलाडियों का माध्य 256.33 एवं मानक विचलन 33.73 तथा गैर-अनुदेशक स्कूलों से चयनित खिलाडियों का माध्य 80.67 व मानक विचलन 13.14 है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त टी मान 11.88 df 10 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 2.26 से अधिक है जो दिखाता है कि अनुदेशक नियुक्त स्कूलों के बच्चों की खेल उपलब्धियां गैर अनुदेशक स्कूलों के बच्चों से अधिक है। प्राप्त परिणाम दर्शाता हैं कि अनुदेशक नियुक्त एवं गैर-अनुदेशक स्कूलों के बच्चों की खेल उपलब्धियों के मध्य सार्थक अंतर है।

खेल संसाधनों से संबंधित सुविधाओं के परिणाम इस प्रकार है –

(X^2=काई स्क्वायर)

आधारभूत विकास संरचना समिति X^2=38.62 एवं स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला X^2=154.11 है जो .05 स्तर पर सार्थक होने के लिए पर्याप्त X^2=3.84 से ज्यादा है। प्राप्त परिणाम स्पष्ट करते है कि ये सुविधाएं अनुदेशक वाले स्कूलों में गैर अनुदेशक स्कूलों से अधिक है। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर इन सुविधाओं में अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

एथलेटिक ट्रैक X^2=.51, बैडमिटन कोर्ट X^2=.00065, कबड्डी कोर्ट X^2=.0173, खो-खो मैदान X^2=1.796, टेबल-टेनिस X^2=.719, पर्याप्त उपकरणों की उपलब्धता X^2=1.401, खेल उपकरणों हेतु स्टोर रूम X^2=.114, स्टाफ उपलब्धता X^2=2.986, शारीरिक शिक्षा गतिविधियों एवं कक्षा शिक्षण अनुपात X^2=3.356 एवं आउटडोर खेल मैदान X^2=1.61 है जो .05 स्तर पर सार्थक होने के लिए पर्याप्त X^2=3.84 से कम है, प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि ये सुविधाएं अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में लगभग एक समान है अत: निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त खेल सुविधाओं में दोनों प्रकार के स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

सांख्यकी के आधार पर प्राप्त आंकड़ों से हम देखते है कि स्कूलों में स्विमिंग पूल की उपलब्धता $X^2=\infty$, बहुद्देशीय व्यायाम शाला $X^2=\infty$ एवं रख रखाव हेतु ग्राउन्ड मैन $X^2=\infty$ जो .05 स्तर पर सार्थक होने के लिए पर्याप्त X^2=3.84 से कम है। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि ये सुविधाएं अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में उपलब्ध ही नहीं है। अत: निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त खेल सुविधाओं में दोनों प्रकार के स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक शिक्षा अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों के खेल संबंधित सुविधाओं से संबंधित परिणामों के आंकड़ों में शारीरिक शिक्षको की उपलब्धता X^2=350, शारीरिक शिक्षको की योग्यता मानक अनुरूप X^2=350, छात्रों हेतु शारीरिक स्वस्थता परीक्षण X^2=18.788, आयु वर्ग के अनुरूप खेल सुविधाएं उपलब्धता X^2=153.32, स्कूलों में शारीरिक शिक्षा कक्षाओं का सुचारू संचलन X^2=265.577, विद्यालय समय के अतिरिक्त बच्चों को खेल सुविधा उपलब्धता X^2=8.187, बच्चों एवं स्टाफ को एक साथ खेल गतिविधियाँ प्रदान करने की सुविधा X^2=74.90, बच्चों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजन उपलब्धता X^2=157.25, एक्स्ट्राम्यूरल एवं इंट्राम्यूरल प्रतियोगिता का आयोजन X^2=154.115, विधार्थियों के लिए खेल प्रदर्शन व्यवस्था परिणाम X^2=49.00, बच्चों के लिए नृत्य कार्यक्रम एवं लयबद्ध क्रियाओ की सुविधा X^2=187.300 एवं खेल दिवस एवं वार्षिक उत्सव मनाने पर X^2=90.647 पाया गया जो .05 स्तर पर सार्थक होने के लिए पर्याप्त X^2=3.84 से अधिक है। प्राप्त परिणाम स्पष्ट करते है कि ये सुविधाएं अनुदेशक वाले स्कूलों में गैर अनुदेशक स्कूलों से अधिक है। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर इन सुविधाओं में अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

स्कूलों में छात्रों के लिए लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम $X^2=\infty$, बच्चों से खेल की फीस लेने पर $X^2=\infty$, स्कूल की गर्मी की छुट्टी के दौरान विशेष कोचिंग कार्यक्रम $X^2=\infty$ एवं स्कूलो मे खेल-कूद संचालन हेतु निजी एजेंसी $X^2=\infty$ पाया गया। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि इन सुविधाओं में से शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम सभी स्कूलों में समान रूप से लागू है तथा अन्य तीनों का अभाव दोनों ही प्रकार के स्कूलों में पाया गया ये सुविधाएं अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में उपलब्ध ही नहीं है। अत: निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त खेल सुविधाओं में दोनों प्रकार के स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

शारीरिक शिक्षा अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में वित्त और बजट सम्बन्धी सुविधाओं के परिणामो के आंकडो में खेलो के लिए पर्याप्त बजट पर्याप्तता पर X^2 =16.6667 पाया गया जो सार्थकता स्तर .05 पर पर्याप्त X^2=3.84 से अधिक पाया गया। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि खेलो के लिए पर्याप्त बजट पर्याप्तता पर गैर अनुदेशक स्कूलों ने अधिक संख्या में हाँ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति-उत्तर दिया। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर इन सुविधाओं में गैर अनुदेशक एवं अनुदेशक नियुक्ति स्कूलों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

शारीरिक शिक्षा के लिए वार्षिक बजट उपलब्धता पर $X^2=\infty$, बाहरी किसी स्रोत से आय पर x2=∞, स्पेशल प्रोग्राम के लिए तदर्थ अनुदान पर $X^2=\infty$ एवं मानकों के अनुरूप शिक्षको को वेतन देने पर $X^2=\infty$ पाया गया। प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि इन सुविधाओं में से शारीरिक शिक्षा के लिए वार्षिक बजट उपलब्धता एवं मानकों के अनुरूप शिक्षको को वेतन देना दोनों प्रकार के स्कूलों में शत- प्रतिशत पाया गया। बाहरी किसी स्रोत से आय पर एवं स्पेशल प्रोग्राम के लिए तदर्थ अनुदान पर दोनों प्रकार के स्कूलों में अनुपलब्धता पायी गयी। अत: निष्कर्ष निकलता है कि अनुदेशक नियुक्ति एवं गैर अनुदेशक स्कूलों में उपरोक्त खेल सुविधाओं में दोनों प्रकार के स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि-

सहारनपुर मण्डल की महिला अनुदेशकों एवं पुरुष अनुदेशकों से प्राप्त कार्य संतुष्टि के आंकड़ों का माध्य 156.44 एवं मानक विचलन 22.707 है। पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का माध्य 128.96 एवं मानक विचलन 12.384 है। आंकड़ों से प्राप्त टी मान 7.6666 df 102 पर .05 के सार्थकता स्तर पर होने के लिए पर्याप्त टी मान 1.962 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि महिला अनुदेशक पुरुष अनुदेशकों से अधिक संतुष्ट पायी गयी। महिला अनुदेशकों एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

भविष्य के अनुसंधानों के लिए सुझाव एवं सिफ़ारिशे:

शोध अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष अन्य भविष्य मे आने वाले शोध अध्ययनों के लिए अति महत्त्वपूर्ण हो जाते है। नये शोध अध्ययन, पूर्व शोध अध्ययन के सुझावो को स्वीकार कर अपने अध्ययन को क्रमबद्ध तरीके से करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोधार्थी द्वारा किये गये इस शोध अध्ययन के परिणाम व निष्कर्ष से भविष्य के शोध अध्ययन के लिए सुझाव एवं सिफारिशें इस प्रकार है-

- बच्चो की खेल उपलब्धियों को प्रदेश/ राष्ट्रीय स्तर देखा जा सकता है।
- सरकारी एवं निजी स्कूलों के बच्चो की खेल उपलब्धियों पर अध्ययन किया जा सकता है।
- महिला अनुदेशको के स्कूलों में बच्चों की खेल उपलब्धियां एवं पुरुष अनुदेशको के स्कूलों में बच्चो की खेल उपलब्धियों में अंतर पर शोध किया जा सकता है।
- जूनियर हाईस्कूलों के बालक एवं बालिकाओं का खेल उपलब्धियों में अन्तर पर शोध किया जा सकता है।
- खेल संसाधनों को केवल परिषदीय जूनियर हाईस्कूलो में न देखकर सभी प्रकार के जूनियर हाईस्कूलों मे देखा जा सकता है।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयो मे खेल संसाधनों की उपलब्धता पर शोध किया जा सकता है।
- समान काम के लिए समान वेतन के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयो में कार्यरत शिक्षा मित्रो की कार्य सन्तुष्टि पर अध्ययन किया जा सकता है।
- सरकारी एवं निजी स्कूलों मे कार्यरत शिक्षको की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भ ग्रंथ
सूची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reference

- Aajtak. in https://m.aajtak.in-in-every-40sec-someone-somewhere-suicides-779482-2014-09-09
- Abbassi (2003) 'Study of job satisfaction'. Journal of Humanities and Social Science23(9) 7714.
- Agrawal, Reena "A study of students' learning achievement, facilities, and Teaching-Learning material available at Primary schools. UPBEP. SIEMAT Allahabad, 1998.
- Barrow and McGee "A practical measurement in physical education and sports, (Philadelphia, Lea, and Fevager, 1989).
- Brian T. Gearity (2011). Athletes' experiences of the psychological effects of poor coaching. Psychology of Sports Exercise, Volume 12, Issue 3, June 2011, Pages 213-221.
- Cross, N. (1995). Coaching effectiveness in hockey: A Scottish perspective. Scottish Journal of Physical Education, 23, 27-39.
- E Jagran (2018) https://www.jagran.com/lite/bihar/madhubani-not-only-resources-for-sports-in-schools-18226586.html Publish/Updated: Sun,22 July 2018, 05:50 PM(IST).
- E Jagran(2020)https://www.jagran.com/uttar-pradesh/sidharth-nagar-now-upper-primary-school-will-be-known-by-one-name-21197372.html Updated Wed,23Dec.2020,6:45 PM.
- E-paper Amar Ujala https://www.amarujala.Com/Coranavirus-world-health-organization-Guidelines-by-WHO-5 Feb-2020.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- Evenson KR, Wen F, Lee SM, Heinrich KM, Eyler A, "National study of changes in community access to school physical activity facilities: the school health policies and programs study." Journal of Physical Activity and Health. Supply 1(2010): p.p.20-30.
- Gould, D., Greenleaf, C., Dieffenbach, K., Lauer, L., Chung, Y., Peterson, K. (2000). Positive and negative factors influencing U.S. Olympic athletes and coaches: Nagano games assessment. Track Coach, 153, 4889-4893.
- Gould, D., Guinan, D., Greenleaf, C., Medberry, R., & Peterson, K. (1999). Factors affecting Olympic performance: Perceptions of athletes and coaches from more and less successful teams. The Sport Psychologist, 13, 371-394.
- Health and Physical Education A Teacher Guide for Class 6th first edition May 2016 NCERT, ISSBN 978-93-5007-772-6 page no-03.
- Kevin Patrick, M.D. 1995 Physical activity, and Public Recommendation from the Centre for Disease central and prevention and the American College of sports medicine JAMA" 273(5): 402-407.
- Kumar Arun, Kumar Muchal. "Effect of Yogic Exercise on Academic Stress of Secondary level Students." Yoga Mimamsa, A Quarterly Journal, Kaivalyadhama, Lunavala Vol. XLI No.2 July 2009. Page No.32-40.
- Lagarde F, LeBlanc C. "Policy options to support physical activity in schools, Canadian Journal of Public Health Supply (2010):2: S9-13. Retrieved from http://www.ncbi.nlm.nih.gov/PubMed/21137137.
- M. Dobbins, K. Corby, P. Robeson, H. Husson, and D. Tirilis, "School-based physical activity programs for promoting physical activity and fitness in children and adolescents aged 6-18," Cochrane Database Systematic

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Review online, 21, (1) (2009), Retrieved from http://www.ncbi.nlm.nih.gov/PubMed/19160341. Updated 2013 Feb 28.

- Monika, Haga (2016). motor Skill Development in Italian Pre-School Children Induced by Structured Activities. in a specific Playground. journals PLoS org.
- NASPE (1990) National Association for sports and physical education April,1990.
- National plan of physical education and Recreation 1956.
- NCERT (2016) Health and physical education "A teacher's guide for class 6" first edition, May 2016, Page No. 3
- NCRB Report https://www.gaoncometion.com/dises-causing-suicide-nrcb-report-46964.
- Pemoen, F., Hoggard, R., & Peters, D.M., (2014) performance progress and leadership behavior, international journal of coaching science 8(1), 69-81.
- Physical Education and Health written by Shamed. Sharma Hoque Md. Abdul Hoque March 2009 Published by - National Curriculum and Textbook Board, Dhaka.
- Prabhat Khabar, E-paper (2022) https://www.prabhatkhabar.com/state/jharkhand/ranchi/no-playground-in-jharkhand-school-of-more-than-16-thousand-only-648-physical-teacher-srn Updated sat, Dec 10,2022,6:48 AM.
- Ray US. et al. (2011) Impact of yogic practice on psycho-physiological, British Psychiatric Journal Vol. II pp. 270-272.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- S.J. Huang, W.C. Hung, P.A. Wai "Neighbourhood environment and physical activity among urban and rural school children in Taiwan". Health and Place, (2010): 16(3) p.p..470-476.
- Sharma, H.N. Dutta Binita and Sharma, Dipti Identification of the problems of Primary Education". Independent study, Jorhat State Institute of Education, Jorhat, Assam, 1991.
- Singh, Dr. Priyanka (2013) http://hdl.handle.net10603/141820.
- Sopanaru. C. Bojan, A. & Lorga, M. (2017) Stress factor and quality of life adult hemodialysis patient, Global Journal of Psychology Research: new trend and Issue 6(4).
- Stewart, C. (1993). Coaching behaviors: The way you were, or the way you wished you were. The Physical Educator, 50, 23-30.
- Subhdhi (2013) job satisfaction of teacher educators concerning their attitude towards teaching. Journal of all India association for educational Research 19 (4/86.87.)
- Sudarshan, P.V. and Balkrishna S. (2003) Physical education at lower primary stage An Evaluation Research Project Regional Institute of Education. Masoor.
- Timmons (2007). Physical Activity for Preschool Children Now much and how Applied Physiology, Nutrition, and Metabolism volume 32, ISSUR SUPPL.2, Pages S122-s134.
- UNESCO International Chapter of Physical Education and Sports, article 1.
- US Department of health and human Services, 2008.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- Verma, Manisha (2004) dissertation of M.Ed., institute of higher learning, Gandhi Vidhya Mandir University, Sardarshahar, page no. 95.
- Webster (2002) 3rd New International Dictionary" (G and C Merriam Company Springfield 2, Massachusetts, USA):812.

संदर्भ ग्रंथ

- अजमेर सिंह एवं अन्य (2002) शारीरिक शिक्षा, कल्याण प्रकाशन, नोएडा
- अजय भल्ला (1980) ओलिम्पिक, किताब घर, दिल्ली
- अटवाल एंड कंसल (1987) हिस्ट्री ऑफ फिजिकल एजूकेशन, ए०पी०पब्लिकेशन जालंधर पेज सं० 19-23.
- अटवाल एण्ड कंसल (1987) हिस्ट्री ऑफ फिजिकल एजुकेशन ए0पी0 पब्लिकेशन, जालन्धर पेज सं० 62-63.
- अमर उजाला (2023) आगरा, 29 सितंबर 2023, My City पेज संख्या 03.
- अरूण अर्णव (1982) एशियाई खेल, सुबोध पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
- आर. सी. कंवर, शारीरिक शिक्षा का इतिहास एवं सिद्धान्त, अमित बदर्स पब्लिकेशन, धनतौली,नागपुर.
- ई-अमर उजाला (2021) https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/saharanpur/lack-of-facilities-how-to-shine-sports-talent-saharanpur-news-mrt5537904115 Updated Sat, 28 Aug 2021 11:39PM
- ई-अमर उजाला (2022) https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/muzaffarnagar/how-will-arjun-become-a-guru-without-muzaffarnagar-news-mrt6028472172 Updated Sun, 28 Aug 2022 11:39PM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- ई-जागरण (2021) https://www.jagran.com/uttar-pradesh/shamli-city-shyam-nagari-does-not-have-players-there-is-a-lack-of-facilities-21971065.html Updated Sat, 28 Aug 2021 11:13 PM
- उषा बोरोवालिया (1999) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त, बोरोवालिया प्रकाशन, शिमला.
- एम.एल. कमलेश (1983) शारीरिक शिक्षा एवं खेल का मनोविज्ञान, मेट्रोपोलिटन, नई दिल्ली.
- एम.एल. कमलेश (1988) शारीरिक शिक्षा के तथ्य एवं आधार. पी. पी. पब्लिकेशन प्रा. लि. फरीदाबाद.
- एम.जे. इलियस (1973) वाई पिपुल प्ले, प्रिन्टिस हॉल. एग्लवुड क्लीफस.
- कमलेश एवं संग्राल (1984) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, प्रकाश ब्रदर्स लुधियाना, पेज सं० 12.
- कमलेश एवं संग्राल (1984) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त और इतिहास, प्रकाश ब्रदर्स लुधियाना, पेज सं० 167-168.
- कुमार, वीरेन्द्र (2010) भारत में खेलों में खेलों का विकास का विवेचनात्मक अध्ययन, रिसर्च एनालिसिस एण्ड ईवैल्यूऐशन, नवम्बर, 1 अंक 14, पेज सं० 102-107.
- कुमारसम्भव, 5.33.
- गंगवार, बी० आर० (2000) शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद में परीक्षण, मापन एवं मूल्यांकन ए० पी० पब्लिशर्स, जालंधर, पेज स० 195.
- गारिन्डर एम. डाना (1985) दी प्रिन्सिपल ऑफ एक्सरसाइज थैरेपी. सी.बी.एस. पब्लिशर, देहली.
- गिलिगोरवीस बोझाना, ग्रीक एदित एवं गुलयूसेस ड्रेगना (2014) जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड जेंडर डिफरेन्सेज ऑफ टीचर्स इन सर्वियाई जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग मैनेजमेन्ट एण्ड कम्पटीवनेस, (JEMC). 4(2), 94-100.
- गुप्त,तरुण(2019) संपादकीय जागरण,29 अगस्त 2019, दैनिक जागरण, मेरठ प्रकाशन पेज संख्या 8.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- गुसरनदास त्यागी (2004): भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- चार्ल्स ए. बुचर (1979): फाउण्डेशन ऑफ फिजिकल एजुकेशन, द .सी.वी. माब्सी कम्पनी, सेंट लुई.
- डा०, लीना. शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार, सहायक सामग्री 2017-18, कक्षा-11, शारीरिक शिक्षा एवं व्यायाम पेज संख्या 10.
- डिक, फ्रँक, डब्ल्यू (1980): स्पोर्टस, ट्रेनिंग प्रिन्सिपल्स, लोटस बुक,लन्दन.
- डॉ० भीमराव आंबेडकर वि० वि० आगरा (2021) उत्तर प्रदेश के छात्रों में बढ़ती आत्महत्या दर के दृष्टिगत मनोवैज्ञानिक परामर्श दात्री समिति गठित किए जाने के संबंध में , पत्रांक संबंध 134/2021.
- देशमुख, वलवन्त (1992) शारीरिक शिक्षा के तत्व एवं इतिहास, विजय श्री प्रकाशन नागपुर, पेज सं० 6-8.
- दैनिक जागरण(2021) नई दिल्ली, शुकवार, 19 मार्च 2021 पेज सं० 12.
- द्विवेदी, ए० के० एवं पी0 पाण्डेय (2007) शारीरिक शिक्षा का इतिहास एवं सिद्धान्त, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पेज सं० 5.
- नायर, आर.आर. (1974), ए स्टडी ऑफ फिजिकल एजुकेशन फेसिलिटीज इन आन्ध्रा यूनिवर्सिटी, शोध प्रबंध, मद्रास यूनिवर्सिटी.
- पटेल सुशीला देवी (2018) "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, रिमार्किंग एन अनालाईजेशन,vol-3,ISSUE-8,Nov.2018,pp.138-142.
- पी. एन. पाण्डेय (1998) क्रीड़ा और व्यवस्था सरस्वती प्रकाशन, वाराणसी.
- बटलर जार्ज डी. (1959) सामूदायिक मनोरंजन का परिचय, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क.
- बांगिया,जयदेव(2010) निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं केन्द्रीय अधिनियम 2010.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- बिड़ीयानी, आई, एम0 (2015) ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सेकण्डरी स्कूल टीचर्स, रिसर्च इन्टरनेशनल मल्टी डिप्लीनरी रिसर्च जर्नल (RHIMRJ). 2 (4). 1-4.
- बिश्नोई उन्नति (2007) खेल एवं शारीरिक मनोविज्ञान, आर, लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ० स० 1-2.
- मोहन, एम० सारस्वत, भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याएं, पृ० सं०- 57.
- युवा मामले एवं खेल मंत्रालय (2022) फिट इंडिया फिटनेस प्रोटोकाल 2019/ भारत:भारत सरकार https://yas.nic.in/fit-india-fitness-protocols. (12 Feb 2022)
- रमा वर्मा (2002) शारीरिक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- राय, जम्पा, वेनकता, चन्द्र, रामा (2015) जॉब सेटिरफेक्शन अमोंग सैकण्डरी स्कूल टीचर्स इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च 2(5) 95-96.
- राष्ट्रीय खेल नीति का स्वरूप (1980),बिन्दु क्रमांक 57.
- लक्ष्मीकांत पाण्डेय (1983) भूले बिसरे खेल, मेट्रोपोलिटन, नई दिल्ली.
- लोक शिक्षण संचालनालय, मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित स्पोर्ट्स कलेण्डर, 1999-2000.
- विल्मेयर जे. एच. एण्ड कॉसिल डी.एल. (1999): फिजियोलॉजी ऑफ स्पोर्ट्स एण्ड एक्सरसाइज, आई.एल. ह्ययूमन कायनेटिक्स.
- व्यास देव शर्मा (2001), खेलकूद एवं यौगिक व्यायाम आर्य पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
- शंकरलाल शर्मा (1996) शारीरिक शिक्षा तथा खेलकूद, पीयूष प्रिंटर्स पब्लिशर्स प्रा.लि., नई दिल्ली.
- शम्भूनाथ कपूर (1988) उत्तर प्रदेश हाकी के बाँके खिलाड़ी: शम्भूनाथ कपूर, खेल प्रकाशन, लखनऊ.
- शर्मा, एन० पी० (2003) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त और इतिहास खेल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली, पेज सं० 2.
- शर्मा, डा० कविता (2017) शारीरिक शिक्षा का इतिहास, फ्रेन्डज पब्लिकेशन, नई दिल्ली,पेज सं० 74.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- शर्मा, डा० वी० के०, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (2018) न्यू सरस्वती हाऊस, पेज संख्या 143.
- सिंह अजमेर, एवं अन्य (2004) शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स 2004, पेज सं० 12.
- सिंह, अजमेर, एवं अन्य (2004)शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान कल्याणी पब्लिशर्स, पेज सं० 34-37.
- सिंह, अजमेर, एवं अन्य (2004)शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान कल्याणी पब्लिशर्स, पेज सं० 37.
- सिंह, डा० एस० एन0 (2018), शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली. पेज सं० 56.
- सिंह, डा० एस० एन०(2018) शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य, केन्द्र नई दिल्ली, पेज सं० 67.
- सिंह, डॉ० एस० एन०(2018) शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली, पेज सं० 64.
- सिंह, डॉ०श्याम नारायण (2018) शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, पेज सं० 29.
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, जनवरी, नई दिल्ली.
- हक एण्ड हसनानीम(2017) लेवल ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ स्कूल टीचर्स इन प्राइवेट सेक्टर बहालपुर डेवलपिंग कंट्री स्टडीज,4(9),152-158.
- हरदयाल सिंह (1991) साईंस ऑफ स्पोर्टस ट्रेनिंग, डी.वी.एस.पब्लिकेशन, नई दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग
Department of Physical Education & Sports
गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय) हरिद्वार
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

Visit us at www.gkv.ac.in

पत्रांक सं० शा०शिक्षा / 2022-23/3222 दिनांक 05.07.2022

<u>जिससे भी सम्बंधित हो</u>

प्रमाणित किया जाता है कि अनुज कुमार पुत्र श्री मांगे राम (पंजीकरण सं0 19073) गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग मे दिनांक 09.08.2020 से पार्ट-टाईम शोधार्थी के रूप में अध्ययनरत है। शोध-प्रगति के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा डाटा-संग्रहण का कार्य किया जाना है।

प्रभारी
शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

प्रभारी
शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग
गु०कां० समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Consumable Booklet of JSST-DM (Hindi version)

Dr. (Mrs.) Meera Dixit *(Lucknow)*

कृपया निम्न सूचनाएं भरियें :—

नाम ____________ वैवाहिक स्तर ____________

शैक्षणिक योग्यताएँ ____________ निर्देशन का माध्यम ____________

अध्यापन अनुभव ____________ कुल मासिक आय ____________

संस्थान का नाम ____________

निर्देश

इस मापनी के द्वारा इस बात का पता लगाने का प्रयास किया जायेगा कि आप अपने वर्तमान व्यवसाय से कितने संतुष्ट हैं। प्रत्येक कथन के पाँच विकल्प हैं–पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत। आप पाँच में से जिस विकल्प पर सर्वाधिक संतुष्ट हों, उसके सामने वाले खाने पर सही का निशान ✓ लगाइये। सभी कथनों के उत्तर निःसंकोच होकर स्वतन्त्र रूप से दीजिए। आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे।

फलांकन तालिका

Job Factors	A	B	C	D	E	F	G	H	Total Score Overall Interpretation
Score									
Interpretation									

Estd. 1971

✆ : (0562) 2464926

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA-282 004 (INDIA)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत	प्राप्तांक
1.	आप स्वभाव से अध्यापन के लिए उपयुक्त हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
2.	आपका विद्यालय अपने कार्य के अनुसार उचित स्थान पर है।	☐	☐	☐	☐	☐	
3.	आपका वेतन आपके कार्य के अनुसार उचित है।	☐	☐	☐	☐	☐	
4.	आपकी संस्था अध्यापकोन्मुख है।	☐	☐	☐	☐	☐	
5.	आप अनुभव करते हैं कि आपकी संस्था के प्रधान अपने पद के लिए उपयुक्त हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
6.	आपकी संस्था में सभी अध्यापक या अध्यापिकाएँ आपस में सहयोग की भावना से कार्य करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
7.	विद्यार्थी आपका आदर करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
8.	इस व्यवसाय में होने के नाते आपका समाज में समुचित स्थान है।	☐	☐	☐	☐	☐	
9.	आपका व्यवसाय आपके बच्चों या आपके आश्रितों को उचित शिक्षा दिलाने में सहायक होता है।	☐	☐	☐	☐	☐	
10.	आपकी संस्था एक साफ-सुथरा स्थान है, जहाँ कोई भी कार्य करना पसन्द करेगा।	☐	☐	☐	☐	☐	
11.	आप अध्यापन में आनन्द का अनुभव करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
12.	आपके व्यवसाय में पदोन्नति के अवसर हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
13.	आपको अपनी संस्था की योजनाओं में सलाह देने के लिए अवसर दिए जाते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
14.	आपकी संस्था का प्रधान एक निष्पक्ष व्यक्ति है।	☐	☐	☐	☐	☐	
15.	आपकी कक्षा में पठन-पाठन का कार्यक्रम सुचारु रूप से चलता है।	☐	☐	☐	☐	☐	
16.	आप अपने सह-अध्यापकों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम हैं और उनके साथ सुखद सामंजस्य अनुभव करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
17.	आपके मित्र व सम्बन्धी आपके व्यवसाय को सम्मान देते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
18.	आपको अपने परिवार की देखभाल करने का पूरा समय तथा अवसर मिलते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
19.	आपके व्यवसाय में नियमित अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्य करने पर अतिरिक्त धन मिलने की व्यवस्था है।	☐	☐	☐	☐	☐	

FACTORS	A		B			C		D		E		F				G		H	
ITEM	1	11	3	12	19	2	10	4	13	5	14	8	9	17	18	7	15	6	16
SCORE																			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	कथन	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्ण असहमत	प्राप्तांक
20.	आपकी संस्था की कार्य अवधि आपके लिए उपयुक्त है।	☐	☐	☐	☐	☐	
21.	आपकी संस्था के प्रधान आपकी व अन्य लोगों की भलाई में रुचि लेते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
22.	एक अध्यापक होने के नाते आपके विद्यार्थी आपको पसन्द करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
23.	आप अपनी आमदनी से जो रहन-सहन का स्तर बनाने में सक्षम हैं वह आपको सुविधाजनक लगता है।	☐	☐	☐	☐	☐	
24.	आपकी कक्षाओं में प्रकाश व हवा का समुचित प्रबन्ध है।	☐	☐	☐	☐	☐	
25.	आप अवकाश के समय से अधिक अपने कार्य में आनन्द का अनुभव करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
26.	आपको अपना कार्य नियोजित करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।	☐	☐	☐	☐	☐	
27.	आप अपनी संस्था के प्रधान का अन्य अध्यापकों के साथ व्यवहार पसन्द करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
28.	आपके विद्यालय में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के बीच अच्छे सम्बन्ध हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
29.	आपकी संस्था की प्रयोगशाला में उचित उपकरण उपलब्ध हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
30.	अवसर मिलने पर इसी वेतन में आप दूसरे व्यवसाय में जाना पसन्द करेंगे।	☐	☐	☐	☐	☐	
31.	जब तक आप ठीक से कार्य करते हैं, आपका व्यवसाय सुरक्षित है।	☐	☐	☐	☐	☐	
32.	आपको अपने बड़ों के द्वारा अच्छे कार्य की सराहना मिलती है।	☐	☐	☐	☐	☐	
33.	आपको अपने छात्रों के अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करने के उचित अवसर मिलते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	
34.	छात्र व अध्यापक का अनुपात आपकी कक्षा में ऐसे नियम के अनुसार है कि आप पर कार्य का अधिक बोझ नहीं पड़ता है।	☐	☐	☐	☐	☐	
35.	अध्यापन व्यवसाय का भविष्य उज्जवल है।	☐	☐	☐	☐	☐	
36.	आपकी संस्था के पुस्तकालय में आपके लिए पुस्तकें सदैव उपलब्ध हैं।	☐	☐	☐	☐	☐	

FACTORS	A			B			C			D	E			F	G			H
ITEM	25	30	35	20	31	34	24	29	36	26	21	27	32	23	22	28	33	–
SCORE																		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत	प्राप्तांक
37.	आपके सहयोगी आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता करने को सदैव तत्पर रहते हैं।						
38.	आपका विद्यालय दूसरों के लिए अनुशासन एवं शैक्षिक उपलब्धियों का एक उदाहरण है।						
39.	आप अपने छात्रों के चरित्र-निर्माण व अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने में वास्तव में सहायक सिद्ध होते हैं।						
40.	पढ़ाई के साथ-साथ आपके विद्यालय में खेलकूद में भाग लेने के लिए आपको उचित अवसर मिलता है।						
41.	आप अपनी संस्था के प्रधान के द्वारा दूसरों की शिकायतें सुनने व उन पर निर्णय लेने के तरीकों को पसन्द करते हैं।						
42.	आपके सहयोगी आपको अपने समान समझते हैं।						
43.	आपकी कक्षाएँ आवश्यकतानुसार सुसज्जित हैं।						
44.	आपके सहयोगी आपको विद्यालय के महत्वपूर्ण कार्यों का उत्तरदायित्व देना पसन्द करते हैं जिससे आप गौरव का अनुभव कर सकें।						
45.	यह अच्छा है कि आपके व्यवसाय में अकसर स्थानान्तरण नहीं होते हैं।						
46.	आपको अपनी व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने के उचित अवसर प्रदान किये जाते हैं।						
47.	खेलकूद के अतिरिक्त अन्य सह-पाठ्यक्रम क्रियाओं में भी आपको भाग लेने के उचित अवसर मिलते हैं।						
48.	श्रव्य दृश्य उपकरण आपके प्रयोग के लिए सदैव उपलब्ध हैं।						
49.	आपको अपने विद्यालय पहुँचने में कोई असुविधा नहीं होती है।						
50.	अवकाश प्राप्ति के पश्चात् मिलने वाली सुविधाएँ उपलब्ध हैं।						
51.	आपकी संस्था की कक्षाओं में छात्रों की संख्या के अनुसार उपयुक्त जगह है।						
52.	आप अपने व्यवसाय में गरिमा का अनुभव करते हैं।						

FACTORS	A		B		C				D			E	F	G	H		
ITEM	46	52	45	50	43	48	49	51	38	40	47	41	–	39	37	42	44
SCORE																	

© 2011. All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act
Consumable Booklet of Job Satisfaction Scale (JSST-ss) Hindi Version

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Questionnaire for facilities and infrastructure available

Profile of the School

1. **Name and address of the school.**

   ....

   ....

   ....

2. **Types of school.**

   (a) Govt. / Govt. Added ( ) (b) Private ( )

3. **Nature of school.**

   (a) For Boys only ( ) (b) Girls only ( )

   (c)Co-Education ( )

4. **Total Number of students enrolled in current session.**

Boys	Girls	Total

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	(Sports Infrastructure)	
1.	**Does the school have Athletic track?**	**Yes/No**
2.	**Does the school have Badminton court?**	**Yes/No**
3.	**Does the school have kabaddi court?**	**Yes/No**
4.	**Does the school have kho-2 field?**	**Yes/No**
5.	**Does the school have swimming pool?**	**Yes/No**
6.	**Does the school have table tennis table?**	**Yes/No**
7.	**Does the school have multipurpose Gymnasium/ indoor training hall?**	**Yes/No**
8.	**Is there any sports infrastructure development committee in school?**	**Yes/No**
9.	**Are Equipments acquired by the school adequate to carry out the sports activity program?**	**Yes/No**
10.	**Does the school have a store room for keeping sports equipment?**	**Yes/No**
11.	**Does the school have sufficient staff to run the school smoothly?**	**Yes/No**
12.	**Does the school have ground- man/field assistance to maintain sports equipments and infrastructure?**	**Yes/No**
13.	**Does the school have proper ratio between physical education activities and class room teaching?**	**Yes/No**
14.	**Does the school have separate health education lab?**	**Yes/No**
15.	**Does the school have its own outdoor playground as required?**	**Yes/No**
	(Facilities)	
16.	**Does the school have a physical education teacher?**	**Yes/No**
17.	**Is the physical education teacher Qualified?**	**Yes/No**
18.	**Does the School have a written physical education curriculum for students?**	**Yes/No**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

19.	**Is physical fitness Assessment administered for students?**	**Yes/No**
20.	**Does the school provide appropriate, playing equipments facilities to the students according to their age?**	**Yes/No**
21.	**Does the school provide adequate physical education classes?**	**Yes/No**
22.	**Does the school provide playing facilities to students other than school hours?**	**Yes/No**
23.	**Does the school offer physical activity for staff and students together?**	**Yes/No**
24.	**Does the school charge sports fee from the students?**	**Yes/No**
25.	**Does the school conduct coaching camps for students?**	**Yes/No**
26.	**Does the school organize Intramural and extramural competition?**	**Yes/No**
27.	**Does the school engage private agencies to conduct sports programs at your school?**	**Yes/No**
28.	**Have you conducted any special coaching program during summer vacations?**	**Yes/No**
29.	**Does the school arrange sports demonstration for students?**	**Yes/No**
30.	**Does the school have Rhythmic and dance program for students?**	**Yes/No**
31.	**Does the school organize the sports day/annual function?**	**Yes/No**
	(Finance and Budget Related Informations)	
32.	**Does the school have the annual budget provided for sports and physical education?**	**Yes/No**
33.	**Is the budget provided to the school for sports sufficient?**	**Yes/No**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

34.	Does the school have Income from other external sources?	Yes/No
35.	Is there an annual budget for Equipment?	Yes/No
36.	Does the school receive adhoc grant for special program in sports, other than school budget?	Yes/No
37.	Does the school Pay salaries to the staff as per government rules?	Yes/No

All the informations is given are true to the best of my knowledge.

Place............

Date.............   Signature of Principal/Teacher.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ICPR

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

National Seminar
On the occasion of
Indian Philosopher's Day, 2023
On

Indian Value System :

Achievements, Relevance and Challenges

Sponsored by
Indian Council of Philosophical Research, New Delhi
Organized by
Devanagari Post Graduate College, Gulaothi, Bulandshahr, U.P.
(Affiliated to Chaudhary Charan Singh University, Meerut)

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. अनुज कुमार, शोधार्थी
University / College / Institute गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
has participated / presented a paper entitled बच्चों के नैतिक मूल्य संवर्द्धन में शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की भूमिका in the Seminar held on July 23, 2023 at Devanagari Post Graduate College, Gulaothi, Bulandshahr, U.P.

Prof. Yougesh Kumar Tyagi	Dr. Awadhesh Kumar Singh	Peeyush Tripathi	Dr. Pushpendra Kumar Mishra
Principal & Patron	Co-Convener	Co-Convener	Convener

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Department of Higher Education, Govt. of Uttar Pradesh
Sponsored

NATIONAL SEMINAR

On

P 2020 : Challenges & Opportunities for Higher Education

24-25 March ,2022

Organized by:-

Department of Physical Education

VEERBHUMI GOVT. P.G. COLLEGE, MAHOBA -220427 (U.P.) INDIA

CERTIFICATE OF APPRECIATION

TO

MR. ANUJ KUMAR, Research Scholar

Department of Physical Education

on Gurukul Kangri (Deemed to be) University, Haridwar. U.K

r participating as Key note speaker/Delegate/ Resource person/Chair the ssion/ Expert in National Seminar. He/She also delivered/Presented Paper titled "उत्तर प्रदेश के जूनियर हाईस्कूलों में उपलब्ध खेल वातावरण का अध्ययन"

Dr (Pradeep Kumar)
Convenor/ Organizing Secretory

Prof. (Sushil Baboo)
Patron/Principal

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Shodhsamhita
शोधसंहिता
राष्ट्रहिताय संस्कृतम्

ISSN No. 2277-7067

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

अनुज कुमार

For the paper entitled

सहारनपुर जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों (महिला) एवं (पुरुषों) में कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

Vol .No .X, Issue- 8 (I) July-December 2023

in

Shodhsamhita

Impact Factor: 4.95

UGC Care Group 1 Journal

Editor-in-Chief

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

सहारनपुर जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों (महिला) एवं (पुरुषों) में कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

अनुज कुमार [1], प्रो.(डा.) आर.के.एस.डागर [2], डा. अजय मलिक [3], डा. बिंदु मलिक [4], एवं डा. दीपक प्रकाश [5]

1. शोधार्थी छात्र , गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविध्यालय हरिद्वार एवं असिस्टेंट प्रोफेसर भदावर विद्या मंदिर (पीजी) कॉलेज बाह आगरा

2. शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविध्यालय, हरिद्वार |

3. असिस्टेंट प्रोफेसर , शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविध्यालय, हरिद्वार |

4. असिस्टेंट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग कन्या गुरुकुल परिसर कांगड़ी (सम) विश्वविध्यालय, हरिद्वार |

5. असिस्टेंट प्रोफेसर, जसपाल राणा इंस्टीटूट आफ एजुकेशन एंड टेकनोलाजी, देहरादून |

शोधपत्र– सार

किसी भी राष्ट्र के विकास हेतु सर्वाधिक शक्तिशाली उपकरण शिक्षा है। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का समय है, स्वास्थ्य प्रत्येक मानव की सर्वप्रथम आवश्यकता प्रतीत होता है। स्वास्थ्य के इसी दृष्टिकोण हेतु मानव ने शिक्षा के अभिन्न अंग शारीरिक शिक्षा को अपने जीवन में अति विशिष्ट स्थान दिया है। प्रस्तुत शोध आलेख के अंतर्गत सहारनपुर जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष के रूप में महिला अनुदेशको एवं पुरुष अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। वर्तमान प्रतिस्पर्धी दौर के परिपेक्ष में यह शोध आलेख शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि एवं बेहतर शिक्षा एवं मनोबल का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अतिरिक्त अनुदेशको एवं शारीरिक शिक्षा नीति के लिए भी एक सुझाव के तौर पर विषय वस्तु उपलब्ध कराता है।

मुख्य शब्द : शारीरिक शिक्षा,अनुदेशक एवं कार्य संतुष्टि |

परिचय–

शिक्षा राष्ट्रों के निर्माण के लिए सर्वाधिक शक्तिशाली उपकरण है। मानव व्यवहार के मुख्य तीन पक्ष होते हैं ज्ञानात्मक भावात्मक एवं क्रियात्मक। प्राचीन समय से ही भारतीय समाज अध्यापक को भविष्य का निर्माता कहता आया है। वर्तमान समय विज्ञान का समय है समय-समय पर नई शोध प्रतिस्पर्धा को निरंतर बढ़ा रहे हैं। परिवार के पश्चात बच्चे की दूसरी पाठशाला विद्यालय होता है। विद्यालय का वातावरण बालक के मन पटल पर सीधा प्रभाव डालता है। विद्यालय के वातावरण से अपेक्षा रहती है कि वह बालक का संपूर्ण विकास कर सकें। बालक के मानसिक विकास के साथ-साथ उसके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और नैतिक गुणों को विकसित करना विद्यालय का दायित्व है। शिक्षा की गुणवत्ता अध्यापक के कार्यक्षेत्र पर निर्भर करती है। बालक के सर्वांगीण विकास को विकसित करने हेतु यह प्रतीत होता है की स्कूलों में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाए। सन 1952–53 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

गठित मुदालियर आयोग व केंद्रीय सलाहकार बोर्ड ने भारत में विद्यालय स्तर पर शारीरिक शिक्षा को शिक्षा का अभिन्न अंग मानते हुए विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ छात्र ही सही मायनों में राष्ट्र की पूंजी होते हैं। शारीरिक शिक्षा में स्वास्थ्य के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

"शारीरिक शिक्षा शिक्षा का ऐसा अभिन्न अंग है जो व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए दी जाती है।"[1] वर्तमान समय में यदि हम विद्यार्थी के संपूर्ण विकास की कल्पना करते हैं तो हमें आवश्यकता है कि विद्यालय स्तर के कार्यक्रमों में शारीरिक शिक्षा को उचित स्थान दिया जाए। यूएस डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ सर्विस 2008 की एक रिपोर्ट के अनुसार "व्यायाम करने एवं पौष्टिक भोजन खाने वाले लोगों को समस्त जीवन जीने के अवसर अधिक होते हैं।"[2] शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व को बताते हुए कहा गया है कि"शारीरिक शिक्षा का प्रमुख कार्य मानव का संपूर्ण विकास करना है शारीरिक शिक्षा को मानवीय जीवन का अभिन्न अंग माना गया है।"[3] शिक्षा में शारीरिक शिक्षा इसलिए अति महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि "शारीरिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है।"

शारीरिक शिक्षा अनुदेशक

वर्तमान समय में खेल एवं शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों एवं क्रियाओं के क्रियान्वयन को विद्यालय एवं विद्यालय के बाहर शारीरिक शिक्षा शिक्षक द्वारा संचालित किया जाता है। शारीरिक शिक्षा का अध्यापक चाहे वह किसी भी स्तर पर अध्यापन का कार्य कर रहा है बच्चे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास में अपनी प्रमुख भूमिका निर्वहन करता है। शारीरिक शिक्षक का कार्य है केवल कक्षा तक ही सीमित नहीं होता अपितु खेल मैदान पर भी कुशलतापूर्वक संचलन उसके कार्य क्षेत्र में आता है। बच्चों के गिरते स्वास्थ्य, खेलों के प्रति अरुचि, तनाव, चिड़चिड़ापन, गिरता नैतिक स्तर इत्यादि समस्याओं के निस्तारण हेतु 2013 में तत्कालीन राज्य सरकार ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा अनुदेशक की नियुक्ति हेतु कार्यक्रम जारी किया था। सन 2013 में शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की नियुक्ति ऐसे उच्च प्राथमिक विद्यालयों में की गई थी जिनमें छात्र संख्या 100 या 100 से अधिक थी। अनुदेशकों की योग्यता का स्तर बीपीएड एवं वेतनमान ₹7000 प्रति माह (11 माह हेतु) निर्धारण किया गया था जो वर्तमान समय में भी जस का तस बना हुआ है।

अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि

कार्य संतुष्टि से तात्पर्य विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों के परिणाम से है। इन अभिवृत्तियों का सीधा संबंध कर्मचारी के व्यवसाय से होता है। जो कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं वह उत्तम शारीरिक – मानसिक संतुलन रखते हैं। यह एक आनंददायक एवम सकारात्मक अभिवृत्ति है जो कर्मचारी द्वारा अपने कार्य के प्रति व्यक्त की जाती है। ब्लम एवं नेलर के अनुसार"कार्य संतुष्टि किसी भी कर्मचारी कि उन अभिवृतियों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य और व्यवसाय से संबंधित अनेक कारकों द्वारा सामान्य जीवन के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाए रखता है"यह सब कुछ विशेष कारकों यथा वेतन, कार्य की दशा, प्रोन्नति का अवसर, समस्या का समाधान, उपलब्ध सुविधाएं, कार्यक्षेत्र की स्थिति, अन्य कर्मचारियों के साथ संबंध इत्यादि पर निर्भर करता है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- सहारनपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों (महिला) की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
- सहारनपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों (पुरुष) की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
- सहारनपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों (महिला) एवं (पुरुषों) की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रक्रिया एवं अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु सहारनपुर जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अनुदेशक एवं पुरुष अनुदेशकों का चयन किया गया। शोध हेतु समस्त महिला अनुदेशकों एवं बराबर संख्या में कोटा प्रतिचयन विधि द्वारा पुरुष अनुदेशकों को चुना गया। शोध के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त मापनी : प्रश्नावली (डॉक्टर मीरा दीक्षित फाइव स्केल क्वेश्चन आया फॉर जॉब सेटिस्फेक्शन)

TABLE - I

Descriptive analysis of t- Test [Job Satisfaction (कार्य संतुष्टि)]

GROUPS	N	MEAN	Std. Deviation
महिला अनुदेशक कार्य संतुष्टि	25	169.480	25.1911
पुरुष अनुदेशक कार्य संतुष्टि	25	133.680	15.9445

टेबल-I में महिला अनुदेशक कार्य संतुष्टि का माध्य (169.480) व मानक विचलन (25.1911) तथा पुरुष अनुदेशक कार्य संतुष्टि का माध्य (133.680) व मानक विचलन (15.9445) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

GRAPH

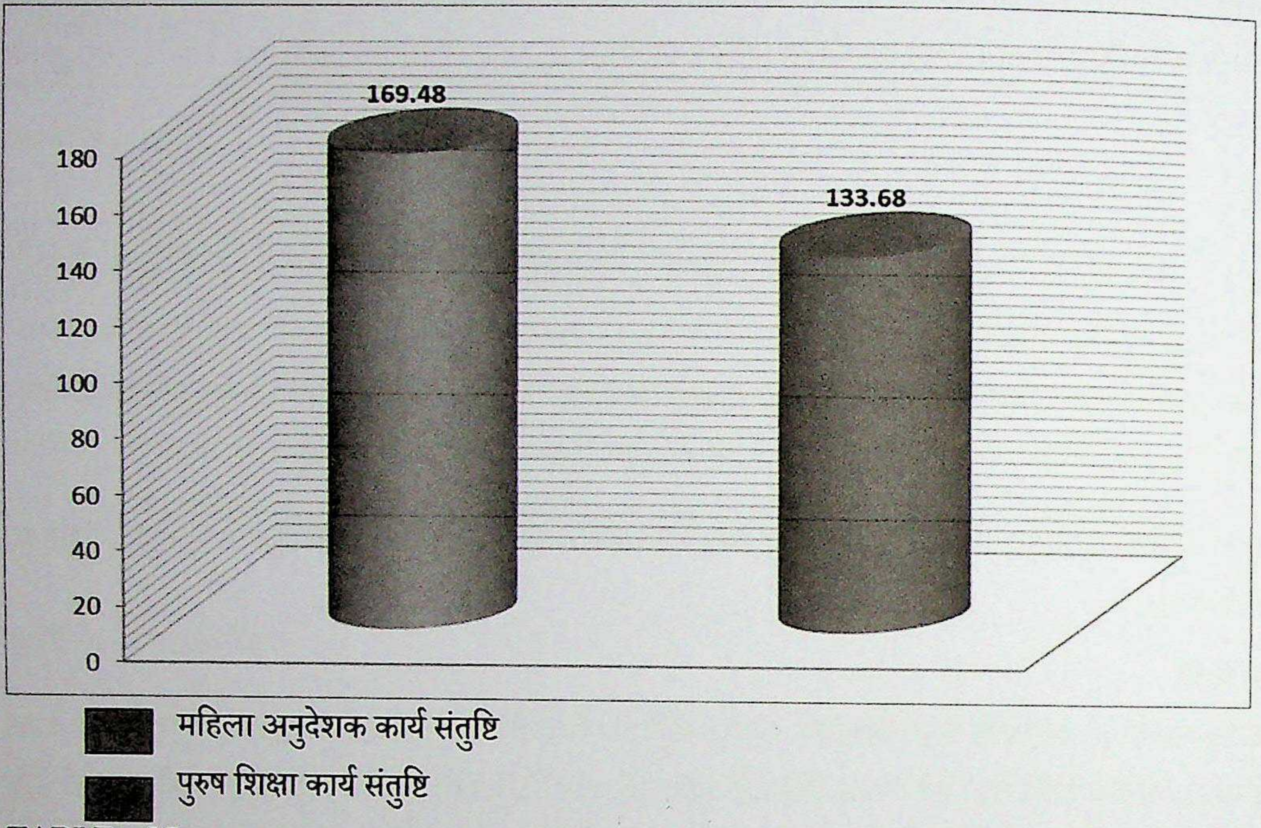

TABLE – I.I

[Job Satisfaction (कार्य संतुष्टि)]-Statistical Technique and Test- t-test used for the Statistical analysis

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means	
		F	Sig.	t	df
Job Satisfaction (कार्य संतुष्टि)	**Equal variances assumed**	**4.037**	**0.05**	6.004	**48**
	Equal variances not assumed			6.004	40.570

***Significant at 0.05 level of significance df = 48 (t = 2.01)**

टेबल-I.I में F का मान (4.037) है जो कि सारणी मान (2.01) से अधिक है अतः महिला अनुदेशक कार्य संतुष्टि व पुरुष अनुदेशक कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामः

टेबल-I.I से महिला अनुदेशक कार्य संतुष्टि व पुरुष अनुदेशक कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है| इसी प्रकार टेबल-I से महिला अनुदेशक कार्य संतुष्टि का माध्य (169.480), पुरुष अनुदेशक कार्य संतुष्टि के माध्य (133.680) से अधिक है |

परिणाम/निष्कर्ष :

उपयुक्त शोध के आधार पर यह परिणाम सामने आया कि सहारनपुर जनपद में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों महिला एवं पुरुषों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। पुरुष अनुदेशकों की अपेक्षा महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

o अजमेर सिंह एवं अन्य(2004), शारीरिक शिक्षा तथा ओलंपिक अभियान, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिकेशन.
o डॉ0 सिंह,श्याम नारायण(2018) शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य केंद्र नई दिल्ली.
o सिंह अरुण कुमार, आशीष कुमार (2008), प्रतियोगिता मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन दिल्ली.
o कमलेश एवं संग्राल (1984), शारीरिक शिक्षा के सिद्धांत एवं इतिहास, प्रकाश ब्रदर्स लुधियाना, पृष्ठ संख्या 12 |
o यूएस डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ एंड हुमन सर्विस 2008.
o द्विवेदी, ए० के० एवं पी पांडे (2007), शारीरिक शिक्षा का इतिहास एवं सिद्धांत, सपोर्ट पब्लिकेशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 5.
o जेम्स एंड हन्नान डब्लू वचीरा(2013) जॉब सेटिस्फेक्शन फैक्टर्स डेट इनफ्लुएंस द परफॉर्मेंस ऑफ सेकेंडरी स्कूल प्रिंसिपल इन देयर एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन इन मोंबासा डिस्ट्रिक्ट केन्या, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड रिसर्च 1:2, फरवरी 2013.
o सिंह, जयप्रकाश(2013) रिलेशनशिप बिटवीन टीचिंग कॉपीटेंस एंड सेटिस्फेक्शन: ए स्टडी अमंग टीचर एजुकेटस वर्किंग इन सेल्फ फाइनेंस कॉलेज इन उत्तर प्रदेश, इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च 3:5,2013.
o शुभधि(2013) जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ टीचर एजुकेटर इन रिलेशन ऑफ देयर एटीट्यूड टुवर्ड टीचिंग. जर्नल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 19 (4),86–87.
o रोबर्ट एवं फ्रांसिस (2002) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च, ए प्रोजेक्ट ऑफ द अमेरिकन एजुकेशन रिसर्च एसोसिएशन, फस्ट एडिशन, पृष्ठ संख्या 645.
o आर्क जनरल मनोचिकित्सा,60,837–844/देब एस० 2001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tattva-Sindhu
तत्त्व सिन्धु

ISSN: 2349-1426

अनुज कुमार

has submitted a research paper entitled

खेल संवर्धन में योग की भूमिका

which has been accepted and published in

वर्ष 10, अंक 2

(September 2023)

of

UGC Care Listed International Peer Reviewed Refereed Journal with an **Impact Factor of 7.44**

Dr. Nilay Tiwari
Associate Editor

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tattva-Sindhu तत्त्व सिन्धु
वर्ष 10, अंक 2 2023
ISSN: 2349-1426

खेल संवर्धन में योग की भूमिका

अनुज कुमार
शोधार्थी गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं असिस्टेंट प्रोफेसर भदावर विद्या मंदिर (पीजी) कॉलेज बाह, आगरा

प्रोफेसर आर० के ० एस ० डागर
शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविद्यालय हरिद्वार

डॉ० अजय मलिक
असिस्टेंट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविद्यालय हरिद्वार

डॉ० शिव कुमार चौहान
एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविद्यालय हरिद्वार

डॉ० बिंदु मलिक
असिस्टेंट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग कन्या गुरुकुल परिसर गुरुकुल कांगड़ी (सम) विश्वविद्यालय हरिद्वार

शोध पत्र सार –
भारतवर्ष में खेल एवं योग संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं। खेल एवं योग के माध्यम से शरीर की मांसपेशियां लचीली एवं मजबूत होती हैं। व्यक्ति को स्वस्थ रखने में दोनों अपनी महती भूमिका निर्वहन करते हैंयोग प्रत्येक खिलाड़ी की दिनचर्या का हिस्सा है। योग के माध्यम से प्रत्येक खेल में उत्तम प्रदर्शन किया जा सकता है। योग मन और मस्तिष्क को मजबूत और शरीर को लचीला बनाता है। प्राणायाम के माध्यम से शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक पहुंचती है जो प्रत्येक कोशिका, उत्तक आदि को चोटों से बचाने में सहायता करती है। योग के द्वारा खिलाड़ी की एकाग्रता बढ़ती है। विभिन्न आसनों के माध्यम से खिलाड़ियों का शरीर संतुलित होता है। योगाभ्यास का नियमित अभ्यास जिमनास्टिक जैसे खेलों में संतुलन बनाए रखता है और उनके प्रदर्शन में निखार लाता है। प्राणायाम के अभ्यास से लंबे समय तक बिना थकान के कोई भी खिलाड़ी उत्तम प्रदर्शन कर सकता है। योग के विभिन्न अंग यथा आसन, प्राणायाम, शुद्धि क्रियाएं ध्यान इत्यादि मन को एकाग्र चित्त करके शरीर और मन के संबंध में को उत्तम करती है जो खेल प्रदर्शन में सहायक सिद्ध होता है।

Key word – खेल ,योग

परिचय

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा में प्रयुक्त "युज" धातु से हुई है। योग विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक अनुशासन है जो मन एवं शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह अपने आसन, प्राणायाम एवं ध्यान की तकनीक के माध्यम से शारीरिक व्यायाम के साथ स्वयं को जोड़ता है। खेल नियमों के दायरे में रहकर की जाने वाली एक प्रक्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो व्यक्ति को मनोरंजन के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करती है। योग की भांति खेल का भी दायरा एवं नियम होने के चलते यह एक उत्तम अनुशासन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। दोनों मानव जीवन हेतु पुरखों के द्वारा प्रदत्त संस्कृति का अभिन्न अंग है व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक चारित्रिक, आध्यात्मिक इत्यादि संपूर्ण विकास हेतु दोनों अपनी-अपनी भूमिका निर्वहन करते हैं।

खेल

खेल मानव जीवन का अति महत्वपूर्ण अंग है। खेल से अभिप्राय कई नियमों के दायरे में संचालित होने वाली प्रतियोगी गतिविधि से है। यह एक या अधिक व्यक्तियों द्वारा विकसित की गई एक ऐसी गतिविधि है जिसका तात्कालिक उद्देश्य मनोरंजन करना होता है। यह प्रतिस्पर्धी शारीरिक व्यायाम का अभ्यास है इसका उपयोग स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के तौर पर हो सकता है। खेल हमारी संस्कृति है और वर्तमान समय में जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है। "अनेक सभ्यताओं के विकास और पतन के बावजूद खेल जिंदा रहा और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में एक से दूसरी पीढ़ी में चला चला गया"।[1] खेल संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए पूर्वजों द्वारा प्रदत्त एक अभूतपूर्व देन है। शारीरिक क्रियाएं एवं खेल प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। स्वभाव से मानव जन्म से ही खेलों के प्रति आकर्षित होता है।"खेलों के माध्यम से व्यक्ति में निहित विभिन्न क्षमताओं योग्यताओं और कुशलताओं का विकास होता है।"[2] विश्व भर में लगभग करोड़ों लोग प्रतिदिन खेल कूद गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं इनमें से कुछ का उद्देश्य आमोद- प्रमोद एवं मनोरंजन एवं कुछ का उद्देश्य भविष्य निर्धारण करना है। सभी को खेलने हेतु अच्छे वातावरण का अधिकार है। "शारीरिक शिक्षा एवं खेल का अभ्यास सभी का एक मौलिक अधिकार है।"[3] भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत खेलकूद जीवन जीने के अधिकार में समाहित है। खेलकूद के माध्यम से ही उत्तम स्वस्थ जीवन की संकल्पना संभव होती प्रतीत दिखाई पड़ती है।

योग

सृष्टि के आरंभ से ही पृथ्वी पर जन्म लेने के साथ ही मानव ने जीवन में दुःख का अनुभव किया और इससे बचने का प्रयत्न भी किया है। सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाने हेतु अनेक साधन मनुष्य के द्वारा अपनाये गई जिनमें से योग एक प्रमुख साधन है। योग एक जटिल एवं गूढ शब्द है इसका अर्थ सीमित न होकर अत्यंत व्यापक है। योग का सामान्य अर्थ जोड़ना या मिलना है यह जोड़ दो संख्याओं दो वस्तुओं अथवा मन एवं शरीर आत्मा एवं परमात्मा हो सकता है। "आत्मा और परमात्मा का मिलन योग है।"[4] योग संपूर्ण विश्व के लिए भारत की महानतम सद्भावना एवं उद्घोषणा है। योग के अंतर्गत जीवन के सामान्य व्यवहार से लेकर ज्ञान एवं समाधि सहित अध्यात्म की उच्चतम अवस्थाओं का समावेश है। योग अशांति के क्षणों में शांति प्रदान करने का साधन है। योग हमें एक बहुमूल्य आध्यात्मिक विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है जो शरीर एवं मन की विकृतियों को दूर करता है। लगभग सभी प्रकार के रोगों की यह एक चिकित्सा प्रणाली है। योग को परिभाषित करते हुए महर्षि पतंजलि ने कहा है "चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है।"[5] भगवान श्री कृष्ण ने "योग: कर्मसु कौशलम्"[6] अर्थात कर्मों में विशेषज्ञता,कुशलता ही योग है। महोपनिषद के अनुसार "मन प्रशमनोपायो योग इत्यभिधीयते"[7] अर्थात मन को शांत करने हेतु जो भी उपाय किए जाते हैं वह सब योग कहलाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि योग एक जीवन दर्शन है, आत्म अनुशासन है, व्याधि मुक्त एवं समाधि युक्त जीवन जीने की एक संकल्पना, एक जीवन पद्धति है। योग व्यक्ति को वामन से विराट बनाने शारीरिक रोगों के साथ-साथ मानसिक विकारों को भी दूर करने की जीवन शैली है। योग जीवन जीने की कला है, एक साधन है और विज्ञान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ISSN: 2349-1426

खेलों में योग की महत्ता से संबंधित पूर्ववर्ती शोध

खेलों में योग पूर्णतया अपनी अहम भूमिका निर्वहन करता है। जिसके चलते पूर्व में इससे संबंधित अनेक शोध हुए हैं जो स्पष्ट करते हैं कि योग का प्रत्येक अंग प्रत्येक खेल, प्रत्येक स्तर, प्रत्येक लिंग के खिलाड़ी के लिए अति महत्वपूर्ण होता है।

"सतीश (2012) ने यौगिक क्रियाओं के प्रभाव से विद्यालयों के बास्केट बॉल खिलाड़ियों के पैरों की शक्ति तथा उनके लचीलेपन को बढ़ाया। बारह-बारह खिलाड़ियों के दो समूहों उपचार समूह तथा नियन्त्रण समूह बनाये गये तथा उपचार समूह के बारह खिलाड़ियों को आठ सप्ताह तक विभिन्न यौगिक क्रियायें कराई गई तथा परिणामस्वरूप पाया कि यौगिक क्रियाओं के द्वारा खिलाड़ियों के पैरो की शक्ति तथा लचीलेपन को बढ़ाया गया जबकि नियन्त्रण समूह के खिलाड़ियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।"[8]

"महाराज, स्वामी राम देव (2007) मोहन बागान एथलेटिक क्लब की जूनियर पुटबाल टीम को योग एवं प्राणायाम का गहन प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण के उपरान्त अगस्त के प्रथम सप्ताह में ब्रिटेन के मैनचेस्टर मे जूनियर वर्ल्ड कप फुटबाल का आयोजन किया गया जिसमें मोहन बागान की इस जूनियर टीम टीम ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्साह जनक प्रदर्शन किया।"[9]

"शिरीष वी टोपरे (1997) ने धावकों के कदम की लंबाई पर चयनित आसनों का प्रभाव नमक अध्ययन किया अध्ययन हेतु मध्यम दूरी के भाव को को चुना गया। नमूना चयन बीपीएड के 24 विद्यार्थी लिए जो कॉलेज आफ फिजिकल एजुकेशन,पुसद से थे। खिलाड़ियों को 6 सप्ताह का प्रशिक्षण दिया गया इस अवधि में एक समूह को नियंत्रित रखा गया व दूसरे को चयनित आसन कराए गए। अध्ययन के लिए किए गए प्री-पोस्ट टेस्ट के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि चयनित आसान मध्यम दूरी धावको की कदम की लंबाई बढ़ाने में सार्थक रूप से प्रभावी रहे।"[10]

"मुखर्जी (1977) ने भारतीय हॉकी टीम पर योग का प्रभाव अध्ययन किया और पाया कि यौगिक व्यायाम करने से खिलाड़ियो की चिन्ता और तनाव में कमी आयी और उन्हें शान्ति की स्थिति प्राप्त हुई जो निश्चित रूप से मैदान में उनके प्रदर्शन को बढ़ाती है। इस प्रकार योगाभ्यास मेटाबोलिज्म, पल्म रेट इत्यादि नियमित कर फेफड़ो की क्षमता बढ़ाने में योगदान देते है।"[11]

"घरोटे (1976) द्वारा एक अन्य प्रयोग में इस बात की पुष्टि की गई कि योग प्रशिक्षणों का खेलकूद की क्षमताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। योगासनों द्वारा स्वस्थता के अन्य घटकों (यथा- नम्यता, शक्ति, सहनशीलता, गति सन्तुलन और हृदयवाहिनियों) की स्वस्थता पर अच्छा असर पड़ता है।"[12]

उपर्युक्त पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है की योग के माध्यम से खेल के क्षेत्र में बड़ी सफलता को प्राप्त किया जा सकता है। योग खिलाड़ियों को शारीरिक एवं मानसिक संतुलन प्रदान कर उनके प्रदर्शन को बढ़ाता है।

खिलाडियो के जीवन में योग

वर्तमान समय में योग प्रत्येक खिलाड़ी की दिनचर्या का एक अहम हिस्सा है। योग का अभ्यास एक आम व्यक्ति ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है। "बी० ए० एस० अयंगर को श्रद्धाजलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हुए सचिन तेंदुलकर ने अपने शोक संदेश में कहा कि अयंगर से मेरी पहली मुलाकात 1999 में हुई थी। मेरे पीठ दर्द के चलते किरण मोरे ने उनसे मेरा परिचय कराया था मैं उनके साथ करीब एक सप्ताह रहा और मैं उनके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहूंगा, उन्होने मुझे योगासन सिखाएं वह मेरे कैरियर के दौरान हमेशा मददगार रहा।"[13]

21 जून 2022 योग दिवस के अवसर पर महिला पहलवान बबीता फोगाट "योग संपूर्ण मानवता के लिए भारत संस्कृति का अनमोल उपहार है। इस योग दिवस पर नियमित योग करने का संकल्प लें"[14]

कई देशो ने योग को अपने खिलाड़ियों के लिए अनिवार्य कर दिया है। "फुटबालर रेयान गिग्स की मिसाल दी जाती है कि उन्होंने योग के माध्यम से खुद को युवा रखा है।"[15]

टेनिस खिलाडी एंटी मेरे ने बताया कि मेरी कामयाबी के पीछे योग का बहुत बड़ा योगदान है उन्होंने कहा की 40 डिग्री तापमान में योग अभ्यास करने से मैच में उन्हें बहुत लाभ मिला।"[16]

पंजाब और दिल्ली की टीमों के बीच आईपीएल टी-20 मैच से पहले दोनो टीमो के खिलाडियो को धर्मगुरु दलाईलामा ने शांति पाठ पढ़ाते हुए कहा "आप सब पेशेवर खिलाड़ी है खेल मैदान पर आपके मन मस्तिष्क में सैकड़ो विचार घूमते है ऐसे में मन एवं मस्तिष्क पर नियन्त्रण रखने का बौद्ध तकनीक में एक ही उपाय है वह है-योग"[17]

भारतीय हॉकी टीम के उपकप्तान हार्दिक सिंह कहते है- "योग हमारी टीम की दैनिक दिनचर्चा का हिस्सा है, योग के माध्यम से, तनाव कम करने दिमाग एवं शरीर को फिट रखने में मदद मिल रही है।"[18] क्रिकेट टीम इंडिया के सितारे विराट कोहली ने कहा"अपनी ट्रेनिंग में मैं कार्डियो और वेट ट्रेनिंग के साथ योग को भी शामिल करता हूं, मेरी फिटनेस का श्रेय योग को जाता है।"[19]

शिखर धवन ने कहा "योग के चलते ही वह 2013 में भारतीय टीम में वापसी कर पाए थे, मैं प्रतिदिन अपनी एकाग्रता को बढ़ाने के लिए एक से दो घंटे योग करता हूं।"[20]

इस प्रकार हम देखते हैं कि योग केवल आम मानव ही नहीं अपितु विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के लिए भी तनाव से बचने, प्रदर्शन को बढ़ाने, शारीरिक संतुलन बढ़ाने एवं स्वयं को शांत रखने का एक कारगर उपाय, पद्धति है।

खेलों में योग

खेलो में योग एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शारीरिक एवं मानसिक थकान आसनो एवं प्राणायाम के माध्यम से दूर की जाती है। योग एक मात्र ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शरीर में ऑक्सिजन की मात्रा निरंतर बनी रहती है प्रतियोगिता मे शारीरिक क्षमता में कमी थकान के कारण होती है। थकान से खिलाड़ी का कार्य निष्पादन कम हो जाता है। कार्य करने मे त्रुटियां होने लगती है, ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होती है। कार्य में मन नही लगता है। मासपेशियां खिच जाती है, तनाव, चिन्ता का माहौल व्याप्त हो जाता है । इन सब से मुक्ति का उपाय है योग। योग का अंग आसन शरीर में लचक पैदा करते है जिसका माध्यम खिंचाव है। "आज खेल-कूद में चोट को रोकने के लिए खिंचाव सबसे महत्वपूर्ण तरीका है।"[21]

हरबर्ट (1961) ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें बताया कि "आसन और योग के खिंचाव पूर्ण व्यायाम के द्वारा खेल चोटो को रोका जा सकता है।"[22] खिलाड़ी जब खेल प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हैं तो व्यवस्थित श्वसन क्रिया उसके प्रदर्शन पर प्रभाव डालती है लम्बी श्वास एवं स्वतन्त्र श्वास प्रक्रिया खेल प्रदर्शन तनाव को कम करने में सहायता करती है श्वास को लम्बा एवं गहरा करने का महत्त्वपूर्ण साधन योग प्राणायाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tattva-Sindhu तत्त्व सिन्धु
वर्ष 10, अंक 2 2023
ISSN: 2349-1426

खेलकूद के प्रशिक्षकों द्वारा खेलकूदों में होने वाली क्षति से बचने के लिए तथा खेलकूद के बेहतर निष्पादन एवं प्रदर्शन हेतु शरीर को गरमाने की क्रिया अनिवार्य रूप से करायी जाती है। अच्छी गरमाहट से निरन्तर अभ्यास से माँसपेशियाँ खिंचाव के अनुकूल (खेल की क्रिया के अनुकूल) हो जाती हैं तथा इसके क्षति की सम्भावना कम हो जाती है। आसनों के नियमित अभ्यास से इस प्रकार के अनुकूल खिंचाव में स्थिरता आती है।

योगाभ्यासों का खेल में बहुत महत्त्व है। खेलों एवं व्यायामों के कारक श्वास-प्रश्वास की अधिकता होने से शरीर के उन अंगों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जो हमारे जीवन के आधार हैं, यथा मेरूदण्ड, पेट के अवयव तथा फुफ्फुस आदि। परन्तु योगासनों के निरन्तर अभ्यास से ये सब सम्यक् प्रकार से ठीक रहते हैं; क्योंकि ये श्वास-प्रश्वास योग के केन्द्र माने गये हैं।

व्यायाम और खेलों के अभ्यास के कारण फेफड़े श्वास जल्दी-जल्दी लेते हैं, जिससे प्राणवायु अन्तिम स्थान तक नहीं पहुँच पाती, जिसके परिणाम स्वरूप शरीर में श्वाँस सम्बन्धी विकृतियाँ उत्पन्न होती है। यहाँ पर योग व आसनों की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। योग के द्वारा फेफड़ों को फैलने व सिकुड़ने का पर्याप्त अवसर मिलता है जिससे अधिक से अधिक शुद्ध वायु फेफड़ो में भर सके जिससे रक्त अधिक शुद्ध हो जाता है और खेलों व व्यायामों से उत्पन्न क्षति एवं रोगों को दूर होते है।

शिक्षण संस्थानों में योगासनों की महत्व पर प्रकाश डालते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा "बच्चों को खेलकूद में प्रोत्साहन दिया जाए मगर ऐसा भी कुछ प्रबंध कर लिया जाए कि प्रतिदिन सवेरे 10 मिनट 15 मिनट इसे आसन करा ले मैं समझता हूँ कि उससे उनका शरीर और स्वास्थ्य ठीक रहेगा और उनका मन भी काबू में आ जाएगा, और जो मन की चंचलता रहती है वे उसे बहुत कुछ वश में कर लेंगे। इसलिए विद्यालयों में जितने आयोजन होते हैं, उनमें आसन को भी सम्मिलित करने का प्रयत्न करें। अगर प्रोत्साहन की जरूरत हो तो प्रोत्साहन भी दें। जिस तरह अन्य विषयों के लिए इनाम बांटे जाते हैं और बच्चों को प्रोत्साहन दिया जाता है, उनमें अगर हम आसन को भी सम्मिलित करेंगे, तो इसका शरीर पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। यह ऐसी चीज है जो करने योग्य है, इसलिए मैंने देश के सामने रख दिया है। "[23]

मन और शरीर में गहरा संबंध है दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है इसलिए किसी भी दिशा में उत्तम कार्य करने हेतु दोनों का उत्तम स्वास्थ्य अत्यंत आवश्यक है इसलिए आज आवश्यकता है कि प्रत्येक खिलाड़ी प्रत्येक टीम योग को अपना कर आगे बढ़े।

निष्कर्ष

इस प्रकार का सकते हैं कि योग के अभ्यासो ने खेलकूद के क्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध की है, विभिन्न खेलों के खिलाड़ी अपनी खेलकूद की कुशलता प्राप्त करने या बनाये रखने के लिए प्रयोग में लाते हैं। क्रिकेट के खिलाड़ी बल्लेबाजी में एकाग्रता लाने हेतु शरीर लचीला बनाने हेतु श्वसन तन्त्र को सुदृढ़ कर स्टेमिना बनाने हेतु प्रयोग करते हैं। भारोत्तेलन के खिलाड़ी छाती चौड़ी करने के योगासन व श्वास रोकने की प्राणायाम विधियों का प्रयोग करते हैं। तैराकों के खिलाड़ी साँस रोकने की क्षमता बढ़ाने हेतु प्राणायाम व छाती चौड़ी करने वाले आसनों का अभ्यास करते हैं। इस तरह योगासन, प्राणायाम व ध्यान खेलकूद में कुशलता वृद्धि हेतु प्रयोग में लाये जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.सिंह, अजमेर(2021), शारीरिक शिक्षा तथा ओलंपिक अभियान, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पेज संख्या–49.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tattva-Sindhu तत्त्व सिन्धु
वर्ष 10, अंक 2 2023
ISSN: 2349-1426

2. गंगवार, बी आर(2000), शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद में परीक्षण, मापन एवं मूल्यांकन, केपी पब्लिशर्स,जालंधर, पेज संख्या–195.

3. यूनेस्को इंटरनेशनल चैप्टर का फिजिकल एजुकेशन एंड सपोर्ट आर्टिकल 1.

4. दिगंबर, स्वामी सतपाल जी (1987), योगासन एवं साध्य.

5. योग सूत्र 1/2

6. श्रीमद् भागवत गीता 2/50

7. महोपनिषद 5/42

8.Satish, M. (2012), Effect of yoga practices on by strength and flexibility among college basket ball players International Journal of Innovative Research and Development; Vol. 1. 114-120.

9. आचार्य, बालकृष्ण (2007) विज्ञान की कसौटी पर योग, पेज संख्या 148.

10.Shrish V. Topre, "Effect of some selected Asanas on Stride Length of Sprinters, "Unpublished Master's Disertation Submitted to Amaravati University, Amaravati, 1997, P.P 80-84.

11.Mookerjee S,, Chahal and Giri K.S. (1977), Impact of Yogic Exercises on the Indian | Hockey Team Winner of Third World Cup (1975), 11, Sports Medicine, 1, 7-9, P. 6.

12.Gharote, M.L. (1976). Physical fitness in relation to the practices of selected Yogic exercises, Yoga Mimamsa, 18: 59-72.

13. अमर उजाला (23 अगस्त 2014)मेरठ प्रकाशन, पेज संख्या 17.

14.https://m-hindi.webdunia.com/latest-cricket-news/internalional-yoga-day-forces-sportspersons-to-go-an-extra-mile-with-positions-122062100094_1.html?amp=1

15.,16. https://www.naidunia.com/sports/other-benifits-of-yoga-for-athletes-388224

17. https://www.amarujala.com/shimla/buddhist-leader-dalai-lama-said-yoga-can-keep-the-mind-and-brain-calm-by-the-players-2023-05-16

18.https://bharat.republicworld.com/india-news/general-news/indian-hockey-player-hardik-singh-said-yoga-helps-us-deal-with-stress-keeps-mind-and-body-fit

19.,20. https://www.jagran.com/cricket/headlines-international-yoga-day-sachin-tendulkar-virat-kohli-shikhar-dhawan-and-3-sportsperson-credits-their-fitness-to-yoga-19331478.html

21.Gharote, M.L. (1981). "Yoga for Sports", Patiala SNIPS Jr. Vol. IV, No. 4 October, Page 58.

22. Harbert, De. Vries (1961) Op.Cit.

23. कल्याण पत्रिका(1953)अंक 1, पृष्ठ 23–24.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय) हरिद्वार - २४९४०४ (भारत)

(नैक से "A" ग्रेड प्राप्त एवं यू०जी०सी० एक्ट 1956 के सेक्शन 3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar - 249 404 (India)

(NAAC "A" Grade Accredited Deemed to be University u/s 3 of UGC Act 1956)

Phone No. 7300761138, website: www.gkv.ac.in, e-mail: registrar@gkv.ac.in

पत्रांक Acad/Res/2020-21/1726

दिनांक 21/11/2020

अनुज कुमार
पुत्र श्री मांगे राम
ग्रा0 लुन्दी, पो0- उमाही कलां,
जिला- सहारनपुर, उ0प्र0- 247451

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के पत्र संख्या F.1-1/2002(PS) Exemp. दिनांक 15.06.2009 के अनुसार विभिन्न विषयों मे पीएच०डी० करने हेतु दिए गये दिशा-निर्देशों एवं विश्वविद्यालय के पीएच०डी० पाठ्यक्रम के नियमों/उपनियमो हेतु निर्धारित नियम/उपनियम के आलोक मे प्री पीएच०डी० पाठ्यक्रम कार्य (Pre Ph.D. Course Work) उत्तीर्ण करने के उपरान्त निर्धारित योग्यता के अन्तर्गत पीएच०डी० उपाधि हेतु आप द्वारा प्रस्तुत शोध रूपरेखा **दिनांक 08.08.2020** को सम्पन्न हुई शोध उपाधि समिति (RDC) की बैठक मे विचारार्थ प्रस्तुत की गई। तदनुसार शिक्षा पटल की स्वीकृति की प्रत्याशा में आपके द्वारा प्रस्तुत शोध विषय का शीर्षक **"सहारनपुर मण्डल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाईस्कूल के बच्चो की खेल उपलब्धियाँ एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन"** प्रस्तुत किया गया। विचार विमर्श के उपरान्त शोध विषय **"सहारनपुर मण्डल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाईस्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियाँ, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन"** संशोधन सहित स्वीकार किया गया।

आप उक्त संशोधन कर निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष से संस्तुत/अग्रसारित कराकर, संशोधित रूपरेखा की दो प्रतियां पत्र जारी होने की तिथि से 15 दिन के अन्दर कार्यालय मे प्रस्तुत कर दें। **आपका पंजीकरण संख्या 19073 है।**

शोध कार्य प्रगति के सम्बन्ध में आपको त्रैमासिक प्रगति विवरण एवं मासिक शुल्क निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष द्वारा संस्तुत/अग्रसारित कराकर कार्यालय मे नियमित रूप से प्रस्तुत करना होगा। उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय की शोध नियमावली के बिन्दु 6 (ii) के अनुसार लगातार दो शोध प्रगति विवरण तथा मासिक शुल्क जमा न होने पर शोधार्थी का पंजीकरण निरस्त किया जा सकता है। पंजीकरण निरस्तीकरण पर विचार हेतु शोधार्थी के लिखित प्रार्थना पत्र पर जो कि उसके शोध निर्देशक द्वारा संस्तुत एवं विभागाध्यक्ष द्वारा अग्रसारित हो, विभागीय शोध समिति (DRC) मे अंतिम निर्णय हेतु प्रस्तुत किया जायेगा। यह अवसर शोधार्थी को पीएच०डी० प्रोग्राम की पूर्ण अवधि के दौरान केवल एक बार ही दिया जायेगा।

पत्र जारी होने की तिथि से 15 दिन के अन्दर शोधार्थी अपनी उपस्थिति विभाग मे दर्ज कर अधोहस्ताक्षरी को सूचित करें।

कुलसचिव

प्रतिलिपि :
1. डा०/प्रो० आर० के० एस० डागर
   विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग
2. डा०/प्रो० आर० के० एस० डागर
   शोध निर्देशक, शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

कुलसचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड), भारत
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar (Uttarakhand), India

(NAAC Accredited 'A' Grade Deemed to be University u/s 3 of UGC Act 1956)

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

अंक विवरणिका एवं ग्रेड Statement of Marks and Grade

Pre-Ph.D. Course Work Examination - 2019

Subject: Physical Education

विद्यार्थी का नाम Student's Name	ANUJ KUMAR	Marksheet No.	S1855653
पिता का नाम Father's Name	MANGE RAM	Roll No.	19528003
माता का नाम Mother's Name	UPASNA	Enrolment No.	19073
परिसर / संकाय Campus / Faculty	FACULTY OF MEDICAL SCIENCE AND HEALTH	Exam Status	REGULAR

Paper Code	Subject/Paper	Course Type	Max. Marks	Marks Obtained ESE	CA	Total	Credit	Grade	Grade Point	Credit Point
PPE-C101	Research Methodology and Computer Application	DSC	100	51	28	79	6	O	6	36
PPE-C102	Teacher's Education in Physical Education	DSC	100	57	26	83	6	O	6	36

	First Semester	Second Semester	Third Semester	Fourth Semester	Fifth Semester	Sixth Semester	Seventh Semester	Eighth Semester	Final CGPA	Result
Credit	***	***	***	***	***	***	***	***	6.0	PASS
SGPA	***	***	***	***	***	***	***	***		
CGPA	***	***	***	***	***	***	***	***		

Note / For Instructions see overleaf

Date: 04-07-2020

Prepared by   Checked by   Controller of Examinations

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri